जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

# राष्ट्रदूत

चूरू

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 256906, 256907, फैक्सः- 01562-256908 वर्षः 14 संख्याः 101 प्रभात चूरू, सोमवार 8 अगस्त, 2022 पो. रजि. न. चूरू/084/2019-21 पृष्ठ 8 मूल्य 2.00 रु.

*महिला मुक्केबाज़ नीतू घंघस ने कॉमनवैल्थ गेम्स महिला 48 किग्रा मुकाबले में गोल्ड मैंडल हासिल किया। नीतू ने मुक्केबाजी प्रतियोगिता के फाइनल मैंच में मेज़बान इंगलैण्ड की मुक्केबाज़ डेमी जेड को जबरस्त तरीके से मात दी। दो बार की विश्व यूथ चैंपियन नीतू ने अपनी विपक्षी को 4-0 के एकतरफा फैसले से मात दी। नीतू ने जीत के बाद कहा, ''मैं स्वर्ण पदक जीतने के बाद बेहद खुश हूं। मैं यह पदक अपने देशवासियों के नाम करना चाहती हूं। मैं भारत सरकार, भारतीय खेल प्राधिकरण और भारतीय मुक्केबाज़ी महासंघ के समर्थन के लिये उनकी शुक्रगुज़ार हूं। मैं अपने कोचों, और अपने परिवार की भी शुक्रगुज़ार हूं क्योंकि मैं उनके समर्थन के बिना यह स्वर्ण नहीं जीत सकती थी।''*

# चीन ने ताइवान के ऊपर 100 से ज्यादा लड़ाकू विमान तैनात किए

## चीन की इन आक्रामक गतिविधियों से चीन, ताइवान युद्ध की आशंका और प्रबल हो गई है

- चीन ने अपने नई पीढ़ी के हवा में फ्यूल भरने वाले वाई.यू.-20 विमानों को भी तैनात कर दिया है।
- चीन की सरकारी मीडिया ने खुद चीन की इस मिलिटरी ड्रिल की वीडियो और तस्वीरें दुनियाभर में प्रसारित कर यह दिखाने का प्रयास किया है कि, चीन ताइवान के खिलाफ कुछ बड़ा करने के प्रयास में है।
- चीन के लड़ाकू विमान, नौसेना के जहाज इत्यादि, ताइवान से सिर्फ 20 किलोमीटर की दूरी पर तैनात हैं।

ताइपे/ नई दिल्ली, 7 अगस्त। अमेरिकी हाउस स्पीकर नैंसी पेलोसी की यात्रा के बाद चीन और ताइवान के बीच टेंशन बढ़ गई है। पेलोसी की यात्रा से तिलमिलाए चीन ताइवान के आसपास के इलाके में सैन्य अभ्यास तेज कर दिया है। ताइवान के आसपास उसने अपने 100 से अधिक युद्धक विमान तैनात कर दिए हैं। इसके साथ-साथ उसने अपने नई पीढ़ी के हवा में फ्यूल भरने वाले वाईयू-20 विमान को तैनात कर दिया है।

ताइवान के करीब ड्रैगन की गतिविधियां देखकर संयुक्त राज्य अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान ने चीन से अपने सैन्य अभ्यास को तुरंत बंद करने का आग्रह किया है। चीन की सरकारी मीडिया ग्लोबाल टाइम्स की ओर से ट्वीट किए गए वीडियो में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि कैसे चीनी सेना ताइवान के आसपास अपना पैर जमा रही है और सैन्य को अंजाम दे रही है।

ताइवान के साथ तनाव के बीच चीन की ओर से जारी किए गए वीडियो का मुख्य एजेंडा चीन की सैन्य ताकत को दिखाना है।

युद्धक विमानों से लेकर नई पीढ़ी के विमानों के शामिल किए जाने तक, संयुक्त नाकाबंदे अभ्यास ताइवान के लिए एक चेतावनी जैसा है। ताइवान पर बीजिंग पहले से ही अपना हक होने का दावा करते आ रहा है।

चीन का कहना है कि उसने ताइवान के आसपास के छह क्षेत्रों में युद्धक विमानों, नौसेना के जहाजों और मिसाइल हमलों से जुड़े अभ्यास शुरू कर दिए हैं।

वे द्वीप के तट से 20 किलोमीटर (12 मील) की दूरी पर स्थित हैं, जो संभावित रूप से ताइवान के जल क्षेत्र का उल्लंघन करते हैं।

चीन ने इस सप्ताह की शुरुआत में अमेरिकी प्रतिनिधि सभा की अध्यक्ष नैंसी पेलोसी की ताइवान यात्रा के बाद यह कहते हुए सैन्य अभ्यास शुरू किया था कि उनकी यात्रा ने एक चीन नीति का उल्लंघन किया है। ताइवान पर चीन अपना दावा जताता है और उसने धमकी दी है कि जरूरत पड़ने पर वह बलपूर्वक इस द्वीप को अपने कब्जे में ले लेगा।

# सबसे ज्यादा नियुक्तियां करने वाले देश के मुख्य न्यायाधीश हैं जस्टिस रमन्ना

## जस्टिस रमन्ना ने अपने कार्यकाल में 105 से ज्यादा जजों की नियुक्तियां की हैं, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है

- अपने करीब 15-16 महीने के कार्यकाल में उन्होंने विभिन्न हाईकोर्टों में जजों की रिक्तियां 411 से घटाकर 380 कर दी है।
- उनके मुख्य न्यायाधीश बनने से पहले विभिन्न हाईकोर्टों में जजों की 40 फीसदी सीटें खाली थीं।
- जस्टिस रमन्ना ने कॉलेजियम की आखिरी बैठक 25 जुलाई 2022 को आयोजित की थी। उसमें उन्होंने छह हाईकोर्ट के लिए जजों के 35 नामों की संस्तुति सरकार को भेजी।
- जस्टिस ललित 26 अगस्त को देश के अगले मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ लेंगे।

नई दिल्ली, 7 अगस्त। सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस एन.वी. रमना उच्च न्यायपालिका में जजों की सबसे ज्यादा नियुक्तियां करने वाले देश के मुख्य न्यायाधीश बन गए हैं। अपने एक वर्ष से थोड़ा ज्यादा के कार्यकाल में उन्होंने 100 से ज्यादा जजों की नियुक्तियां हाईकोर्ट में और पांच से ज्यादा नियुक्तियां सुप्रीम कोर्ट में की हैं। उच्च न्यायालयों में जजों की रिक्तियां 411 से घटकर 380 रह गई हैं।

दरअसल, सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस एनवी रमना ने अप्रैल 24, 2021 को तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश जस्टिस एसए बोबडे का स्थान लिया था, उस समय देश के 24 हाईकोर्टों में जजों की 40 फीसदी (411) से ज्यादा रिक्तियां थीं। पटना हाईकोर्ट समेत कुछ हाईकोर्ट आधे से भी कम क्षमता के साथ काम कर रहे थे। लेकिन जस्टिस रमना ने आते ही कोलेजियम (न्यायाधीशों के चयन के लिए पांच वरिष्ठतम जजों का मंडल) में सर्वसम्मति बनाने के प्रयास किए और जजों की सिफारिशें स्वीकार होने लगीं।

केंद्र सरकार ने उनकी लगभग सभी सिफारिशें मानी और नियुक्तियां कीं। आज यह स्थिति है कि हाईकोर्ट में अब रिक्तियों की संख्या घटकर 380 रह गई है। दिलचस्प बात यह है कि जस्टिस रमना के पूर्ववर्ती जस्टिस एसए बोबडे अपने एक साल के कार्यकाल के दौरान एक भी नियुक्ति नहीं कर पाए थे। हालांकि, उनका पूरा कार्यकाल करोना महामारी के दौरान का रहा, लेकिन नियुक्तियों का करोना से कोई संबंध नहीं था। कोलेजियम की सर्वसम्मति ही इसमें महत्वपूर्ण मुद्दा था। जस्टिस रमना 26 अगस्त 2022 को सेवानिवृत्त हो जाएंगे।

जस्टिस रमना ने कॉलेजियम की आखिरी बैठक 25 जुलाई 2022 को आयोजित की थी। उसमें उन्होंने छह हाईकोर्ट के लिए जजों के 35 नामों की संस्तुति सरकार को भेजी। इनमें से आठ नाम न्यायिक अधिकारियों के हैं। इसके बाद उन्होंने एक और बैठक की जो सुप्रीम कोर्ट में तीन जजों को लाने के लिए थी, लेकिन इसमें सर्वसम्मति नहीं बन पाई। इसके बाद उन्होंने एक और प्रयास 1 अगस्त को किया, लेकिन अन्य चार जज इसके लिए तैयार नहीं हुए।

इस बीच केंद्र सरकार ने उन्हें एक पत्र भेजा और अपने उत्तराधिकारी का नाम संस्तुति करने का आग्रह किया। जस्टिस रमना ने अगले दिन अपने उत्तराधिकारी के लिए जस्टिस यूयू ललित का नाम सरकार को भेज दिया। सरकार को नाम भेजते ही वह कोलेजियम की बैठक से दूर हो गए। जस्टिस ललित 26 अगस्त को देश के अगले मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ लेंगे।

## रास्ते से भटक गया इसरो का सैटलाइट

नई दिल्ली, 7 अगस्त। आजादी के अमृत महोत्सव के मौके पर एस.एस.एल.वी. द्वारा लॉन्च किए गए सैटलाइट से निराशा हाथ लगी है। इसरो ने रविवार को बताया कि स्मॉल सैटलाइट लॉन्च वीइकल एस.एस.एल.वी.-डी-1 अब इस्तेमाल लायक नहीं रह गया है क्योंकि इसे पृथ्वी की सर्कुलर ऑर्बिट की जगह एलिप्टिकल ऑर्बिट

- इसरो को आजादी की 75वीं वर्षगांठ के मौके पर एस.एस.एल.वी. द्वारा लॉन्च किए गए सैटलाइट से निराशा हाथ लगी है।

में स्थापित कर दिया गया। बताया गया कि सेंसर फेल्योर की वजह से इसने अपनी दिशा बदल दी और यह गलत कक्षा में स्थापित हो गया

इसरो ने कहा है कि, इस बार हुई चूक को अनैलाइज किया जाएगा। इसके बाद सुधार के साथ जल्द ही एस.एस.एल.वी.-डी2 लॉन्च किया जाएगा। संगठन की ओर से कहा गया, एस.एस.एल.वी.-डी-1 ने सैटलाइट को 356 किमी. एलिप्टिल ऑर्बिट में प्लेस कर दिया जबकि इसे 356 किमी सर्कुलर ऑर्बिट में स्थापित किया जाना था। अब सैटलाइट इस्तेमाल में नहीं आ

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# विपक्ष पर जमकर भड़कीं मारग्रेट अल्वा

## अल्वा ने कहा कि, विपक्षी दलों ने डायरैक्ट व इनडायरैक्ट तरीके से एन.डी.ए. को सपोर्ट किया है

नई दिल्ली, 7 अगस्त। उपराष्ट्रपति चुनाव में संयुक्त विपक्ष की उम्मीदवार मारगेट अल्वा शनिवार को हार के बाद अपने सहयोगियों पर भड़क उठीं। उन्होंने कहा कि कुछ विपक्षी दलों ने भी डायरेक्ट या इनडायरेक्ट तरीके से एन.डी.ए. उम्मीदवार का समर्थन किया है। गौरतलब है कि उपराष्ट्रपति चुनाव में मार्गरिट अल्वा को 200 से भी कम वोट मिले हैं। इससे पहले उन्होंने नवनिर्वाचित उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ को जीत की बधाई दी। उन्होंने कहा कि चुनाव संपन्न होने के बा उपराष्ट्रपति पद के लिए लड़ाई तो खत्म हो चुकी है। हालांकि संविधान की रक्षा, लोकतंत्र की मजबूती और संसद की गरिमा को स्थापित करने का संघर्ष जारी रहेगा।

अल्वा ने चुनाव हारने के बाद ट्विटर पर अपनी बातें लिखीं। उन्होंने विपक्षी दलों की एकता में कमी पर निराशा जाहिर की। उन्होंने लिखा कि यह चुनाव विपक्षी दलों के लिए एक शानदार अवसर की तरह था। उनके पास विपक्षी एकता की ताकत को जाहिर करने का पूरा मौका था। वह बीते हुए कल को पीछे छोड़कर एक-दूसरे के अंदर भरोसा पैदा कर सकते थे। लेकिन दुर्भाग्य से कुछ विपक्षी दलों ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भाजपा का साथ देने का फैसला किया। इसके चलते विपक्ष की एकता की गाड़ी पटरी से उतर गई। इसके साथ ही देश का उपराष्ट्रपति चुने जाने पर जगदीप धनखड़ को बधाई। साथ ही उन्होंने विपक्ष के सभी नेताओं और खुद को वोट देने वाले सभी सांसदों और चुनाव के दौरान अपने अभियान में साथ देने वाले वॉलंटियर्स का भी शुक्रिया अदा किया।

गौरतलब है कि कई विपक्षी दलों- जनता दल (यूनाइटेड), वाई.एस.आर. सी. पी., बी.एस.पी., ए.आई.ए. डी. एम. के. और शिवसेना ने धनखड़ का समर्थन किया था। वहीं ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस ने विपक्षी दलों पर उम्मीदवार चुनने से पहले सलाह न लेने का आरोप लगाते हुए इस चुनाव से दूर रहने का फैसला किया था। इसके बावजूद टी.एम.सी. के दो सांसद वोट डालने पहुंचे थे। इस बीच कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने अल्वा को संयुक्त विपक्ष की भावना को शानदार ढंग से प्रदर्शित करने के लिए उनका शुक्रिया अदा किया।

- अल्वा ने चुनाव हारने के बाद ट्विटर पर अपनी बातें लिखीं। उन्होंने लिखा कि, यह चुनाव विपक्षी दलों के लिए एक शानदार अवसर की तरह था। उनके पास विपक्षी एकता की ताकत को जाहिर करने का पूरा मौका था। वह बीते हुए कल को पीछे छोड़कर एक-दूसरे के अंदर भरोसा पैदा कर सकते थे।

## श्रीकांत त्यागी भाजपा का नेता है?

नई दिल्ली, 7 अगस्त। नॉएडा सैक्टर-93बी स्थित ग्रैंड ओमैक्स सोसाइटी में महिला से बदसलूकी कर चर्चा में आए नेता श्रीकांत त्यागी का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। पूर्व क्रिकेटर और तृणमूल कांग्रेस के नेता कीर्ति आजाद ने रविवार को राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा के साथ श्रीकांत त्यागी की फोटो शेयर कर भाजपा पर चुटकी ली है। इस तस्वीर में श्रीकांत त्यागी भाजपा अध्यक्ष नड्डा को एक गुलदस्ता भेंट करता दिख रहा है। हालांकि, लाइव हिन्दुस्तान इस तस्वीर की सत्यता की पुष्टि नहीं करता है।

इस फोटो की कैप्शन के तौर पर उन्होंने वायरल

- भाजपा महिला से बदसलूकी के आरोपी नॉएडा के नेता श्रीकांत त्यागी से पल्ला झाड़ने के लाख प्रयास कर रही है, लेकिन रोज़ उनके भाजपाई होने के नये-नये सबूत सामने आ रहे हैं।

हो रहे एक मीम की लाइन- देख रहे हो ना विनोद, श्रीकांत त्यागी का भाजपा से कोई लेना-देना नहीं है भी लिखी है। महिला के साथ बदसलूकी का वीडियो वायरल होने के बाद से श्रीकांत त्यागी फरार है। उसके खिलाफ एफ.आई.आर. भी दर्ज हो चुकी है और पुलिस की कई टीमें उसकी तलाश में जुटी हैं।

बता दें कि, कथित तौर पर खुद को भाजपा नेता बताने वाले श्रीकांत त्यागी का अपनी सोसाइटी में एक महिला से बदसलूकी करने का वीडियो वायरल होने

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# अयोध्या में जमीन घोटालेबाजों की लिस्ट में भाजपा विधायक व मेयर का नाम भी शामिल

## अयोध्या विकास प्राधिकरण ने अवैध रूप से जमीन खरीद-फरोख्त करने वाले 40 लोगों की लिस्ट जारी की

- इस लिस्ट में अयोध्या के महापौर ऋषिकेश उपाध्याय, भाजपा विधायक वेद प्रकाश गुप्ता और पूर्व क्षेत्रीय विधायक गोरखनाथ बाबा का नाम भी शामिल है।
- गौरतलब है कि, पिछले दिनों सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा था कि, ''भाजपा के पापी नेताओं कम से कम अयोध्या को तो छोड़ दो।''
- अखिलेश यादव ने कहा था कि, भाजपा के नेताओं ने जिम्मेदार विभागों से सांठगांठ कर अब तक 30 अवैध कॉलोनियां बसाकर सरकार को अरबों रुपये के राजस्व का चूना लगाया।

अयोध्या, 7 अगस्त। अयोध्या विकास प्राधिकरण ने अपने क्षेत्र में अवैध रूप से जमीन बेचने और उन पर निर्माण कराने वाले 40 लोगों की लिस्ट जारी की है। इनमें अयोध्या के महापौर ऋषिकेश उपाध्याय और भाजपा विधायक वेद प्रकाश गुप्ता भी शामिल हैं। प्राधिकरण के उपाध्यक्ष विशाल सिंह ने मीडिया को बताया कि प्राधिकरण की ओर से शनिवार रात प्राधिकरण क्षेत्र में अवैध रूप से जमीन की खरीद-फरोख्त और निर्माण कार्य कराने वाले 40 लोगों की एक लिस्ट जारी की गई। उन्होंने कहा कि इस लिस्ट में शामिल इन सभी लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

प्राधिकरण की ओर से जारी लिस्ट में बीजेपी विधायक वेद प्रकाश गुप्ता और अयोध्या के मेयर ऋषिकेश उपाध्याय के नाम भी शामिल हैं। गुप्ता और उपाध्याय ने इसके जवाब में आरोप लगाया कि यह एक साजिश है और उन्हें गलत तरीके से इस मामले में फंसाया गया है। लिस्ट में मिल्कीपुर क्षेत्र से पूर्व बीजेपी विधायक गोरखनाथ बाबा का नाम भी शामिल है। गौरतलब है कि इस साल के शुरू में हुए विधानसभा चुनाव से पहले अयोध्या में गलत तरीके से जमीन की खरीद-फरोख्त किए जाने का मामला गर्माया था। क्षेत्रीय सांसद लल्लू सिंह ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखकर इस मामले की विशेष अनुसंधान दल से जांच कराने की मांग की थी। अयोध्या में जमीन की अवैध खरीद-फरोख्त का जब मामला गर्माया था तब यूपी के मुख्य विपक्षी दल समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष और प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने एक ट्वीट कर इस मामले पर कहा था, ''हमने पहले भी कहा है, फिर दोहरा रहे हैं... भाजपा के भ्रष्टाचारी कम-से-कम अयोध्या को तो छोड़ दें।''

इससे पहले सपा ने अपने आधिकारिक हैंडल से किए गए ट्वीट में कहा था, ''अयोध्या में भाजपाइयों का पाप! भाजपा के महापौर, नगर विधायक और पूर्व विधायक भू-माफियाओं के साथ मिलकर बसा रहे अवैध कॉलोनियां। जिम्मेदार विभागों से सांठगांठ कर अब तक 30 अवैध कॉलोनियां बसाकर सरकार को अरबों रुपये के राजस्व का लगाया चूना। मामले की हो जांच। दोषियों के खिलाफ हो कार्रवाई।''

गौरतलब है कि, कुछ महीने पहले इस मामले को उठाने वाले आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता संजय सिंह ने भी अयोध्या विकास प्राधिकरण द्वारा लिस्ट जारी किए जाने पर प्रतिक्रिया देते हुए आरोप लगाया कि भाजपा के लोगों की आस्था भगवान श्रीराम में नहीं, बल्कि भ्रष्टाचार में है। सिंह ने एक बयान में कहा कि प्रभु राम के नाम पर जमीन के घोटाले का खुलासा सबसे पहले उन्होंने किया था और उस वक्त भी अयोध्या के मेयर ऋषिकेश उपाध्याय का नाम आया था। उन्होंने कहा कि आज जमीन का घोटाला करने वाले लोगों की जो लिस्ट जारी हुई है, उसमें अयोध्या के मेयर ऋषिकेश उपाध्याय, अयोध्या नगर के भाजपा विधायक वेद प्रकाश गुप्ता और पूर्व विधायक गोरखनाथ बाबा का भी नाम शामिल है।

## ज़वाहीरी का शव नहीं मिला

काबुल, 7 अगस्त (वार्ता)। तालिबान ने कहा है कि, उसे अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में अमेरिकी मिसाइल हमले के स्थल से अल-कायदा आतंकवादी समूह के नेता अयमान अल-जवाहिरी का शव नहीं मिला।

इससे पहले सप्ताह में, तालिबान ने कहा था कि, उसे अल-जवाहिरी के काबुल में आने और रहने के बारे में कोई जानकारी नहीं है। तालिबान के प्रवक्ता जबीहुल्ला मुजाहिद ने शनिवार को कहा, हमें उस जगह पर कोई शव नहीं मिला जहां अमेरिकी ड्रोन ने हमला किया था।

वॉल स्ट्रीट जर्नल ने पहले अमेरिकी प्रशासन के एक वरिष्ठ अधिकारी का हवाला देते हुए बताया कि

- तालिबान ने कहा है कि, उसे काबुल में अमेरिकी मिसाइल हमले के स्थल से अल-कायदा आतंकवादी समूह के नेता अयमान अल-ज़वाहीरी का शव नहीं मिला।

अल-जवाहिरी हाल के महीनों में सिराजुद्दीन हक्कानी के परिसर के पास मध्य काबुल में रह रहा था। सूत्रों के अनुसार अल-जवाहिरी 2021 के अंत में काबुल चला गया और हक्कानी के संरक्षण में था।

व्हाइट हाउस ने पुष्टि की कि अमेरिका ने 30 जुलाई को काबुल में एक आतंकवाद विरोधी अभियान चलाया, जिसके परिणामस्वरूप ओसामा बिन लादेन की मौत के बाद आतंकवादी समूह का नेतृत्व करने वाले अल-जवाहिरी को एक ड्रोन के जरिये दो हेलफायर मिसाइलों से उसे ढ़ेर कर दिया गया।

## विचार बिन्दु

**कोयल दिव्य आम रस पीकर भी अभिमान नहीं करती, लेकिन मेंढक कीचड़ का पानी पीकर भी टर्राने लगता है। –प्रसंग रत्नावली**

# समर्थ को दोष क्यों नहीं?

परीक्षाएं पहले भी होती थीं, अब भी होती हैं, आगे भी होती रहेंगी। अपने लगभग साढ़े तीन दशकों के सेवा काल में और उसके बाद भी मैंने न जाने कितनी भूमिकाओं में परीक्षाओं के संचालन में सहभागिता की है। हर परीक्षा उससे जुड़े व्यक्ति की भी परीक्षा होती है। अब संतोष होता है कि सब कुछ ठीक-ठाक रहा, कोई प्रवाद नहीं हुआ। लेकिन समय के बदलने के साथ-साथ परीक्षा करवाना जटिल से जटिलतर होता जा रहा है। अब तो समय ऐसा आ गया है कि शायद ही कोई परीक्षा हो जो बिना किसी विवाद के संपन्न हो सकी हो। ऐसे में हाल में राजस्थान में रीट जैसी बड़ी परीक्षा का निर्विघ्न संपन्न हो जाना बहुत राहत की बात है।

परीक्षा भले ही निर्विघ्न संपन्न हो गई। कम से कम मेरे मन में बहुत सारी बातें छोड़ गई है। आज एक बात की ही चर्चा करूंगा। जैसे-जैसे परीक्षा कार्य संपन्न करवाना कठिन होता जा रहा है, उसे आयोजित करवाने वालों को दिए जाने वाले निर्देश भी बढ़ते जा रहे हैं। कभी इण्टरनेट बंद किया जाता है (जो पहले कभी नहीं किया जाता था। पहले तो होता भी नहीं था), तो कभी परीक्षार्थियों के लिए क्या पहनें और क्या न पहने की विस्तृत दिशा-निर्देशिका ज़ारी की जाती है। प्रश्न पत्र लीक हो जाने की आशंकाओं को ध्यान में रखते हुए इस आशय के निर्देश भी ज़ारी किए जाते हैं कि एक निश्चित समय के बाद परीक्षार्थी को परीक्षा केंद्र में प्रवेश न दिया जाए। आज मैं ऐसे ही कुछ निर्देशों के बारे में चर्चा करना चाहता हूं। जिस दिन परीक्षा आयोजित होती है उस के अगले दिन के अखबार इस तरह की खबरों से भरे रहते हैं कि कोई परीक्षार्थी केवल पांच मिनिट देर से आया तो भी उसे परीक्षा केंद्र में नहीं घुसने दिया गया या किसी महिला परीक्षार्थी से उसका मंगलसूत्र तक उतरवा दिया गया। ऐसी ख़बरें हम हर परीक्षा के बाद पढ़ते हैं।

इस बार भी ये सब पढ़ने को मिलीं। ऐसी ख़बरों में सहानुभूति का एक अतिरिक्त तड़का भी मार दिया जाता है। मसलन यह कि दो दिन पहले ही मां बनी एक युवती को सिर्फ़ दस मिनिट देर से आने पर परीक्षा केंद्र में नहीं घुसने दिया गया। समझा जा सकता है कि मां बनने वाली बात उसके प्रति अतिरिक्त सहानुभूति पैदा करने के लिए लिखी गई है। उसके प्रति सहानुभूति और परीक्षा करवाने वालों की निर्ममता के प्रति नाराज़गी पैदा करने के लिए। माना जा सकता है कि अखबार का संवाददाता बेहद संवेदनशील है और उससे किसी का दुख देखा नहीं जाता है। लेकिन क्या बात केवल इतनी-सी है? क्या इस बात का कोई रिश्ता हमारे सोच की बनावट से भी जुड़ता है?

जैसा मैंने पहले कहा, आजकल परीक्षा आयोजित करना बहुत जटिल होता जा रहा है। परीक्षार्थी पहले से अधिक चालाक हो गया है, उसके साथ इस परीक्षा रूपी किले में सेंध लगाने के लिए अन्य अनेक ताकतें भी जुड़ गई हैं। इसलिए जो परीक्षा आयोजित करते-करवाते हैं उन्हें भी पहले से ज़्यादा सावधानी बरतनी पड़ती है। कुछ ख़ास तरह की वेशभूषा का आग्रह, समय की पाबंदी का कठोरता से निर्वाह ऐसी ही सावधानियां हैं। देखने की बात यह है कि इस तरह की सावधानियां और पाबंदियां जीवन के अन्य अनेक क्षेत्रों में भी बरती जाती हैं। क्या हम उनको लेकर भी ऐसी ही मानवीय करुणा से भरी ख़बरें लिखते और टिप्पणियां करते हैं? या कुछ के प्रति हम अधिक सहानुभूतिशील होते हैं और कुछ के प्रति हम ज़रूरत से ज़्यादा छिद्रान्वेषी हो जाते हैं? किनकी कड़ाई को हम सहज भाव से स्वीकार करते हैं और किनकी कड़ाई हमें दुखी करती है?

**एक मामूली आदमी, मसलन कबाड़ी का रद्दी अखबार तोलने में डण्डी मारना हमारे लिए चर्चा का विषय बन जाता है। आप किसी पांच सितारा होटल में जाकर बाहर बीस रुपये में मिलने वाली पानी की बोतल के दो सौ रुपये सहर्ष दे देंगे, लेकिन जब एक साइकिल रिक्शा वाला आपको एक से दूसरी जगह ले जाने के दस रुपये मांगेगा तो आपको लगेगा कि वह आपको लूट रहा है।**

जीवन के बहुत सारे क्षेत्र ऐसे हैं जहां कड़े फैसले होते हैं और तदनुरूप कार्यवाही भी की जाती है। पुलिस चोर को पकड़ती है, उसे दण्डित करती है। न्यायपालिका भी इसी तरह के काम करती है। कभी किसी को सपरिश्रम कारावास तो यदा-कदा किसी को मृत्यु दण्ड भी। इनके अलावा भी अनेक इलाके हैं जहां कठोर फैसले होते हैं। क्या तब भी हमारे पत्रकार मित्र इसी तरह कातर होते हैं? अगर पुलिस किसी को गिरफ्तार करती है तो कभी यह क्यों नहीं लिखा जाता कि इसने बस, एक छोटी-सी ग़लती ही तो की थी! और यही क्यों? अगर मैं जयपुर से सड़क मार्ग से दिल्ली जाते हुए ट्रैफिक जाम में फंस जाऊं और दिल्ली से मुझे विदेश ले जाने वाली फ्लाइट छूट जाए तो मुझे होने वाली असुविधा और आर्थिक क्षति पर एक बूंद भी आंसू क्यों नहीं टपकाया जाता? किसी एयरलाइंस पर उस समय कोई सवाल क्यों नहीं उठाया जाता जब वह एक निश्चित समय पर बोर्डिंग गेट बंद कर देती है? इन सबकी व्यवस्थाओं को हम बहुत सहज भाव से स्वीकार करते हैं, लेकिन जब शिक्षा की दुनिया में किसी व्यवस्था का पालन (वह भी मज़बूरी में) किया जाता है तो हमारी सहानुभूति के परनाले बहने लगते हैं!

मेरा ऐसा मानना है कि पूरे समाज के लिए शिक्षा और उससे जुड़े लोग सॉफ्ट टार्गेट हैं। जब भी किसी का जी चाहता है, इन्हें गरिया दिया जाता है। इसलिए कि ये ताकतवर नहीं हैं। बाबा तुलसीदास याद आते हैं: ***समरथ को नहिं दोष गुसाईं।*** पुलिस, न्यायपालिका, रेल, हवाई जहाज - ये सब समर्थ हैं। इसलिए हम इन पर कभी उंगली नहीं उठाएंगे। शिक्षक कमज़ोर है, उसे हर समय कटघरे में खड़ा करते रहेंगे।

यहां शिक्षक को अधिक व्यापक संदर्भ में लें - जो भी शिक्षा से जुड़ा काम कर रहा है, वह शिक्षक है।

परीक्षा से जुड़ा काम भी शिक्षा से जुड़ा काम है। वैसे, कमज़ोर और ताकतवर के बीच यह भेद यहीं नहीं, हमारे चारों तरफ नज़र आता है। आप चौराहे पर ट्रैफिक नियंत्रित करने वाले अल्प वेतन भोगी सिपाही के तथाकथित भ्रष्ट आचरण पर तो खूब टिप्पणी करेंगे लेकिन उसको ऐसा करने के लिए विवश करने वाली व्यवस्था पर चुप रहेंगे। तथाकथित का प्रयोग मैंने जान बूझकर और सोच समझकर किया है। इस बात पर ज़रूर विचार करें कि ज़्यादातर मामलों में वह आपसे पैसे नहीं मांगता है, आप खुद आगे बढ़कर उसे पैसे देते हैं। पांच सौ रुपये का चालान कटवाने की बजाय सौ रुपये उसके हाथ में देकर आप खुद ईमानदार बन जाते हैं और उसे चोर घोषित कर देते हैं। अपने चारों तरफ हमें भ्रष्टाचार नहीं दिखाई देता है। कभी हम इस बात पर ध्यान नहीं देते हैं कि लोग जो अनाप शनाप खर्चा कर रहे हैं वह आ कहां से रहा है। बीस तीस हज़ार की तनख़्वाह वाला बोलेरो में घूमता है लेकिन वह हमारी आंखों में नहीं खटकता है। ये सब हमारे लिए सदा सम्मानित बने रहते हैं। लेकिन एक मामूली आदमी, मसलन कबाड़ी का रद्दी अखबार तोलने में डण्डी मारना हमारे लिए चर्चा का विषय बन जाता है। आप किसी पांच सितारा होटल में जाकर बाहर बीस रुपये में मिलने वाली पानी की बोतल के दो सौ रुपये सहर्ष दे देंगे, लेकिन जब एक साइकिल रिक्शा वाला आपको एक से दूसरी जगह ले जाने के दस रुपये मांगेगा तो आपको लगेगा कि वह आपको लूट रहा है।

ऐसा नहीं है कि शिक्षा की दुनिया में सब साफ सुथरा है। बेशक वहां भी बहुत कुछ है जो धूसर है, और उस पर बात होनी भी चाहिए। लेकिन इस प्रसंग में तो यह भी देखा जाना चाहिए को जो कड़ाई बरती जा रही है वह समय की ज़रूरत है। एक प्रसंग का ज़िक्र करके इस बात को विराम दूंगा। स्वयं प्रकाश हिंदी के बड़े कथाकार हैं। कुछ समय पहले उनकी एक संस्मरणात्मक पुस्तक आई थी - ***धूप में नंगे पांव।*** इस पुस्तक में उन्होंने अपने जीवन से जुड़ा एक प्रसंग लिखा है। वे एम.ए. हिंदी की परीक्षा दे रहे थे। जहां वे रहते थे, परीक्षा केंद्र वहां से चालीस किलोमीटर दूर था। जिस दिन उनका आखिरी पेपर था, संयोग कुछ ऐसा बना कि वे ठीक समय पर परीक्षा केंद्र नहीं पहुंच सके। और वे सिर्फ़ पांच मिनिट लेट नहीं हुए थे। इस किताब के विवरण के अनुसार वे दो घण्टा देर से पहुंचे। (वैसे वे दो घण्टा नहीं कोई आधा घण्टा देर से पहुंचे थे। यह जानकारी इसलिए कि मैं खुद इस प्रसंग का एक किरदार था। किताब में ज़िक्र है। लेकिन कथाकार अतिशयोक्ति करने का हक़ रखता है!) और प्राचार्य ने उन्हें परीक्षा देने दी। (अगर आपके पास यह किताब हो तो देखें पृ 128-129)। लेकिन, जैसा मैंने कहा, वह समय अलग था। आज जैसा जटिल नहीं था। ऐसा नहीं है कि आज का पूरा शिक्षा तन्त्र अमानवीय हो गया है। मज़बूरी यह है कि आज अगर कोई परीक्षा कर्मचारी किसी को ज़रा भी छूट दे दे तो न जाने कितने प्रवाद उठ खड़े हों। और यह भी पता नहीं कि जिसे छूट दी जाए वह उसका सुपात्र है या कुपात्र! क्या पता कुछ देर से आने वाला बाहर से लीक हुए पर्चे के उत्तर लेकर भीतर आ रहा हो! क्या पता किसी महिला ने अपने किसी आभूषण में नकल करने की कोई डिवाइस छिपा रखी हो। क्या पता....क्या पता!

ऐसे में ज़िम्मेदार पत्रकारिता से, और समाज से भी, यह उम्मीद तो बनती ही है कि वह कमज़ोर के प्रति सहानुभूति रखते हुए उनके प्रति भी निर्मम न हो जो दिये हुए निर्देशों का पालन करके अपने कर्तव्य का समुचित निर्वहन कर रहे हैं।

**–अतिथि सम्पादक,**
**डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,**
**( शिक्षाविद् और साहित्यकार )**

# अदालतों में मुकदमों के अंबार को कम करने पर हो मंथन

लाख प्रयासों के बावजूद देश की अदालतों में मुकदमों का अंबार कम होने का नाम ही नहीं ले रहा है। एक मोटे अनुमान के अनुसार देश की अदालतों में सात करोड़ से अधिक मुकदमे लंबित हैं। इनमें से करीब 87 फीसदी मुकदमे देश की निचली अदालतों में लंबित हैं तो करीब 12 फीसदी मुकदमे राज्यों के उच्च न्यायालयों में लंबित चल रहे हैं। देश की सर्वोच्च अदालत में एक प्रतिशत मुकदमे लंबित हैं। पिछले दिनों जयपुर में आयोजित एक समारोह के दौरान न्यायालयीय प्रक्रिया और सर्वोच्च न्यायालय में पैरवी करने वाले वकीलों की फीस को लेकार अच्छी खासी चर्चा हुई जो मीडिया की सुर्खियां भी बनी। वहीं अगस्त में कार्य भार संभालने वाले नए मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति यूयू ललित द्वारा अदालत में सुबह साढ़े नौ बजे सुनवाई आरंभ करने की पहल पर भी वाद-विवाद का दौर जारी है। उधर सरकार ने मानसून सत्र में कुछ बदलावों के साथ मध्यस्थता विधेयक लाने का संकेत दिया है तो दूसरी ओर न्यायाधीशों की भर्ती में एकरुपता लाने के केन्द्र के प्रयास लगभग विफल हो गए हैं।

हांलाकि इसमें कोई दो राय नहीं कि न्यायालयों में मुकदमों का अंबार लगा हुआ है तो दूसरी और सभी पक्ष इसे लेकर चिंतित भी हैं। सवाल यह है कि मुकदमों के इस अंबार को कम करने के लिए कोई ऐसी रणनीति बनानी होगी जिससे अदालतों का भार भी कम हो न्यायिक प्रक्रिया लंबी भी ना चले, लोगों को समय पर न्याय भी मिले। पिछले पांच साल में ही देश में लंबित मुकदमों की संख्या चार करोड़ से बढ़कर आज सात करोड़ हो चुकी है। हांलाकि लोक अदालत के माध्यम से मुकदमों में कमी लाने की सार्थक पहल अवश्य की गई है पर लोक अदालतों में लाखों प्रकरणों के निबटने के बावजूद हालात में ज्यादा बदलाव नहीं आया है। दरअसल लाखों की संख्या में इस तरह के मुकदमे हैं जिन्हें निपटाने के लिए कोई सर्वमान्य समाधान खोजा जा सकता है। मुकदमों की प्रकृति के अनुसार उन्हें विभाजित किया जाए और फिर समयबद्ध कार्यक्रम बनाकर उन्हें निपटाने की कार्य योजना बने तो समाधान कुछ हद तक संभव है। कुछ इस तरह के मुकदमे हैं जिन्हें आसानी से निपटाने की कोई योजना बन जाए तो मुकदमों की संख्या में कमी हो सकती है। इनमें खासतौर से यातायात नियमों को तोड़ने वाले मुकदमों की ऑनलाइन निपटान की कोई व्यवस्था हो जाए तो अधिक कारगर हो सकती है। इसी तरह से चैक बाउंस होने के लाखों की संख्या में मुकदमे हैं जिन्हें एक या दो सुनवाई में ही निस्तारित किया जा सकता है। इसी तरह से मामूली कहासुनी के मुकदमे जिसमें शांति भंग के प्रकरण शामिल हैं उन्हें भी तारीख दर तारीख के स्थान पर एक ही तारीख में निपटा दिया जाए तो हल संभव है। इसी तरह से राजनीतिक प्रदर्शनों को लेकर दर्ज होने वाले

डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

**■ कुल लंबित सात करोड़ मुकदमों का करीब 87 फीसदी देश की निचली अदालतों में लंबित हैं**

मुकदमों के निस्तारण की भी कोई कार्ययोजना बन जाए तो उचित हो। इससे कम ग्रेविटी के मुकदमों का सहज निस्तारण संभव होगा तो न्यायालयों का समय भी बचेगा।

देश में सबसे ज्यादा मुकदमे रेवेन्यू से जुड़े हुए हैं। गांवों में जमीन के बंटवारे या सीमा निर्धारण को लेकर देश की निचली अदालतों में अंबार लगा हुआ है। इस तरह के मुकदमों के निपटारे में ग्राम पंचायत की कहीं कोई भूमिका तय हो तो शायद कोई स्थाई समाधान संभव हो सकता है। पंच परमेश्वर की अवधारणा कहीं इस तरह के मुकदमों के निपटारे में अधिक सहायक हो सकती है। स्थानीय स्तर पर समझाइस से इस तरह के मुकदमों पर शीघ्र निर्णय की एक संभावना बनती है। हो यह रहा है कि रेवेन्यू के मुकदमें अपील दर अपील पीढ़ी दर पीढ़ी चलते रहते हैं और मामूली सा सीमा विवाद लंबी कानूनी प्रक्रिया में उलझ कर रह जाता है। मीडिया ट्रॉयल पर भी अंकुश की आवश्यकता है क्योंकि इससे कुछ हद तक निर्णय प्रभावित होने की संभावना बनती है।

हांलाकि इसमें कोई दो राय नहीं कि हमारे देश की अदालतों में ब्रिटेन आदि की अदालतों से कई गुणा अधिक मुकदमों की सुनवाई एक दिन में होती है। केन्द्रीय कानून मंत्री किरेन रिजूजू की माने तो इंग्लैण्ड में एक न्यायाधीश एक दिन में तीन से चार मामलों में निर्णय देते हैं जबकि हमारे देश में प्रत्येक न्यायाधीश औसतन प्रतिदिन 40 से 50 मामलों में सुनवाई करते हैं। यह इस ओर भी इंगित करता है कि हमारे देश में न्यायाधीशों के पास कार्यभार अधिक है। अधिक काम करने के बावजूद मुकदमों की संख्या कम होने का नाम ही नहीं लेती। पिछले कुछ समय से जिस तरह से पीएलआई को लेकर माननीय न्यायमूर्तियों द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त की जा रही है और जुर्माना भी लगाया जा रहा है इसके भी सकारात्मक परिणाम प्राप्त होने लगे है। इसी तरह से कोर्ट में केस दायर होने पर गवाह या याचिकाकर्ता के होस्टाइल होने को भी जिस तरह से अदालतों द्वारा गंभीरता से लिया जाने लगा है उसके भी परिणाम आने वाले समय में और ज्यादा सकारात्मक होंगे। न्यायालयों की मध्यस्थता के लिए भेजे जाने वाले मामलों में वादी-प्रतिवादी द्वारा गंभीरता नहीं दिखाने से भी हालात अधिक सुधरे नहीं है। केन्द्र सरकार अब मध्यस्थता कानून में इसी मानसून सत्र में आवश्यक संसोधित प्रावधानों के साथ पारित कराने के लिए गंभीर लगती है। देखा जाए तो अदालतों की सामान्य प्रक्रिया पर लोगों का विश्वास है। चारों तरफ से निराश और हताश व्यक्ति न्याय के लिए न्याय का दरवाजा खटखटाता है। ऐसे में गैरसरकारी संगठनों की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि वे लोगों में अवेयरनेस लाएं और अदालत से बाहर निपटने वाले मामलों को बाहर ही निपटा लें। इसके लिए पूर्व न्यायाधीशों, पूर्व प्रशासनिक अधिकारियों, वरिष्ठ वकीलों व गैरसरकारी संगठनों या सामाजिक कार्यकर्ताओं की टीम बनाई जा सकती है जो इस तरह के मामलों को समझाइश से सुलझा सके। जिससे न्यायालयों का समय भी बचे और वादी प्रतिवादी का धन और समय बचने के साथ ही सौहार्द भी बना रह सके।

**– डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा,**
**( वरिष्ठ लेखक )**

# शहर से लेकर ग्रामीणांचल तक राखी की दुकानें सजी

पावटा कस्बे के बाजार में राखी खरीदती महिलाएं।

**पावटा,** (निसं)। रक्षाबंधन पर्व के लिए राखी की दुकानें सज गई हैं। त्योहार के लिए सजे बाजार में आई राखियां आकर्षण का केंद्र बनी हुई हैं।

रक्षाबंधन पर्व पर बाहर रहने वाले भाइयों को अभी से राखियां भेजना शुरू कर दिया है। राखी के पर्व के लिये कपडे, मिठाई और ड्राईफूड से लेकर गिफ्ट आइटम बेचने वालों की दुकानों पर भी

**■ राखी के दामों में करीब 10 से 15 फीसदी का इजाफा**

रौनक दिखाई दे रही है। उच्च वर्गीय लोगों के लिये बाजार में सोने और चांदी की सुदंर कलात्मक राखियां भी उपलब्ध हैं। पर्व को लेकर नगर से लेकर ग्रामीणांचल तक राखी की दुकानें सज गई हैं। राखी व्यवसायियों के अनुसार इस बार बाजार में चीन निर्मित लोराए, सोफिया और रिया के अलावा ओमश्री अशोक चक्र, सहेली, जलाशीष और संगम मार्का राखियों की खासी बिक्री हो रही है। दुकानों पर लोगों की भीड लगनी शुरू हो गई है। चाइनीज और मुंबई निर्मित स्टोन की राखियों का बाजार में दबदबा है।

# सोनिका ने कमाल की ड्रिब्लिंग कर दागा गोल

**सादुलपुर,** (निसं)। राष्ट्रमंडल खेलों में रविवार को भारतीय महिला हॉकी टीम ने बेहद रोमांचक मैच में गत चैंपियन न्यूजीलैंड को पेनल्टी शूटआउट में हराकर पहली बार इन खेलों में ब्रांज मैडल जीत लिया है। वहीं बेहद रोमांचक मैच के निर्धारित चार क्वार्टर पूर्ण होने तक दोनों टीमें एक-एक गोल की बराबरी पर थी। ऐसे में मैच का निर्णय पेनल्टी शूटआउट से होना था, जहाँ न्यूजीलैंड की टीम 1-० की बढ़त बना

**■ पेनल्टी शॉट में सोनिका ने न्यूजीलैंड की गोलकीपर को छकाया**

चुकी थी और भारतीय टीम अपना पहला अवसर गंवा चुकी थी। ऐसे में चूरू जिले के अंतिम छोर पर स्थित सादुलपुर विधानसभा क्षेत्र के गांव गालड की बिटिया सोनिका टांडी को पेनल्टी शॉट का अवसर मिला। जिसमें सोनिका ने कमाल की ड्रिब्लिंग करते हुए विपक्षी गोलकीपर को छकाते हुई गोल दागकर धमाल कर दिया। इसके बाद भारतीय गोलकीपर सविता ने अपने

चूरू जिले के गांव गालड की हॉकी खिलाडी सोनिका टांडी तिरंगे के साथ।

साहसिक प्रयासों से विपक्षी टीम को उभरने नहीं दिया। भारत ने पेनल्टी शूटआउट में मुकाबला 2-1 से जीतते हुई राष्ट्रमंडल खेलों में पहली बार महिला हॉकी में ब्रॉन्ज मैडल पर कब्जा कर लिया। मैच के अंतिम पडाव में सोनिका के गोल करते ही उसके पैतृक गांव गालड व आसपास के गाँवों में खुशी की लहर दौड गई। वहीं लोगों ने एक दूसरे को मिठाई खिलाकर जश्न मनाया। हॉकी प्रेमी वेदपाल धानोठी ने बताया कि सोनिका टांडी बेहद प्रतिभाशाली खिलाडी है, जोकि पूर्व में भारत को एशिया कप जीताकर चूरू जिले व राजस्थान प्रदेश का नाम रोशन कर चुकी हैं।

# पीबीएम के इमरजेंसी में डिहाइड्रेशन का इंजेक्शन तक नहीं

**बीकानेर,**(कासं)। पलाना के हड़मानाराम को उल्टी-दस्त की शिकायत के बाद उनके परिजन पीबीएम के मेडिसिन इमरजेंसी लेकर पहुंचे। डॉक्टर ने मरीज के शरीर में पानी की कमी होना बताकर पर्ची पर डेक्सट्रोज इंजेक्शन लिखा। जब मरीज का रिश्तेदार गणपतराम इंजेक्शन लेने हॉस्पिटल के दवा वितरण केंद्र (डीडीसी) पहुंचा तो फार्मासिस्ट ने पर्ची पर नॉट अवेलेबल (एनए) लिख दिया। गणपतराम उदाहरण मात्र है, जिसे इमरजेंसी इंजेक्शन के लिए दर-दर भटकना पड़ा। हॉस्पिटल में रोजाना आने वाले सैकड़ों मरीज गणपतराम की तरह आधी-अधूरी दवाइयां लेकर अपने घर या मरीज के पास पहुंच रहे हैं।

शहर की डिस्पेंसरियों के हाल इससे भी बदतर है। यहां जुकाम, दर्द निवारक, एंटीबायोटिक सरीखी जरूरी दवाइयां भी नहीं मिल रही। शुक्रवार को मुपत दवा योजना की पड़ताल की तो चौकाने वाली तस्वीर सामने आई। चिंता की बात यह है कि संभाग के सबसे बड़े पीबीएम हॉस्पिटल में एंटीबायोटिक, दर्द निवारक इंजेक्शन, टेबलेट यहां तक की ब्लड़ प्रेशर और शुगर की दवाइयां भी नहीं मिल रही हैं। जबकि डीडीसी पर दवाइयों की उपलब्धता के लिए प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्र से दवाइयों की खरीद के हेल्थ डिपार्टमेंट कई बार आदेश जारी कर चुका है। हैरानी की बात है कि पीबीएम हॉस्पिटल प्रशासन प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्र की दवाइयों के स्थान

**■ डिस्पेंसरियों में पर्ची पर एनए लिख रहे**

पर निजी फार्मा कंपनियों की दवाइयां लेने में दिलचस्पी दिखा रहा है।

राज्य सरकार की ओर से करीब 1700 तरह की निशुल्क दवाइयां उपलब्ध करवाई जाती है। हालांकि बीकानेर में 1000 दवाइयों की जरूरत ही आमतौर पर पड़ती है। लेकिन इन दवाइयों में से मरीजों को करीब 30 फीसदी दवाइयां मिल नहीं रही। ऐसे में उन्हें बाहर से महंगी दवाइयां खरीदनी पड़ रही हैं। पीबीएम हॉस्पिटल और शहर की डिस्पेंसरियों में एमोक्सीलिन 625 टेबलेट, सैफिक्स 200, सीपलोक्सिन 250/500,एंटीकोल्ड,मेटफोर्मिन,डिक्लोफेनाक, सीट्राजिन, एजेडआई-250, सीपीएम, पोविडोन, एंटी कोल्ड सीरप, मेरोपेनम इंजेक्शन, ऑफलोक्स आरिनडाजोल टेबलेट, लिनेजोलिड, लैबटेलोल इंजेक्शन, पोविडोन सरीखी जरूरी दवाइयां नहीं मिल रही हैं। मरीजों की यह परेशानी रात को और ज्यादा हो जाती है, जब बच्चा और जनाना हॉस्पिटल में महिलाओं को दवाइयों के लिए हॉस्पिटल परिसर से बाहर जाना पड़ता है। पीबीएम हॉस्पिटल में रोजाना करीब 5 हजार मरीजों का आना-जाना होता है। ऐसे में दवाइयां नहीं मिलने से मरीजों को होने वाली परेशानी को समझा जा सकता है। स संबंध में हॉस्पिटल के सुपरिटेंडेंट डॉ. प्रमोद कुमार सैनी ने कहा कि प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्र को दवाइयों के लिए पहले चरण में करीब 20 लाख रुपए का ऑर्डर दिया था, लेकिन उसके जयपुर स्थित अधिकृत विक्रेता ने दवाइयों की शॉर्टेज बता दी। समय-समय पर दवाइयों की लोकल खरीद की जाती है, ताकि मरीजों को डीडीसी के अलावा कहीं भटकना नहीं पड़े। जो दवाइयां डीडीसी पर नहीं मिल रही है, उनकी लिस्ट मंगवाकर जल्द ही उनकी लोकल या सरकारी केंद्रों से खरीद कर मरीजों को राहत पहुंचाई जाएगी। सरकार 15 लाख रुपए बिना स्वीकृति दवा खरीद के लिए उपलब्ध करवाती है, जिसकी बिल करने के साथ ही दोबारा राशि मिल जाती है।

## राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

**सोमवार 8 अगस्त, 2022**

सावन मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2079, ज्येष्ठा नक्षत्र दिन 2:37 तक, ऐन्द्रयन योग प्रात: 6:55 तक, वणिज करण दिन 10:26 तक, चन्द्रमा आज दिन 2:37 से धनु राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थिति:** सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मेष, बुध-सिंह, गुरू-मीन, शुक्र-कर्क, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

रवियोग दिन 2:37 तक है। कुमार योग दिन 2:37 से रात्रि 9:01 तक है। भद्रा दिन 10:26 से रात्रि 9:01 तक है। आज पवित्रा एकादशी, आज चतुर्थ सावन वन सोमवार व्रत वैधृति पूण्य है और कतल की रात (मु.) है।

**श्रेष्ठ चौघड़िया:** अमृत सूर्योदय से 7:37 तक, शुभ 9:15 से 10:54 तक, चर 2:11 से 3:49 तक, लाभ-अमृत 3:49 से सूर्यास्त तक।

**राहूकाल:** 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:58, सूर्यास्त 7:07

### मेष

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

### वृष

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा।

### मिथुन

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिनचर्या में सुधार होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

### कर्क

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

### सिंह

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

### कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

### तुला

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

### वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

### धनु

अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

### मकर

आर्थिक व्यावसायिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। दिन के मध्यान्ह अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

### कुंभ

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

### मीन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। शुभ-मांगलिक कार्यों भाग लेने का अवसर मिलेगा।

# स्वच्छ भारत अभियान की पोल खोल रहा आपणी योजना के मुख्य द्वार पर लगा गंदगी का ढेर

## गंदगी का यह आलम है कि यहां लगा लेटर बॉक्स भी गंदगी से घिर गया है

**चूरू,** (कासं)। चूरू आपणी योजना के कार्यालय में इन दिनों काफी अनियमितताएं देखने को मिल रही है। समय पर पेयजल सप्लाई करने में नाकाम आपणी योजना के अधिकारी अब खुद के कार्यालय में भी साफ-सफाई नहीं करवा पा रहे हैं।

यहां आपणी योजना के मुख्य द्वार के आगे गंदगी के ढेर लगे हुए हैं। यहां एक मिनट खड़ा रह पाना भी मुश्किल काम है। आपणी योजना के कार्यालय के आगे भारी मात्रा में गंदगी एकत्रित होने से आने-जाने वालों को बहुत दिक्कत होती है। हालांकि आपणी योजना के अधिकारियों व कर्मचारियों को यह गंदगी दिखाई ही नहीं दे रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के स्वच्छ भारत अभियान की यहां पोल खुलकर सामने आ गई है। यहां लगा लेटर बॉक्स भी गंदगी से घिर गया है। आपणी योजना के कार्यालय के मुख्य द्वार के आगे गंदगी कोई दिल्ली-जयपुर से तो आ नहीं रही है और ना ही सभापति व ना ही कलैक्टर यहां छाले भरकर गंदगी डालने आते हैं। यह गंदगी आसपास के लोग ही फैलाते है। मजे की बात है कि उन्हें कचरा डालने के लिए आपणी योजना का मुख्य द्वार ही मिलता है। आपणी योजना के अधिकारियों को नींद से जागकर साफ-सफाई करवानी चाहिए। साथ ही यहां गंदगी फैलाने वालों को पाबंद किया जावे, उसके बाद भी नहीं मानते हैं तो मुकदमा दर्ज करना चाहिए।

चूरू में आपणी योजना के कार्यालय के आगे भारी मात्रा में गंदगी एकत्रित होने से आने-जाने वालों को बहुत दिक्कत होती है।

- समय पर पेयजल सप्लाई करने में नाकाम आपणी योजना के अधिकारी अब खुद के कार्यालय में भी साफ-सफाई नहीं करवा पा रहे हैं
- गंदगी आसपास के लोग ही फैलाते हैं

## विधायक ने किया पशु आइसोलेशन वार्ड का निरीक्षण

**सुजानगढ़,** (निसं)। विधायक मनोज मेघवाल ने नाथो तालाब स्थित गोपाल गौशाला पंहूच कर आईसोलेशन वार्ड का निरीक्षण किया। विधायक मनोज मेघवाल ने बताया कि जिस प्रकार कोरोना में आईसोलेशन जरूरी है, उसी प्रकार इस बीमारी में भी संक्रमित पशु को आईसोलेशन में रखा जाना आवश्यक है, जिससे उसकी समय-समय पर चिकित्सकीय जांच एवं उचित उपचार हो सके। इस अवसर पर पशु चिकित्सक व नोडल अधिकारी डॉ. लालचंद शर्मा ने लंपी स्किन बीमारी एवं इससे प्रभावित पशुओं तथा उनके उपचार के बारे में विस्तार से जानकारी दी। डॉ. शर्मा ने बताया कि गौशाला में शुरू किए गए आईसोलेशन वार्ड में वर्तमान में सात गौवंश संक्रमित है, जिनका उपचार किया जा रहा है। डॉ. शर्मा ने बताया कि क्षेत्र के गांव बाडा व खण्डाप में उन्होने ग्रामीणों को प्रेरित कर आईसोलेशन वार्ड शुरू करवाएं है। जिनमें गांव में आवारा घूम रहे पशुओं का रखा जायेगा, जिससे अन्य पशुओं में संक्रमण फैलने पर रोकथाम लगेगी तथा संक्रमित पशु को समय पर उचित उपचार मिलने से वह शीघ्र ही स्वस्थ हो सकेगा।

## सार-समाचार

### सुशील कुमार सरावगी राजगढ़ आये

सुशील कुमार सरावगी

**सादुलपुर,** (निसं)। रविवार के डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी राष्ट्रीय विचार मंच भारत के क्रांतिकारी नेता राष्ट्रीय अध्यक्ष सुशील कुमार सरावगी जिंदल ने मातृछाया भवन में आयोजित एक कार्यक्रम में कहा कि भारत जल्द हिंदू राष्ट्र घोषित करने की दिशा में निर्णायक कदम पर है। सरावगी ने कहा कि कलयुग के अवतार नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में विश्व स्तर पर सनातन संस्कृति धर्म को स्थापित किया है। देश में हम आजादी का 75 वां महोत्सव मना रहे हैं। उन्होंने कहा कि 'हर घर तिरंगा' झंडा भारत में बडे उत्साह से मनाया जा रहा है। मगर इधर विपक्ष पार्टी एकजुट होकर इसका विरोध कर रही है जो कि न्यायोचित नहीं है। सरावगी अल्प समय के लिए राजगढ यात्रा पर आए थे।

### लाइब्रेरी कार्य का अनुमोदन किया

**सादुलपुर,** (निसं)। दलित वर्ग विकास संस्थान (छात्रावास) की बैठक रविवार को संस्थान के अध्यक्ष सत्यवीर सिंह बागोत की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। जिसमें विकास संस्थान लाईब्रेरी कार्य का अनुमोदन किया गया। छात्रावास में नवनिर्माण हेतु प्रस्ताव पारित किया गया। वहीं संरक्षक जयचन्द दायमा द्वारा आवासीय छात्रों को नैतिक दायित्व पर प्रकाश डाला। ओमप्रकाश मेहरा द्वारा विकास के पायदानों पर प्रकाश डाला। वहीं संस्थान अध्यक्ष सत्यवीर सिंह बागोत द्वारा छात्रावास में प्रतिभाशाली छात्रों को सम्मानित करने का प्रस्ताव रखा। वहीं सर्वसम्मति से नवनिर्माण हेतु 4 कमेटियों का गठन का प्रस्ताव लिया गया।

### छठा निःशुल्क हड्डी रोग शिविर आज

**सादुलपुर,** (निसं)। शहर के प्रतिष्ठित जैन अस्पताल में दिल्ली के प्रसिद्ध हड्डी एवं जोड रोग विशेषज्ञ के द्वारा 8 अगस्त असहाय एवं जरूरतमंद लोगों के लिए छठा निःशुल्क हड्डी रोग शिविर का आयोजन किया जाएगा। शिविर की सफलता को लेकर जैन हॉस्पिटल में बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें सभी कार्मिकों को अलग-अलग जिम्मेदारी सौंपी गई। अस्पताल के निदेशक डॉ. विनोद उर्मिल जैन के नेतृत्व में आयोजित बैठक में सोमवार को आयोजित शिविर को सफल बनाने में अधिक से अधिक लोगों को प्रेरित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई। शिविर में देहली के हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. योगेश जैन द्वारा सभी प्रकार के हड्डी संबंधित परामर्श असहाय एवं जरूरतमंद लोगों को निःशुल्क दिए जाएंगे। जैन अस्पताल के निदेशक डॉ. विनोद उर्मिल अग्रवाल के सुपुत्र डॉ. योगेश जैन दिल्ली एन.सी.आर. में जाने-माने हड्डी एवं जोड रोग विशेषज्ञ हैं तथा कस्बे में लोगों को हड्डी से संबंधित आवश्यकताओं को देखते हुए डॉ. योगेश जैन प्रत्येक माह जैन अस्पताल में अपनी सेवाएं देते हैं। इस बार ०8 अगस्त सोमवार को इस शिविर का आयोजन किया जाएगा। डॉ. जैन ने बताया कि इस दौरान नेविगेशन पद्धति से घुटने, कूल्हे, कंधों का ज्वाइंट रिप्लेसमेंट, दूरबीन द्वारा घुटने कंधे, कोहनी, कलाई की सर्जरी, घुटने व कंधों में इंजेक्शन द्वारा दर्द से राहत, खेलकूद की चोट का इलाज, गठिया बाव रिंगण बाव, डिस्क व रीढ की हड्डी की चोट आदि का इलाज किया जाएगा।

### दुष्कर्म का एक आरोपी रिमांड पर

**सुजानगढ़,** (निसं)। नाबालिग का अपहरण कर उसके साथ दुष्कर्म के आरोप में गिरफ्तार तीनों आरोपियों को न्यायालय में पेश किया गया। सीआई जगदीशसिंह ने बताया कि नाबालिग का अपहरण का दुष्कर्म करने के आरोप में दर्ज मामले में आरोपी क्रिश पुत्र राजेश प्रजापत, विकास पुत्र राजेश प्रजापत निवासी गण वार्ड नं. 39, सुजानगढ तथा चाडवास निवासी विष्णु पुत्र भैराराम प्रजापत को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया। जहां आरोपी विकास व विष्णु को न्यायिक अभिरक्षा में भेजे जाने के आदेश दिए गए तथा क्रिश प्रजापत को चार दिन के पुलिस रिमांड पर सौंपे जाने के आदेश दिए गए हैं।

### लंपी बीमारी के लिए दिए पांच लाख

**सुजानगढ़,** (निसं)। लंपी स्किन बीमारी से संक्रमित पशुओं का प्रभावी उपचार कर उन्हे बचाने के लिए विधायक मनोज मेघवाल ने विधायक कोटे से पांच लाख रूपये स्वीकृत किए हैं। विधायक ने बताया कि स्वीकृत राशि से लंपी स्किन बीमारी से प्रभावित पशुओं के उपचार के लिए दवाईयां, टीकाकरण, रोग की रोकथाम, जागरूकता के लिए प्रचार-प्रसार करने, बीमार पशुओं की चिकित्सा हेतू परिवहन सुविधा, संक्रमण नियंत्रण, मृत पशुओं के परिवहन एवं अन्य चिकित्सकीय आवश्यकताओं की पूर्ति की जायेगी। विधायक ने बताया कि आवश्कता होने पर उनके द्वारा और रूपये भी दिए जायेंगे।

### चेम्बर के कार्य का निरीक्षण किया

**चूरू,** (कासं)। शहर वासियों की समस्याओं के निजात दिलाने के लिए रविवार को कांग्रेस नेता नारायण बालान ने सुभाष चौक पर चल रहे चेम्बर के कार्य का निरीक्षण किया। कांग्रेस नेता नारायण बालान ने बताया कि नाले की सफाई करके चेम्बर को नये सिरे से बनाया जा रहा है तथा नाले का भी जिणोदार किया जा रहा है। इससे मुख्य बाजार व जौहरी सागर के बीच जल भराव से शहरवासियों को निजात मिलेगी। इस मौके पर पार्षद अनिस आदि भी मौजूद थे। सभापति पायल सैनी ने बताया कि शहर की समस्या के समाधान को लेकर परिषद प्रशासन द्वारा योजना तैयार कर युद्ध स्तर पर कार्य शुरू कर राहत दिलाई जाएगी। सभापति ने सभी कार्मिकों को इसके लिए निर्देशित किया है।

### गायत्री महायज्ञ पूर्व तैयारी बैठक

**चूरू,** (कासं)। स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ चूरू में 6 से 9 अक्टूबर 2022 को आयोजित होने वाले 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ संबंधी पूर्व तैयारी बैठक का आयोजन किया गया। चूरू जिले के सभी वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं तहसील संयोजकों की बैठक हुई। आज की बैठक की अध्यक्षता ओम प्रकाश पारीक जिला संयोजक ने की। राम सिंह राठौड़ वरिष्ठ प्रतिनिधि शांतिकुंज हरिद्वार, गोपाल स्वामी प्रदेश संगठन प्रभारी, बालदान चारण उप जॉन संयोजक के सानिध्य में यह बैठक आयोजित की गई। आज बैठक में उम्मेद सिंह राठौड़, पृथ्वी राज सैनी, महेन्द्र कुमार, लक्ष्मण नैतिक, तेज पाल सिंह, सत्य नारायण कानोडिया, छोटूराम, नरेश कुमार, सीताराम, आनन्द सिंह, जितेन्द्रसिंह, भीम सिंह, धनपत जांगिड़, बनवारी जांगिड़, मदन सिंह, भरत सिंह, बाबूलाल, बने सिंह, हरदयाल, ओम प्रकाश इन्दौरिया आदि उपस्थित थे।

## कर्मियों को हटाने की धमकी का आरोप

मांगों को लेकर एवं पोषण ट्रेकर पर एन्ड्रॉयड मोबाइल फोन स कार्य करने एवं कर्मियों को हटाने की धमकी के आरोप में विरोध-प्रदर्शन करती आंगनबाड़ी कार्यकर्तागण।

**सादुलपुर,** (निसं)। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा आंगनबाडी कार्यकर्ताओं से पोषण ट्रेकर पर एन्ड्रॉयड मोबाईल फोन से कार्य करने के लिए बाध्य करने एवं कर्मियों को हटाने की धमकी के आरोप में कार्यकर्ता की बैठक हुई। साथ ही आयोजित बैठक में चार सुत्री माँग पत्र भी सौंपा गया।

जिलामंत्री सविता धोलिया ने बताया कि विभाग के उपनिदेशक चूरू द्वारा आंगनबाडी कार्यकर्ताओं से पोषण ट्रेकर का कार्य एन्ड्रॉयड मोबाईल फोन पर करने के लिए बाध्य किया जा रहा है। जबकि कार्यकर्ताओ के पास एन्ड्रॉयड मोबाईल फोन नहीं हैं तथा कर्मियो को हटाने की धमकी दी जा रही है तथा स्वयं को मोबाईल पर काम करने के लिए सभी कर्मियों को लिखित आदेश दिया जावे और महिला पर्यवेक्षक को दिया गया नोटिस वापिस लिया जान की माँग की है। वहीं माँग पत्र में आंगनबाडी कार्यकर्ताओं को पोषण ट्रेकर पर कार्य करने के लिए सामग्री व मजदूरी उपलब्ध करवाई जाने, फरवरी से जुलाई 2022 तक का दिया गया आधा अधुरा मानदेय एक मुश्त दिया जाने, अप्रेल 2022 को सर्वोच्य न्यायालय के आदेशानुसार सभी कर्मियों को सरकारी कर्मचारी का दर्जा देकर ग्रेज्येटी पैंशन दी जाने व राज्य सरकार द्वारा पुरे राजस्थान में प्रतिकर्मि को 800 ड्रेस दिया गया है, जबकि राजगढ चूरू कर्मियों को नही दिया गया है वह तुरन्त देने की माँग की है। बैठक में जिलामंत्री सविता धोलिया, प्रेमलता आदि सहित अन्य कार्यकर्तागण उपस्थित रही।

## विधायक ने गैनाणी का जायजा लिया

**सुजानगढ़,** (निसं)। शहर में व्याप्त बरसाती पानी निकासी की समस्या को लेकर विधायक मनोज मेघवाल ने गैनाणी पंहूच कर वस्तुस्थिति का जायजा लिया तथा नगरपरिषद अधिकारियों को समस्या के शीघ्र एवं प्रभावी समाधान के निर्देश दिए।

सभापति प्रतिनिधि मो. इदरीश गौरी ने समस्या समाधान के लिए नगरपरिषद द्वारा किए जा रहे प्रयासों के बारे में जानकारी दी। आयुक्त कमलेश कुमार मीणा ने बताया कि करीब 45 साल पुरानी पाईप लाईन में लीकेज है तथा पाईप लाईन के ऊपर मकान बन गए है, जिससे समस्या बडी हो गई है। जिसके समाधान के लिए आपदा कोष से करीब 75 लाख रूपये की लागत से नई पाइप लाईन बिछाने का कार्य किया जायेगा तथा पुरानी लाईन पर जहां मकान नहीं है, उन स्थानों पर नगरपरिषद की टीमों द्वारा लीकेज निकाले जा रहे हैं। इस दौरान उप सभापति अमित मारोठिया, पार्षद प्रतिनिधि पन्नालाल सोनी, राजकुमार गोदारा, मनोनीत पार्षद प्रदेश सियोता, सहायक अभियन्ता दलीपसिंह, सफाई निरीक्षक मुन्नालाल मीणा आदि उपस्थित थे।

## यात्रा को लेकर सादुलपुर पहुंची सर्वे टीम का स्वागत

सर्वे टीम के भव्य स्वागत करते नामदेव समाज के गणमान्यजन।

**सादुलपुर,** (निसं)। महाराष्ट्र से शुरू होने वाली यात्रा को लेकर सर्वे टीम के सादुलपुर पहुँचने पर स्थानीय नागरिकों ने टीम के सभी सदस्यों का स्वागत किया।

महाराष्ट्र राज्य पालकी सोहला पत्रकार मंच, नामदेव परिषद के सहयोग से भागतव धर्म के प्रचारक संत शिरोमणी नामदेव महाराज की जयंति व केवलम साम्राज्य चक्रवृती संत ज्ञानेश्वर महाराज के जीवन समारोह के अवसर पर आगामी 4 नवम्बर से 24 नवम्बर के बीच जी क्षेत्र पंढरपुर महाराष्ट्र से क्षेत्र धुमान (पँजाब) 21 दिवसीय साईकिल रैली परिक्रमा निकाली जायेगी। जिसको लेकर रविवार को यात्रा सर्वे टीम सादुलपुर (राजगढ) पहुँची, जहाँ सादुलपुर नामदेव दर्जी समाज द्वारा सर्वे टीम का माला पहनाकर अभिनंदन किया गया। यात्रा अध्यक्ष सूर्यकान्त भिसे ने बताया कि साईकिल 21 नवम्बर को सादुलपुर पहुँचेगी। इस मौके पर चौथमल, जगदीश, विनोद, सुरेन्द्र नामदेव, दिनेश, मांगेलाल, गिरीराज, हरपाल, मनीराम व पारितोष सागू आदि उपस्थित रहे।

## लम्पी स्किन डिजीज जागरूकता कार्यशाला का आयोजन

**पाटन,** (निसं)। ब्लॉक पाटन के प्रथम श्रेणी पशु चिकित्सालय डाबला में लम्पी स्किन डिजीज के प्रति जागरूक करने के उदेश्य से एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें ठाम पंचायत डाबला, बिहार, जीलो, श्यामपुरा, बिहारीपुर व स्यालोदड़ा के संस्था प्रभारी, गौशाला संचालक, प्रगतिशील पशुपालक, सरपंच व अन्य जन प्रतिनिधिगणो ने भाग लिया।

कार्यशाला में नोडल अधिकारी डॉ. रणजीत मेहरानिया, वरिष्ठ पशुचिकित्सा अधिकारी डॉ रामावतार बायला व पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. योगेश आर्य ने लम्पी डिजीज के लक्षण, उपचार व रोकथाम के बारे में विस्तार से जानकारी दी तथा केंद्र व राज्य सरकार तथा पशुपालन व गोपालन विभाग द्वारा जारी आवश्यक दिशा निर्देशों की पालना हेतु अपील की। नोडल अधिकारी डॉ मेहरानिया ने गौशाला में साफ सफाई एवं कीटनाशक के छिडकाव तथा संक्रमित गोवंश के आइसोलेशन पर विशेष जोर दिया, साथ ही आवारा संक्रमित गोवंश के आइसोलेशन हेतु स्यालोदडा स्कुल के खेल ठाउंड का चयन कर उपचार हेतु विभागीय टीम को जिम्मेदारी प्रदान की ताकि जल्द से जल्द इस संक्रामक बीमारी पर नियंत्रण कर गोवंश को बचाया जा सके।

इस दौरान सरपंच सागरमल यादव डाबला, कृष्ण कुमार गुर्जर श्यामपुरा, अनिल कुमार स्यालोदडा, सत्यवीर यादव बिहार, शक्ति सिंह बिहारीपुर, पंस सदस्य नरेश कुमार, गौशाला संचालक कमल कुमार एवं पशुधन सहायक राजेंद्र प्रसाद यादव, रेखा खटीक, विरेन्द्र पुनिया, सुनील कुमार सैनी, नरेश कुमार योगी, अभिषेक कौशिक तथा प्रगतिशील पशुपालक नरेश सोनी सहित कई जागरूक सदस्य उपस्थित रहे।

पाटन ब्लॉक के ग्राम स्यालोदड़ा में 20 व रतन नगर में 10 गोवंश संक्रमित हुए है तथा 3 गोवंश की मौत की पुष्टि इस बीमारी से अब तक हुई है। पशुपालन विभाग की टीम बीमारी के सर्वे, उपचार व रोकथाम कार्य को गंभीरता से कर रहे है।

## भाजपा ने पूर्व पार्षद सैनी को श्रद्धांजलि दी

**रतनगढ़,** (निसं)। भाजपा नगर मंडल कार्यकर्ताओं द्वारा पुर्व पार्षद केशरदेव सैनी के देवलोक गमन पर रविवार को चुरू रोड स्थित पिंजरापोल गौशाला में भावपूर्ण श्रद्धांजलि सभा का आयोजन रखा। भाजपा के कार्यकर्ताओं व उनके परिवार जनों ने पुर्व पार्षद सैनी के चित्रपट पर धूप अगरबत्ती कर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए श्रद्धा-सुमन अर्पित किये। इस अवसर पर भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष अरविन्द इंदोरिया ने पुर्व पार्षद सैनी के निधन को अपूरणीय क्षित बताते हुए कहा कि उनका जीवन सरलता की प्रतिमूर्ति था। पार्षद रामकिशन माटोलिया ने अपने संबोधन में कहा कि पुर्व पार्षद सैनी एक कुशल अर्जीनेस होने के साथ बहुत ही मृदुभाषी, मिलनसार, व्यवहार कुशल व्यक्तित्व के धनी थे, उन्हें याद करते हुए उनकी प्रेरणाओं को हम सभी अपने जीवन में धारण करेंगे। श्रद्धांजलि सभा में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला व भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सतीश पुनिया द्वारा परिजनों के प्रति अपनी सम्वेदना प्रकट करते हुए शोक संदेश भेजा गया।

## हाथकरघा बुनकरों से निर्मित उत्पाद उपयोग में लेने की अपील

चूरू रीको ऑफिस के पास खादी भंडार में विश्व हथकरघा दिवस पर तिरंगा वितरित किया गया।

**चूरू,** (कासं)। आठवां राष्ट्रीय हाथकरघा दिवस रविवार को जिला मुख्यालय स्थित खादी ग्रामोद्योग विकास समिति औद्योगिक क्षेत्र में आयोजित किया गया।

इस दौरान उद्योग महाप्रबंधक नानु राम गहनोलिया ने अतिथियों का स्वागत करते हुए हाथकरघा दिवस की महत्ता के बारे में बताया और आमजन से हाथकरघा बुनकरों द्वारा निर्मित उत्पादों को अधिक से अधिक उपयोग में लेने हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम के दौरान रीको के अतिरिक्त रीजनल मैनेजर कृष्ण कुमार ने हाथकरघा उत्पादों को हमारी संस्कृति की पहचान बताते हुए अधिक से अधिक उपयोग में लेने हेतु प्रेरित किया। औद्योगिक संघ के अजीत अग्रवाल ने हाथकरघा उत्पादों के उपयोग से ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को रोजगार उपलब्ध होने के बारे में बताया। कार्यक्रम के दौरान जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र के आदूसिंह गुर्जर व औद्योगिक संघ के राजकुमार, धर्मवीर गुर्जर, हंसराज पौख, गिरधारीलाल, ओम प्रकाश व खादी ग्रामोद्योग विकास समिति की सुमन, पूनम, संतोष, किरण आदि बुनकरों सहित कई लोग उपस्थित रहे।

## समस्याओं का समाधान नहीं होने पर 15 अगस्त के बाद आरएलपी महापड़ाव डालेगी

**सुजानगढ़,** (निसं)। राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी ने प्रेस वार्ता कर शहर की विभिन्न जन समस्याओं को लेकर नगरपरिषद प्रशासन को घेरा है। प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य बनवारी गुरू ने कहा कि पार्टी द्वारा 20 दिन पहले सभापति व एडीएम को जनसमस्याओं के समाधान की मांग को लेकर ज्ञापन दिया गया था। लेकिन 20 दिन बीत जाने के बाद भी समाधान तो दूर उनके द्वारा इस सम्बंध में किसी प्रकार की कोई कार्यवाही ही नहीं की गई।

गुरू ने कहा कि आवारा जानवरों से शहरवासी परेशान है, सांडों के हमले से 3-4 लोगों की मौत हो चूकी है। आरएलपी नेता ने बिजली विभाग के अधिकारियों से किसानों की वीसीआर नहीं भरने की अपील करते हुए किसानों को पर्याप्त बिजली देने एवं आराम के समय कटौती नहीं करने की मांग की है। बनवारी ने शहर में कानून व्यवस्था पर बोलते हुए कहा कि विगत वर्षों में हुई चोरियों का खुलासा करने में पुलिस नाकाम रही है तथा अस्पताल में माफिया पनप रहे हैं, लपकों का बोलबाला है। आरएलपी नेता ने कहा कि समस्याओं का समाधान नहीं होने पर 15 अगस्त के बाद महापड़ाव डाला जायेगा, जिसमें प्रदेश के बडे नेता भी शामिल होंगे। आरएलपी नेता रतनलाल नायक ने कहा कि बरसात आने के बाद नगरपरिषद प्रशासन जाग रहा है, प्रशासन की लेट लतीफी का परिणाम शहर की जनता जगह-जगह जलभराव की समस्या के रूप में भुगत रही है।

विद्यालयों में शिक्षा की स्थिति दयनीय है, विद्यालयों में अध्यापक नहीं तथा कक्षा एक से आठ तक के बच्चों को अक्षर ज्ञान तक नहीं हैं। तहसील अध्यक्ष रामनिवास तेतरवाल ने गायों में फैल रही लंपी स्किन बिमारी, किसानों को मुआवजा, जलभराव, कन्या महाविद्यालय, ओवरब्रिज, लपका गिरोह सहित अनेक मुद्दों पर अपनी बात रखी। विधानसभा उपचुनाव प्रत्याशी सीताराम नायक ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस दौरान पूर्णसिंह बीदावत गनोडा ने आरएलपी की सदस्यता ग्रहण की। इस अवसर पर महिला मोर्चा प्रदेश मंत्री विद्या चौधरी, रामदेव मेघवाल, हनुमान ढाका, खींवाराम नायक, मनोहरलाल नायक उपस्थित थे।

सुजानगढ़ शहर की विभिन्न जनसमस्याओं के लेकरआरएलपी नेताओं ने प्रेस वार्ता की।

- जन समस्याओं को लेकर नगरपरिषद प्रशासन को घेरा

## विद्यार्थियों का सम्मान समारोह

**रतनगढ़,** (निसं)। सरस्वती बाल निकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय मे रविवार को प्रतिभावान विद्यार्थियों का सम्मान समारोह व खेल प्रतियोगिता पालिका अध्यक्ष सीताराम भोभरिया की अध्यक्षता एवं विधायक मनोज मेघवाल के मुख्य आतिथ्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ठ अतिथि पालिका उपाध्यक्ष मेराज उल हसन छीपा, नगर काठोस अध्यक्ष जेठाराम यादव, आरपी गुलाबंचद मेघवाल, समाजसेवी गिरधारी लाल मेहला व पुटियाराजा थे। इस अवसर पर विधायक मनोज मेघवाल ने खेलकुद प्रतियोगिता का विधिवत फिता काटकर उद्घाटन किया तथा विद्यालय की कक्षा 12 कला वर्ग मे तहसील क्षेत्र टॉपर 96.6 प्रतिशत प्राप्त करने वाली छात्रा निलम प्रजापत को विद्यालय की ओर से पाँच हजार रूपये का चैक व मौमेटों देकर सम्मान किया। इस अवसर पर विधायक मेघवाल ने कहा कि खिलाड़ी खेल को खेल की भावना से खेले। पढाई के साथ साथ सर्वांगिण विकास के लिये खेलो के आयोजन की गतिविधियाँ भी जारी रहनी चाहिये। जिससे बच्चों मे खेलो के प्रति रूझान बढेगा।

## विधायक सुरेश मोदी का अभिनंदन

**पाटन,** (निसं)। नीमकाथाना विधायक सुरेश मोदी के अथक प्रयासों से क्षेत्र में पेयजल की समस्या से निजात दिलाने हेतु कुम्भाराम लिफ्ट परियोजना के द्वितीय फेज कार्य योजना को लेकर 8798.42 करोड़ रूपये की अभूतपूर्व और नीमकाथाना क्षेत्र के लिए ऐतिहासिक सौगात मिलने पर कार्यकर्त्ताओं द्वारा चला मैन स्टैण्ड, सिरोही में पृथ्वीराज महाराज के मन्दिर के सामने और औद्योगिक क्षेत्र में नगरपालिका चेयरमैन श्रीमति सरिता दीवान के नेतृत्व में महिला संगठनों द्वारा स्वागत किया गया।

इसके पश्चात् कार्यकर्ताओं द्वारा डीजे की धुन पर नाचते गाते हुए और सुरेश मोदी जिन्दाबाद के नारे लगाते हुए रैली के रूप में ब्लॉक कांग्रेस कार्यालय पहुंचकर अभिनन्दन कार्यक्रम रखा गया। कुम्भाराम नहर योजना के बजट स्वीकृति पर समस्त क्षेत्रवासियों में खुशी की लहर छाई हुई है। विधायक सुरेश मोदी ने नीमकाथाना क्षेत्र के लिए ऐतिहासिक सौगात दिलाते हुए विधानसभा चुनाव का प्रमुख वादा पूरा करवाया है। विधायक सुरेश मोदी ने कार्यक्रम में संबोधन करते हुए बताया कि कुम्भाराम लिफ्ट परियोजना का काम पूर्ण होने पर क्षेत्रवासियों की पेयजल समस्या से हमेशा के लिए निजात मिल सकेगी।

**वाहन रजिस्ट्रेशन सार्वजनिक सूचना**

मैं कमलेश उम्र 49 साल पत्नी स्व. रामनिवास जाति जाट निवासी ढंढाल लेखू तहसील राजगढ़ जिला चूरू (राज.) की हूं। मैं उपरोक्त पते की स्थाई निवासी हूं। एक वाहन पिकअप रजि. संख्या RJ 10 GB 1252 मॉडल 2017 चेचिस संख्या MAIZR2TBKH5L19852 ईंजन संख्या TBH4L75875 है, जो मेरे पति रामनिवास पुत्र चन्दगीराम जाति जाट निवासी ढंढाल लेखू तहसील राजगढ़ जिला चूरू (राज.) के नाम से रजि. शुदा है और मेरे पति का स्वर्गवास हो चुका है। मेरे कुल 3 वारिस हैं, जिनके नाम निम्न प्रकार से है- (1.) पानकी-पुत्री (2.) मिन्टु-पुत्री (3.) प्रदीप-पुत्र हैं तथा मेरे पति के स्वर्गवास के बाद मेरे पति के नाम से स्थित चल-अचल सम्पत्ति की मालिक एवं नोमिनी मैं स्वयं हूँ। उक्त वाहन को मेरे नाम से स्थानान्तरण करवाना चाहती हूँ, और इस बाबत भविष्य में किसी अन्य व्यक्ति या वारिस के द्वारा एतराज किया जाता है तो उसकी तमाम जिम्मेवारी मेरी होगी।

दिनांकः- 05.08.2022

सूचनाकर्ता

कमलेश पत्नी स्व. रामनिवास जाति जाट निवासी ढंढाल लेखू तहसील राजगढ़ जिला चूरू (राज.)

# लम्पी बीमारी से 500 से अधिक गायें मरी, 20 सदस्यों की टीम गुजरात से पथमेड़ा पहुंची

## पिछले चार दिनों से पथमेड़ा में रोजाना 25 से 30 गायों की मौत हो रही है

**सांचौर,** (निसं)। सांचौर क्षेत्र में स्थित गौधाम पथमेडा जहां पर लंपी बीमारी की वजह से गौवंश खतरे में है। क्षेत्र में स्थाई इलाज के अभाव में पांच सौ से अधिक गोवंश की मौत हो गई है एवं गौशालाओं के समक्ष गायों को इस महामारी से बचाने की चुनौती पैदा हो गई है। पालडी स्थित गौशाला में सबसे अधिक इस महामारी से गोवंश शिकार हुआ है जिसमें करीब 350 के करीब गाय इस महामारी की चपेट में आ चुकी है। चिकित्सा विभाग की टीम लगातार प्रयास करके स्वस्थ गोवंश का टीकाकरण कर रही हैं।

गोधाम पथमेडा में इस महामारी से गोवंश को बचाने के लिए गुजरात के धानेरा, थराद से पशु चिकित्सकों की 20 सदस्यों की टीम पहुंची व 2 दिन में करीब 3000 गोवंश का टीकाकरण किया है।

गोधाम पथमेडा की विभिन्न गौशाला में करीब, 2 हजार से अधिक गायों में संक्रमण फैला हुआ है। इन गोशालाओं में पहला केस 18 जुलाई को सामने आया था। इसके बाद से लगातार गायों में संक्रमण फैलता गया और गायों की मौत होना शुरू हो गई। गौवंश की मौत होने के बाद प्रशासन गौशाला प्रशासन एवं ग्रामीणों के सहयोग से गौशाला में टीम द्वारा लगातार कार्य किया जा रहा है जिससे इस महामारी को लेकर अब स्थिति काफी नियंत्रण में होने का दावा किया जा रहा है।

पथमेडा गोशाला के विट्ठल कृष्ण महाराज ने बताया कि 18 जुलाई को पहला केस सामने आने के बाद शुरू में तो प्रतिदिन चार से पांच गायों की मौत हो रही थी, लेकिन पिछले चार दिनों से रोजाना 25 से 30 गायों की मौत हो रही है। उन्होंने राज्य सरकार से इस बीमारी में गोवंश के लिए सहायता राशि के साथ दवाई देने की मांग की है। पशु पालन विभाग के नोडल अधिकारी डॉक्टर रामा भाई पटेल ने बताया कि क्षेत्र में लंपी स्किन बीमारी से करीब 1500 से ज्यादा गोवंश चपेट में है। इसको लेकर पशु पालन विभाग के डॉक्टरों की टीम लगाकर इलाज कर रही है।

उन्होंने बताया कि इसका अभी कोई टीका नहीं है। इससे बचाव ही उपचार है। उन्होंने किसानों से अपील करते हुए कहा कि जो भी पशु इस बीमारी का शिकार हुआ है उसे स्वस्थ पशु से दूर रखें। लंपी स्किन बीमारी अभी केवल गायों में ही फैल रही है।

गोधाम पथमेडा के संस्था प्रधान व संरक्षक स्वामी दत्त शरणानंद महाराज अहमदाबाद में चल रहे चातुर्मास को छोड़कर गौशालाओं का जायजा लेने के लिए सांचौर पहुंचे और उन्होंने विभिन्न गौशालाओं का दौरा करके गोवंश की हो रही मौत के मामले को लेकर चिंता जाहिर की। उन्होंने प्रशासन एवं गौ भक्तों से इस पुनीत कार्य में गंभीरता से कार्य करने एवं गोवंश को बचाने का आव्हान किया। जिस पर प्रशासन अलर्ट होने के साथ-साथ गुजरात में अन्य जगहों से भी चिकित्सा का टीमों ने दौरा कर गोवंश के टीकाकरण का कार्य युद्ध स्तर पर शुरू किया।

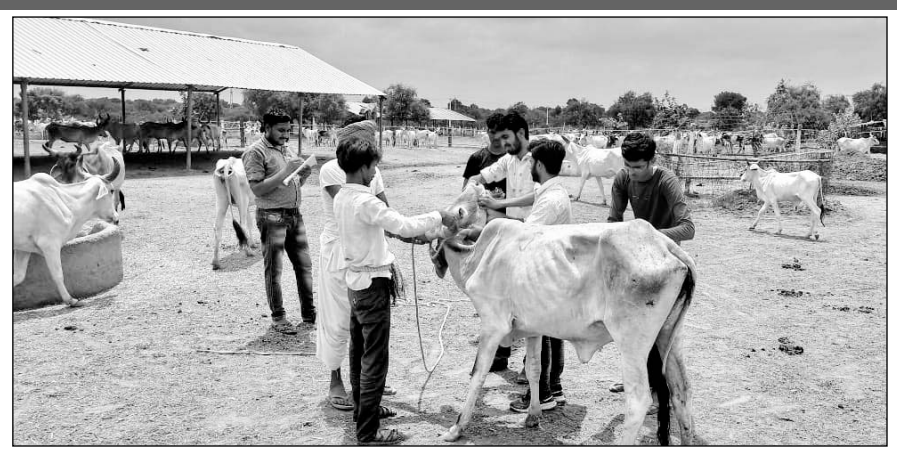

सांचौर के निकट गोधाम पथमेड़ा में गुजरात से आई चिकित्सा टीम ने गायों का टीकाकरण किया।

- पथमेडा की गौशालाओं में करीब दो हजार से अधिक गायों में संक्रमण फैला हुआ है

# भीषण सड़क हादसे में 4 की मौत, एक महिला पीबीएम अस्पताल में भर्ती

## टक्कर में दोनों कारों के ड्राइवरों ने दम तोड़ा

**बीकानेर,** (कासं)। श्रीडूंगरगढ़ में कार और बोलेरो गाड़ी में जबर्दस्त टक्कर में चार लोगों की दर्दनाक मौत हो गई। जबकि एक महिला गंभीर हालत में पीबीएम अस्पताल के ट्रोमा सेंटर में है। हादसा श्रीडूंगरगढ़ में पेट्रोल पंप के पास रविवार दोपहर करीब 4 बजे हुआ। हादसे के दौरान बोलेरो में सवार ड्राइवर व महिला दोनों की मौत हो गई। जबकि दूसरी कार में सवार पति की मौत हो गई जबकि पत्नी गंभीर रूप से घायल है। एक मृतक की पहचान नहीं हो पाई।

इनोवा कार के ड्राइवर विनोद पुत्र जीवाराम व सुलोचना पत्नी महिपाल सिंह की भी मौत हो गई है। सुलोचना ने पीबीएम अस्पताल पहुंचते ही दम तोड़ दिया।

- हादसा श्रीडूंगरगढ़ में पेट्रोल पंप के पास रविवार दोपहर करीब चार बजे हुआ

दूसरी कार में सवार संजय पुत्र ओमप्रकाश शर्मा की बीकानेर के पीबीएम अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। इस कार के ड्राइवर की मौत मौके पर ही हो गई। जिसके शव को श्रीडूंगरगढ़ अस्पताल की मोर्चरी में रखा गया है। इस मृतक की पहचान अभी तक नहीं हो पाई है। कार सवार शालिनी पत्नी संजय शर्मा पीबीएम अस्पताल के ट्रोमा सेंटर में मौत से जंग लड़ रही है। मृतकों में एक कार के चालक की पहचान विनोद के रूप में हुई है। जो झुंझुनूं निवासी है। जबकि एक अन्य मृतक संजय जयपुर का रहने वाला है। दूसरी कार में सवार सुलोचना भी जयपुर की रहने वाली थी। मृतकों में संजय शर्मा बार काउंसिल के पूर्व अध्यक्ष हैं। हादसे की जानकारी मिलने के साथ ही बीकानेर के कई वरिष्ठ वकील भी पीबीएम अस्पताल पहुंच गए।

## बघेरे ने गाय का शिकार किया

**निवाई,** (निसं)। उपखंड के गांव बस्सी में शनिवार की रात को पहाडी पर स्थित बालाजी मंदिर के समीप बघेरे ने एक आवारा गाय का शिकार कर लिया। गाय का शिकार करने से ग्रामीणों में भय व्याप्त हो गया है। ग्रामीण खुशीराम पोसवाल गणेश पोसवाल व ईश्वर कसाना ने बताया कि शनिवार की रात को बघेरे पहाडी पर बनी हुई गुफा में एक आवारा गाय का शिकार कर लिया जिससे उसकी मौत हो गई।

# विद्यालय में भरा पानी

**निवाई,** (निसं)। ग्राम पंचायत रजवास के राजकीय प्राथमिक विद्यालय बैरवा बस्ती में बरसात होने पर विद्यालय परिसर सहित कमरों में पानी भर जाता है। जिससे विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को कई परेशानियां होती हैं।

प्रधानाध्यापिका ममता शर्मा ने बताया कि जब भी बरसात होती है तो विद्यालय के कमरों सहित सारे परिसर में पानी भर जाता है और विद्यालय एक तलाई के रूप में दिखाई देने लगता है। पानी भरने से बच्चों को शिक्षण कराना असंभव हो जाता है। विद्यालय के अध्यापक हनुमान गुर्जर ने बताया कि इस समस्या के समाधान के लिए कई बार सरपंच, शिक्षा विभाग, उपखण्ड अधिकारी और तहसील कार्यालय में स्थित बाढ नियंत्रण कक्ष के माध्यम से भी अधिकारियों को अवगत करवा चुके हैं लेकिन अभी तक भी बच्चों की समस्या का कोई समाधान नहीं हुआ है। उन्होंने बताया कि कई बच्चे इस परेशानी के चलते नियमित स्कूल आने से भी किनारा करने लगे हैं।

## बॉर्डर और छावनी एरिया के पास नहीं उड़ सकेंगे ड्रोन

**बीकानेर,** (कासं)। सेना ने कहा है कि छावनी एरिया और बॉर्डर पर ड्रोन उड़ाने पर पाबंदी लगाई जानी चाहिए। ड्रोन

- सैन्य संपर्क सम्मेलन में सेना और प्रशासन के बीच कई मुद्दों पर चर्चा

एक्टिविटी से सुरक्षा में बाधा उत्पन्न होती है साथ ही गोपनीयता भी भंग होती है। बॉर्डर पार से हो रही मादक पदार्थों की तस्करी को रोकने की दिशा में ठोस कदम उठाने पर भी चर्चा हुई।

सेना की रणबांकुरा डिवीजन में नागरिक सैन्य संपर्क सम्मेलन के दौरान सेना, बीएसएफ, एयर फोर्स और आईबी के अधिकारियों ने प्रशासन और पुलिस के अधिकारियों के साथ आंतरिक सुरक्षा के मुद्दों पर चर्चा के साथ ही साइबर क्राइम की बढ़ती वारदतों पर चिंता जाहिर की। इसके साथ ही सेना में अगले महीने होने वाली अग्निवीरों की भर्ती को लेकर विचार विमर्श किया। भर्ती में हजारों की संख्या में युवक भाग लेंगे। उनके आवागमन के साधनों और सुरक्षा संबंधी उपायों पर बातचीत की गई। इसके अलावा पूर्व सैनिकों के कल्याण के मुद्दे भी उठे। सम्मेलन का उद्देश्य कार्यात्मक और योजना दोनों स्तरों पर अधिक समन्वय और तालमेल हासिल करना था। संभागीय आयुक्त नीरज के पवन, आईजी ओम प्रकाश, बीएसएफ डीआईजी पुष्पेन्द्र सिंह राठौड़, एसपी योगेश यादव, एएसपी अमित कुमार सहित आईबी, सेना और एयर फोर्स के प्रतिनिधि बैठक में शामिल हुए। सैन्य प्रवक्ता के अनुसार यह बैठक राष्ट्रीय सुरक्षा और विकास की दिशा में काम करने के लिए सेना और प्रशासन के बीच सौहार्दपूर्ण संबंधों में एक मील का पत्थर है।

# केसरिया शाही ध्वज चढ़ने के साथ डिग्गी लक्खी मेले का समापन

डिग्गी मेले के समापन अवसर पर पदयात्रा का शाही ध्वज मंदिर शिखर पर चढ़ाया गया।

**मालपुरा/डिग्गी,** (निसं)। जयपुर ताड़केश्वर मंदिर से तीन अगस्त को शुरू हुई 57वीं लक्खी पदयात्रा के केसरिया शाही ध्वज के डिग्गी पहुंचने पर डिग्गी कल्याण मंदिर ट्रस्ट अध्यक्ष व उपखण्ड मजिस्ट्रेट रामकुमार वर्मा सहित एएसपी राकेश कुमार बैरवा, डीवाईएसपी सुशील मान, एडीएम प्रभातीलाल जाट, रामदास ट्रस्ट अध्यक्ष ठाकुर रामप्रताप सिंह व मंदिर ट्रस्टियों ने लक्खी पदयात्रा के शाही निशान का भव्य स्वागत किया।

- मंदिर ट्रस्ट अध्यक्ष ने की केसरिया ध्वज की अगवानी
- गाजे-बाजे से निकला जूलूस, पांच दिन में छह लाख से अधिक कल्याण भक्तों ने दर्शन किये

गंगोत्री से लाये पवित्र जल से कल्याणधणी की प्रतिमा का अभिषेक व केसरिया ध्वज मंदिर शिखर पर चढ़ने के साथ 57वें लक्खी मेले का समापन हुआ। पदयात्रा संयोजक श्रीराम लौहे वाले व राष्ट्रीय कथावचक वैभव श्रीजी, भारत तिब्बत संवादमंच के भारती वैष्णव व संदीप कुमार की अगुवाही में डिग्गी पहुंचे केसरिया ध्वज के साथ डिग्गी कस्बे में भव्य शोभायात्रा निकाली गई जहां कल्याण भक्तों पर पुष्प वर्षा की गई। नाचते-गाते पदयात्रियों व कल्याण भक्तों ने मंदिर पहुंच दरबार में ढोक लगा मनोतियां मांगी। पदयात्रा संयोजक सहित ट्रस्ट अध्यक्ष ने गंगोत्री के पवित्र जल से वैदिक मंत्रों के साथ डिग्गी कल्याणजी महाराज की प्रतिमा का जलाभिषेक कर मंदिर के शिखर पर केसरिया ध्वज चढ़ाया।

डिग्गी कस्बा कल्याणजी के प्रिय व पवित्र वस्त्र केसरिया के रंग में रंग गया। पांच दिन में मेले में देश व प्रदेश से पहुंचे 6 लाख से अधिक कल्याण भक्तों ने कतारबद्ध श्रीजी के दर्शन किये। स्थानीय पुलिस व प्रशासन द्वारा मेले के दौरान पदयात्रियों की सुरक्षा के लिए किये गये चाक-चौबंद बंदोबस्त किए थे।

विजय सागर तालाब पर कड़े सुरक्षा पहरे में श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगाई। तो 2 लाख से अधिक भक्तों ने डिग्गी नुक्कड चौराहे से मंदिर तक 3 किमी. तक आस्था की कनक दण्डवत की। रविवार को अवकाश के चलते डिग्गी में मेला पूर्ण परवान पर रहा। डिग्गी की ओर आने वाले सभी रास्तो पर कल्याण भक्त हाथो मे केसरिया ध्वज लिये कल्याण महाराज के जयकारे लगाते धर्मनगरी डिग्गी पहुंचे।

## नाबालिग से दुष्कर्म का मामला दर्ज

**उनियारा/चौरू,** (निसं)। उनियारा उपखंड अलीगढ़ पुलिस थाना क्षेत्र के अंतर्गत पीड़ित नाबालिक पुत्री के पिता

- पड़ोस में रहने वाला युवक घर पर आ गया एवं बालिका के साथ दुष्कर्म किया

ने अलीगढ़ पुलिस थाने में मामला दर्ज कराया है कि मेरी नाबालिग पुत्री शनिवार शाम को घर पर अकेली थी उसे देखकर शाबाश उर्फ फोदू पुत्र सलीम मोहम्मद ने उसके साथ दुष्कर्म किया है। अलीगढ़ थाना प्रभारी नाहर सिंह मीणा ने बताया कि पीड़ित बालिका के पिता ने बताया कि मैं और मेरी पत्नी खेत पर काम करने गए हुए थे इस दौरान घर पर मेरी पुत्री को अकेला देखकर पड़ोस में रहने वाला युवक घर पर आ गया एवं बालिका के साथ दुष्कर्म किया। पीड़ित बालिका ने शाम को अपनी मां से अपने साथ हुई घटना की आपबीती बताई। इस पर पीड़ित बालिका के पिता ने अलीगढ़ थाने पर पहुंचकर मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

# खाटूश्यामजी जा रही बस पलटी, 17 जने घायल

घायलों का रींगस सीएचसी में उपचार किया गया।

**रींगस,** (निसं)। खाटू श्यामजी के दर्शनों के लिए नोएडा से आ रही एक बस राजमार्ग पर दूसरे वाहन के साइड दबाने से बचने के प्रयास में पलट गई।

दुर्घटना में 17 लोग घायल हो गये। घायलों में से एक को जयपुर रैफर किया गया है। जानकारी के अनुसार नोएडा से एक बस में श्याम श्रद्धालु सवार होकर खाटू श्यामजी आ रहे थे। सुबह सात बजे यहां पर राजमार्ग पर रीको मोड पर बस से आगे चल रहे एक अन्य साधन ने साइड दबा दी। दुर्घटना से बचने के प्रयास में वाहन चालक ने बस को घुमाया तो पलटी खा गई। बस के पलटने से 17 श्रद्धालु घायल हो गये इन्हें रींगस सीएचसी में भर्ती करवाया गया जहां से एक को जयपुर रैफर कर दिया गया। घायलों में ओमप्रकाश चौहान, कौशल चौहान, सुभी चौहान, सुहानी चौहान, सुमन चौहान, पीहू चौहान, मानसी चौहान, चमन सिंह, विमला, राखी, ज्योति, काजल, कशिश, रेणु चौधरी, सतीश चौधरीद्ध सुमन चौहान शामिल है। पुलिस ने वाहन को सड़क से हटा कर मार्ग खुलवाया।

# घग्घर नदी के पानी से सिंचाई कर रहे किसान

**हनुमानगढ़,** (निसं)। जिले के अंदर से गुजरने वाली अंतर्राष्ट्रीय बरसाती नदी में एक दशक बाद इस बार लगातार 16 दिनों से पानी प्रवाहित हो रहा है। इससे हनुमानगढ़-श्रीगंगानगर जिले के लगभग 1 लाख हेक्टेयर में खड़ी धान और नरमा की फसलों को लाभ हुआ है। जल संसाधन विभाग के अधिकारियों के अनुसार वर्ष 2019 में लगातार 9 दिन पानी चला था। इस बार 22 जुलाई को घग्घर में पानी की आवक शुरू हुई और लगातार लगभग 2 हजार से 5 हजार क्यूसेक नाली बैड में चलाया जा रहा है। सबसे ज्यादा लाभ धान उत्पादक किसानों को हुआ है।

किसान धान के खेतों में घग्घर के पानी से सिंचाई कर रहे हैं। घग्घर के पानी से सिंचाई करने से धान की पैदावार 15 से 20 प्रतिशत तक बढ़ने की संभावना जताई जा रही है। सेम नाला में भी घग्घर का पानी छोड़ने से नरमा की फसलों में भी किसानों ने सिंचाई की है। कृषि विशेषज्ञों के अनुसार भूमिगत जल स्तर में भी बढ़ोत्तरी हो रही है। प्रत्येक वर्ष 10 से 15 दिन पानी चलता है, लेकिन पानी की निरंतरता नहीं रहने के कारण अंतिम छोर पर नहीं पहुंच पाता। इस बार पानी पाकिस्तान पहुंचने की संभावना है।

हिमालय का पानी घग्घर के माध्यम से हनुमानगढ़ आता है। गुलाचिका से शुरू हुआ पानी हरियाणा होते हुए राजस्थान में प्रवेश करता है। शनिवार को गुल्लाचिका से 6950 क्यूसेक पानी की आवक बढ़ गई। इसी तरह घग्घर नदी में भी 650 क्यूसेक पानी की बढ़ोतरी दर्ज की गई। जानकारी के अनुसार गुल्लाचिका से 4620 क्यूसेक पानी प्रवाहित हो रहा था जो शनिवार को बढ़ कर 11 हजार 550 क्यूसेक हो गया। जयनारायण बेनीवाल, पूर्व उपनिदेशक कृषि (विस्तर), हनुमानगढ़ का कहना है कि 'घग्घर नदी में आने वाला पानी धान की फसल के लिए लाभदायक होता है। घग्घर के पानी से सिंचाई करने से खाद की भी जरूरत नहीं रहती।

# धौलपुर में हुई भारी बारिश, सड़कें बनी दरिया

बारिश के बाद दर्जनों दुकानों और शहर के निचले इलाकों में पानी भर गया।

**धौलपुर** (निस)। धौलपुर शहर सहित जिलेभर में रविवार को सुबह से दोपहर तक भारी बारिश हुई। जिससे सड़कें दरिया बन गई और लोगों को आने-जाने में भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। हालांकि बरसात से लोगों को गर्मी से राहत मिली है।

सिंचाई विभाग धौलपुर के पपेन्द्र मीणा ने बताया कि रविवार को धौलपुर शहर में 67 , बाड़ी में 17, बसेड़ी में 12, सैंपऊ 96, राजाखेड़ा में 15,

- सुबह से शुरू हुआ बारिश का दौर दोपहर तक चलता रहा

तालाबशाही में 17, उर्मिला सागर में 9 एवं आंगई में 6 एमएम बारिश दर्ज की गई है। रविवार को सुबह से ही आसमान में काले बादल छाए हुए थे और दिन में भी रात जैसा अंधेरा हो रहा था।

सुबह करीब 10 बजे से तेज बारिश का दौर शुरू हुआ, जो दोपहर तक चला। इस दौरान भारी बरसात हुई। जिससे धौलपुर शहर की सड़कें दरिया बन गई। जिसकी वजह से लोगों को आने-जाने में भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। वहीं दर्जनों दुकानों और धौलपुर शहर के निचले इलाकों में भारी पानी भर गया। जिससे लोगों को भारी परेशानी हुई।

# केन्द्रीय मंत्री शेखावत और राज्य मंत्री चौधरी ने लंपी स्कीन डिजीज का फीडबैक लिया

## एक-एक वॉट्सऐप ग्रुप पांचों जिलों में बनाया जाए, जिस पर ग्रामवासी सीधा सूचित करें

**जोधपुर,** (कासं)। केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत और केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी ने राजस्थान में गोवंश में फैले खतरनाक संक्रामक रोग लंपी वायरस संक्रमण के संदर्भ में आज स्थानीय डीआरडीए हॉल में जोधपुर, पाली, जालौर, जैसलमेर बाड़मेर के विविध जिलों के सक्षम अधिकारियों से विस्तार से चर्चा कर जानकारी ली। लंपी स्कीन डिजीज बीमारी की रोकथाम हेतु गए उपायों के बारे में फीडबैक लिया। समाधान करने के लिए राजस्थान सरकार से भी आग्रह किया ताकि पशु पालकों को राहत दी जा सके।

इस दौरान राज्यसभा सांसद राजेन्द्र गहलोत मौजूद रहे। शेखावत ने मुख्यमंत्री से लंपी वायरस के कारण अपना पशुधन गंवाने वाले पशुपालकों और किसानों को मुआवजा देने का आग्रह किया।

रविवार को बैठक के बाद मीडिया के साथ अनौपचारिक बातचीत में केंद्रीय मंत्री शेखावत ने कहा कि गुजरात के रास्ते से आकर पिछले दो महीने में पश्चिमी राजस्थान के लगभग सभी जिलों में लंपी वायरस कहर बरपा है। हजारों गायों की मौत हो चुकी है। यदि पश्चिमी राजस्थान का आंकड़ा उठाकर देखें तो लगभग एक लाख से ज्यादा पशुधन इससे संक्रमित हुआ है। यह आंकड़ा निरंतर बढ़ता जा रहा है।

जोधपुर के डीआरडीए हॉल में मंत्रियों ने लंपी स्कीन बीमारी को लेकर जानकारी ली।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि ऐसे सारे मृतक पशुओं का मुआवजा राजस्थान सरकार को गरीब लोगों, पशुपालकों और किसानों को देना चाहिए। मैं मुख्यमंत्री से आग्रह करूंगा। उन्हें पत्र लिखकर हम सभी लोग आग्रह करेंगे कि तुरंत इस पर निर्णय लेकर प्रभावित पशुपालकों को मुआवजा देना चाहिए।

शेखावत ने कहा कि हम लगातार जिला प्रशासन और राज्य सरकार के साथ बातचीत कर रहे हैं इस बीमारी की किस तरह से रोकथाम की जा सके। वर्तमान स्थिति और हालात पर एक बार पूरे विस्तार से चर्चा कर अधिकारियों को निर्देश दिये हैं।

केंद्रीय मंत्री शेखावत ने कहा कि हमको टेक्नोलॉजी का सहारा लेना होगा। एक-एक वॉट्सऐप ग्रुप पांचों जिलों में बनाया जाए, जिस पर ग्रामवासी सीधा सूचित कर सकें। वीडियो कॉल के माध्यम से गांव के जनप्रतिनिधि संक्रमित पशु का एक बार डॉक्टर से निरीक्षण कराएं और तुरंत उपचार सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि दवाइयों की खरीद के लिए सरकार ने पैसा दिया है, उसका भी समुचित उपयोग हो।

मीडिया और सरकारी आंकड़ों में फर्क होने के सवाल पर केंद्रीय मंत्री ने कहा कि निश्चित रूप से फर्क है। सरकारी आंकड़ों की समीक्षा में यह विषय संज्ञान में आया है। अब तक केवल 20 प्रतिशत पशुधन का ही सर्वे हो पाया है। जोधपुर, बाड़मेर और जैसलमेर में ही लगभग 25-30 लाख के बीच गायों की जनसंख्या है, लेकिन अब तक चार लाख के आस-पास का सर्वे हुआ है। सरकार का आंकड़ा चार लाख के अनुपात में है, बाकी आंकड़ा 6-7 गुना अधिक तक हो सकता है, जो मीडिया ने अपने स्तर से इकट्ठा किया है।

- 'हालात जितना सरकार ले रही है, उससे कहीं ज्यादा गंभीर और चिंताजनक'

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि हालात जितना सरकार ले रही है, उससे कहीं ज्यादा गंभीर और चिंताजनक हैं। जिला कलेक्टर अपने-अपने जिले में अधिकारियों को लगाकर हरेक गांव में कितना पशु संक्रमित हुआ है, कितनी गाय मरी हैं, उसका आंकड़ा और सूचना एकत्रित करें।

# सरपंचों का महापड़ाव स्थगित, लेकिन आंदोलन जारी, एक गुट बैठा धरने पर

## सरकार ने कुछ मांगों पर सहमति दी, कुछ पर होगा विचार

**जयपुर**, (का.प्र.)। ग्रामीण विकास और पंचायती राज मंत्री रमेश मीणा के मनरेगा कार्यों में अनियमितता के आरोपों से नाराज सरपंचों का महापड़ाव रविवार को स्थगित हो गया, हालांकि आंदोलन अभी जारी रहेगा। दरअसल सरपंचों के एक गुट ने महापड़ाव स्थगित करने का ऐलान कर दिया है, लेकिन इसी में शामिल कुछ सरपंच इस फैसले से नाराज हैं और वे सड़क पर ही धरने पर बैठ गए। दूसरी ओर सरकार से वार्ता के बाद कई मांगें मान ली गई हैं और जो अधूरी हैं उसे पूरी करने की मांग को लेकर संघ से जुड़े पदाधिकारी, जिला अध्यक्ष और कार्यसमिति के सदस्य आंदोलन जारी रखेंगे।

पंचायती राज मंत्री रमेश मीणा को पद से हटाने सहित सरपंच संघ की 35 सूत्री मांग को लेकर राजधानी में महापड़ाव डाला था इनमें से कुछ मांगें मानने के बाद, जो मांग केंद्र सरकार से जुड़ी थीं, उसके लिए राज्य सरकार प्रक्रिया अपनाएगी। सरपंच की ओर से एनजीओ की ओर से जांच करवाने की खिलाफत को लेकर सरकार ने आश्वासन दिया कि अब एनजीओ के बजाय पुराने तरीके से ही जांच कराई जाएगी। हालांकि बीएसआर रेट पर पूर्व की तरह होने वाले टेंडर की प्रक्रिया वर्तमान में भी यथावत जारी रखने की मांग पर निर्णय नहीं हुआ है।

अब तक जो मांगे मानी गई हैं, उनके आदेश लिखित में सरपंच संघ मांग रहा है। रविवार को सरपंच संघ से जुड़े पदाधिकारियों ने आपस में बैठक कर यह तय किया कि महापड़ाव स्थगित कर दिया जाए और 24 अगस्त को वापस जयपुर में एक बड़ा महापड़ाव डाला जाए लेकिन कुछ पदाधिकारी इस फैसले से नाराज होकर कुछ सरपंच बैठक स्थल कर बाहर ही सड़क पर धरने पर बैठ गए।

सरपंच संघ के प्रदेश अध्यक्ष बंशीधर गढ़वाल ने बताया कि आगामी 17 अगस्त को प्रदेश कार्यसमिति की बैठक रखी जाएगी, जिसमें आगामी आंदोलन की रणनीति बनाई जाएगी। वहीं 24 अगस्त को वापस जयपुर में फिर महापड़ाव होगा। 24 अगस्त को होने वाले महापड़ाव में सरपंचों के साथ ही मनरेगा के कर्मचारी और मेट तक शामिल होंगे। इस दौरान सरपंच पूर्व की तरह अपना कार्य बहिष्कार जारी रखेंगे। हालांकि वर्तमान में मौजूदा प्रदेश पदाधिकारी और कार्यसमिति सदस्य कहां धरना देंगे अभी यह तय नहीं किया गया है क्योंकि प्रशासन की ओर से उसकी स्वीकृति नहीं मिली है। दूसरी ओर नागौर से जुड़े सरपंच चाहते थे कि उनके क्षेत्र में एक बीडीओ को हटा दिया गया था, उसे बहाल किया जाए लेकिन यह मामला कोर्ट में चल रहा है। सरपंच संघ पदाधिकारियों का कहना है कि सभी सरपंच अपनी मांग पत्र को लेकर एकजुट हैं।

उल्लेखनीय है कि पंचायती राज मंत्री रमेश मीणा ने 7 जिलों में हुए मनरेगा कार्यों की जांच के लिए कमेटी गठित की थी। इसकी रिपोर्ट आने के बाद मंत्री ने इन 7 जिलों में अनियमितता का आरोप लगाया था। रिपोर्ट में कहा गया था कि बाड़मेर, नागौर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, बीकानेर, झालावाड़ और उदयपुर में 150 करोड़ रुपए से 500 करोड़ रुपए तक की राशि का काम दिखाया गया जबकि उतना काम धरातल पर हुआ ही नहीं है। मीणा ने यह भी कहा कि मनरेगा में जिस काम का श्रमिकों को पैसा दिया गया वह काम धरातल पर नहीं है सर्वाधिक अनियमितता नागौर और बाड़मेर में हुई। मंत्री के बयान के विरोध में सरपंचों ने जयपुर में महापड़ाव डाला था जो सरकार से वार्ता के बाद अब स्थगित कर दिया गया है।

# पूनिया ने किया महारुद्राभिषेक

**जयपुर में रॉयल हवेली, स्टेच्यू सर्किल पर श्री शिव महापुराण कथा समिति की ओर से महारुद्राभिषेक कार्यक्रम में भाजपा प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया ने महारुद्राभिषेक किया। साथ ही 251 जोड़ों ने भी सामूहिक महारुद्राभिषेक किया। आजादी के 75वें अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में कार्यक्रम में मौजूद सभी शिव भक्तों ने हाथों में तिरंगा लेकर हर घर तिरंगा अभियान को बड़े स्तर पर करने का संकल्प लिया।**

# जयपुर में मंत्री मुरारीलाल मीणा की बेटी की कार पानी में डूबी

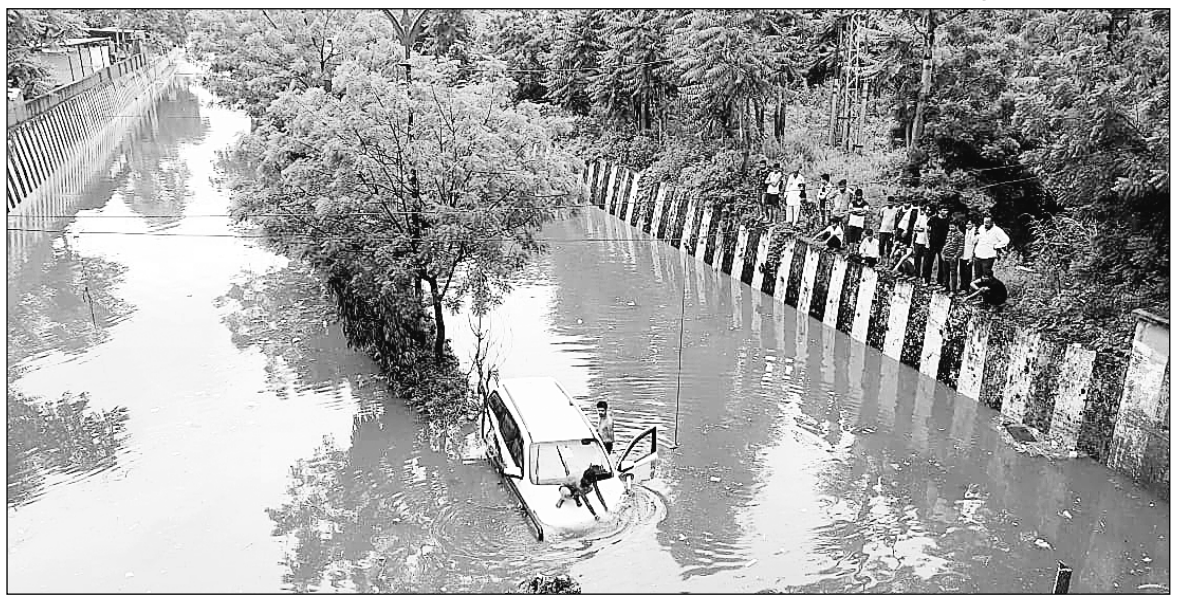

**जयपुर ( कासं )। राजधानी जयपुर के कई हिस्सों में रविवार को हल्की से तेज बारिश हुई। इस कारण मालवीय नगर में नंदपुरी अंडरपास में बारिश से पानी भर गया। जहां से गुजर रही मंत्री मुरारी लाल मीणा की बेटी की कार अंडरपास में भरे पानी में डूब गई। बता दें, यह कार मंत्री मुरारीलाल मीणा की बेटी निहारिका जोरवाल चला रही थी। निहारिका जोरवाल राजस्थान विश्वविद्यालय छात्रसंघ अध्यक्ष पद की उम्मीदवार है। मौके पर लोगों ने कार को डूबते देखा तो उन्होंने निहारिका को कार से बाहर निकाल लिया। जिसकी वजह से निहारिका की जान बच गई।**

# कावड़ यात्रा जैसे प्रतिबंध मोहर्रम पर लगाएं राज्य सरकार : लाहोटी

- **सांगानेर विधायक ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को पत्र लिखा**
- **'कानून सबके लिए एक समान, मोहर्रम पर डीजे-ढोल व नगाड़ों तथा हथियारों के प्रदर्शन पर रोक लगे'**

**जयपुर** (कासं)। सांगानेर विधायक अशोक लाहोटी ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को पत्र लिखकर कहा है कि राज्य सरकार ने जैसे सावन के पवित्र माह में कावड़ यात्रा पर प्रतिबंध लगाए, वैसे ही प्रतिबंध अब मोहर्रम पर भी लगाए। लाहोटी ने कहा कि कावड़ यात्रियों का रजिस्ट्रेशन अनिवार्य किया गया। डीजे-ढोल व नगाडों पर प्रतिबंध लगाकर पारंपरिक निकलने वाली कावड़ यात्रा व हिन्दू सनातन धर्म के साथ कुठाराघात किया है। 9 जुलाई को मोहर्रम ताजियों के साथ विशेष समुदाय के द्वारा डीजे, सैकड़ों ढोल-नगाडों (जिसकी ध्वनी डीजे से भी कई गुना ज्यादा है) के साथ हजारों की तादात में एक साथ सड़कों पर जुलुस निकाले जाएंगे, इनमें हथियारों का प्रदर्शन व टयूबलाईटें फोड़ने का प्रदर्शन किया जाता है। अब राज्य सरकार इन पर भी रोक लगाए।

विधायक अशोक लाहोटी ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को पत्र में आगे लिखा कि जैसे कावड़ ले जाने वाले श्रद्धालुओं का रजिस्ट्रेशन कराया, उसी प्रकार मोहर्रम-ताजियों के साथ जुलुस में निकलने वाले लोगो का भी रजिस्ट्रेशन कराये। ढोल-नगाड़ों की संख्या 4/6 की जाए और हथियारों के प्रदर्शन व टयूबलाईटें फोड़ने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए। लाहोटी ने पत्र में आगे लिखा कि सांगानेर में 2 जुलाई को भगवान श्री जगन्नाथ की यात्रा निकलने वाली थी, जो कि सैकड़ों वर्षों से निकलती आ रही है, उसकी अनुमति भी जारी हो गई थी। इसके बाद पुलिस प्रशासन के द्वारा पुजारी के परिवार पर दबाव बनाकर निकलने वाली यात्रा को जबरन रूकवाया था। कल हुई सीएलजी की मीटिंग में सांगानेर व्यापार महासंघ समेत कई समाज समुदायों के प्रतिनिधियों ने राखी के त्यौहार के मध्य नजर सैकड़ों ढोल नगाड़ों के साथ ताजिया जुलुस मैन बाजार से निकलने पर कड़ा ऐतराज किया है। कानून सबके लिए एक समान हैं, इस पर विचार कर बहुसंख्यक हिन्दू समाज के साथ न्यासंगत निर्णय करे।

## 'ई.आर.सी.पी. को राष्ट्रीय परियोजना घोषित किया जाए'

**जयपुर**, (का.सं.)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने नई दिल्ली के राष्ट्रपति भवन में आयोजित नीति आयोग की शासी परिषद की सातवीं बैठक में केन्द्र सरकार से पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना को राष्ट्रीय परियोजना घोषित करने सहित विभिन्न केन्द्र प्रवर्तित योजनाओं में केन्द्र की आर्थिक सहायता बढ़ाने की मांग की है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में हुई बैठक में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने राजस्थान से जुड़े मुद्दों पर मजबूती से राज्य का पक्ष रखा। उन्होंने कहा कि ईआरसीपी 37,000 करोड़ रुपये की एक महत्वाकांक्षी परियोजना है, जिससे पूर्वी राजस्थान के 13 जिलों में लगभग 2 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा मिल सकेगी।

**राज्यपाल कलराज मिश्र ने रविवार को नव निर्वाचित उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ से व्यक्तिगत मुलाकात कर बधाई और शुभकामना दी। उन्होंने उम्मीद जताई कि उप राष्ट्रपति के रूप में धनखड़ का कार्यकाल संवैधानिक परंपरा और मूल्यों को और दृढ़ता प्रदान करेगा।**

# कानून व्यवस्था सुदृढ़ करने की जगह जस्टिफिकेशन ढूंढ रहे हैं : डॉ. पूनिया

**जयपुर**। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया ने बयान देते हुए कहा कि मुख्यमंत्री राजस्थान में महिला अपराधों पर रोक लगाने एवं न्याय दिलाने में लगातार असफल रहे हैं। कानून व्यवस्था सुदृढ़ करने की जगह वह बढ़ते अपराधों का जस्टिफिकेशन ढूंढ रहे हैं।

उपनेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ ने ट्वीट कर कहा कि फांसी की सजा के प्रावधान से रेप के बाद हत्या की घटनाओं के बढ़ने को लेकर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा दिया गया बयान दुर्भाग्यपूर्ण एवं शर्मनाक है। मुख्यमंत्री, जो गृह विभाग के मुखिया भी हैं वह बेतुके बयानों से राज्य में बढ़ते रेप के मामलों में अपनी सरकार की नाकामी से बच नहीं सकते हैं। राठौड़ ने कहा कि एनसीआरबी और पुलिस प्रतिवेदन के आंकड़े चीख-चीख कर कह रहे हैं कि राजस्थान दुष्कर्म के मामलों में देश में पहले पायदान पर है। राजस्थान में हर साल 2000 के करीब बच्चियों से रेप के मामले सामने आते हैं। जनवरी 2020 से जनवरी 2022 तक 4091 केस पॉक्सो एक्ट के तहत दर्ज हुए हैं। राठौड़ ने कहा कि पूर्ववर्ती भाजपा सरकार में नाबालिग से रेप के आरोपियों को फांसी की सजा के प्रावधान का कानून बना था। दुर्भाग्य है कि मासूम बच्चियों से रेप की घटनाओं पर अंकुश लगाने में विफल मुखिया जी अब फांसी की सजा के प्रावधान की ही खिलाफत कर रहे हैं। अगर हिम्मत है तो इस कानून के विरोध में विधानसभा में प्रस्ताव लेकर आएं तब हम उन्हें माकूल जवाब देंगे। राठौड़ ने कहा कि राजस्थान में प्रतिदिन दुष्कर्म की 16 घटनाएं हो रही हैं और मुख्यमंत्री दुष्कर्म के 48 प्रतिशत मामलों को झूठा बता चुके हैं। मुखिया जी इस प्रकार की बयानबाजी करके बार-बार दुर्दांत बलात्कारियों के मनोबल को तोड़ने की बजाय बढ़ाने का कुकृत्य कर रहे हैं। यक्ष प्रश्न यह है कि जब गृहमंत्री ही रेप के मामलों को झूठा बताकर अपराधियों के लिए रेड कार्पेट बिछाएंगे तो फिर पुलिस की जांच का रूप क्या होगा?

## प्रो. छीपा अध्यक्ष बने

**जयपुर**। पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति समारोह समिति के चुनाव समिति के कार्यालय मधुकर भवन, न्यू कॉलोनी में संपन्न हुए। प्रोफेसर मोहनलाल छीपा को समिति का अध्यक्ष और प्रतापभानु सिंह शेखावत को महासचिव चुना गया है। निर्वाचन अधिकारी ओंकार सिंह लखावत ने बताया कि राजेंद्र सिंह शेखावत और श्याम सुंदर अग्रवाल उपाध्यक्ष, गजेंद्र सिंह ज्ञानपुरिया कोषाध्यक्ष, नीरज कुमावत सह सचिव निर्वाचित हुए हैं।

# स्वामी विवेकानंद के चरित्र को जीवन में उतारें : मुक्तानंद अग्रवाल

**जयपुर**, (का.सं.)। रजिस्ट्रार, सहकारिता मुक्तानंद अग्रवाल ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने हमेशा सर्वधर्म समभाव की बात की। उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस भारत के इतिहास के अनोखे व्यक्ति थे। भारत एक आध्यात्मिक देश है। यहां अध्यात्म की कई विचारधाराएं प्रवाहित हुई है।

अग्रवाल रविवार को यहां रामकृष्ण मिशन परिसर में आजादी का अमृत महोत्सव और स्वामी विवेकानंद तथा रामकृष्ण मिशन की स्थापना के 125 वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित यूथ कन्वेंशन एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद के कारण रामकृष्ण परमहंस के बारे में विश्व ने जाना। विवेकानंद ने युवावस्था तक बहुत अध्ययन किया चाहे शास्त्र हो, चाहे दर्शन, अध्यात्म हो। उनमें प्रश्न पूछने की उत्कंठा थी वे एक जिज्ञासु और तार्किक थे, वे सत्य को जानने के लिए तह तक गए।

अग्रवाल ने कहा कि स्वामी विवेकानंद का जीवन शक्ति ही जीवन पर आधारित था। उन्होंने भय और निर्बलता का त्याग किया। उन्होंने निर्भयता से जीवन जिया। इसी निर्भयता से पूरे देश का भ्रमण किया। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद जैसे साहस व शक्ति की आज देश को जरूरत है।

उन्होंने कहा कि विवेकानंद का देश के प्रति समर्पण हम सभी के लिए सीखने के योग्य है। स्वामी विवेकानंद संन्यासी होते हुए संन्यास परंपरा से हट कर अपनी ऊर्जा को देश के लिए लगाया है। उन्होंने कहा कि धर्म दया है, पवित्रता है, साहस है इसके माध्यम से समाज एवं देश का उत्थान किया।

**रजिस्ट्रार, सहकारिता मुक्तानंद अग्रवाल ने रविवार को रामकृष्ण मिशन परिसर में स्वामी विवेकानंद तथा रामकृष्ण मिशन की स्थापना के 125 वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित कार्यक्रम में प्रतियोगिता में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कार बांटे।**

उन्होंने आव्हान किया कि स्वामी विवेकानंद के जीवन चरित को अपने जीवन में उतारे।

वर्षा चारण ने कहा कि हमें हमारी सांस्कृतिक गौरव पर गर्व है। जब ब्रिटिश काल में भारत हीनता के दौर में था, तक विवेकानंद ने समाज में उत्थान व देश में जागरण का बीड़ा उठाया। वे पहले भारतीय थे, जिन्होंने विश्व बंधुत्व का संदेश दिया। उन्होंने भारत भ्रमण एवं विदेशी प्रवास के बाद राष्ट्रवाद की ज्वाला जलाई। स्वामी विवेकानंद के विचारों से स्वराज की नींव पड़ी और हजारों स्वतंत्रता सेनानीयों ने देश को आजाद करने में भूमिका निभाई।

प्रारंभ में रामकृष्ण मिशन के कार्यों से अवगत कराया। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्ज्वलन एवं वेद पाठ से की गई। अतिथियों ने 21 एवं 24 जुलाई की हुई ड्रॉइंग और निबंध प्रतियोगिता में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करने वाले 30 छात्र - छात्राओं को पुरस्कार वितरित किए। रामकृष्ण मिशन, जयपुर के सचिव स्वामी देवप्रबानंद ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में युवा एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

## प्यार में फंसाकर महिला से दुष्कर्म

**जयपुर**। भट्टाबस्ती इलाके में शादी का झांसा देकर एक महिला से रेप का मामला सामने आया है। पिछले चार सालों तक आरोपी ने उसके साथ दुष्कर्म किया। प्रेग्नेंट होने पर उसका ऑबोशन भी करवाया। शादी का दबाव बनाने पर दूसरी महिला से शादी कर ली। भट्टाबस्ती थाने में पीड़िता ने रिपोर्ट दर्ज करवाई है।

पुलिस ने बताया कि भट्टाबस्ती निवासी 36 साल की महिला ने रिपोर्ट दर्ज करवाई है। करीब 4 साल पहले उसकी मुलाकात सलीम अहमद से हुई थी। बातचीत के दौरान आरोपी ने उसे शादी के लिए ऑफर किया। आरोपी सलीम अहमद ने खुद की पत्नी की मौत होना बताया।

## 'भारतीय संस्कृति आधारित तंत्र की स्थापना अर्थात स्वतंत्रता'

**जयपुर**। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय बौद्धिक शिक्षण प्रमुख स्वांत रंजन ने कहा कि भारत की जो पहचान है, संपूर्ण विश्व में उसको बढ़ाने के लिए स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर जाना होगा। उन्होंने कहा कि स्वतंत्र स्थापित करना होगा जो हमारी सभ्यता और संस्कृति अनुकूल हो। स्वांत रंजन रविवार को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विद्याधर भाग की ओर से स्वराज-75 स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर विषय पर आयोजित प्रबुद्धजन संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि अपने देश में फ्रेंच, डच, पुर्तगाली और अंग्रेज आए। इन्होंने अपनी ताकत के आधार पर भारत का आर्थिक शोषण किया। केवल आर्थिक शोषण ही नहीं, जो ईसाई देश थे, वहां की इसाई मिशनरियों ने इन ताकतों का सहयोग लेकर बड़े पैमाने पर हिन्दू समाज का मतांतरण किया। उन्होंने कहा कि तुर्क, पठान व मुगलों ने भी भारत को लूटने के लिए अनेक आक्रमण किए और तलवार के जोर पर धार्मिक स्थानों को लूटा, महिलाओं का शीलभंग किया और बड़े पैमाने पर मतांतरण किया। उन्होंने कहा कि मैकाले शिक्षा नीति के माध्यम से ऐसे लोगों को तैयार करना चाहते थे जो रक्त मांस से भारतीय हो लेकिन विचार व्यवहार से पश्चिमी हो। अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारतीय समाज शत प्रतिशत शिक्षित था। भारत में 5 लाख स्वायत्त विद्यालय थे, जिनमें बिना जातिभेद व लिंगभेद के अध्ययन, अध्यापन का कार्य होता था। लेकिन अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा तंत्र को नष्ट कर अपनी शिक्षा पद्धति हम पर थोपी। स्वाधीनता के बाद वामपंथियों व कम्युनिस्टों ने उस शिक्षा व्यवस्था को जानबूझकर बनाए रखा।

# सबसे बड़े भूमि दानवीर हैं भगवान परशुराम : तिवाड़ी

**जयपुर**। भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं राज्यसभा सांसद घनश्याम तिवाड़ी ने भगवान परशुराम को दुनिया का सबसे बड़ा भूमि दानवीर बताते हुए कहा कि कश्मीर हो चाहे केरल और गोवा जैसा सुंदर समुद्र तट उन्हीं की देन है। तिवाड़ी ने अरुणाचल प्रदेश में विकसित हो रहे देश के पांचवे तीर्थस्थल परशुराम कुण्ड में विप्र फाउंडेशन के योगदान एवं भूमिका की भी सराहना की तथा कहा कि परशुराम कुण्ड क्षेत्र पूरे देश को एक सूत्र में जोड़ने का बड़ा प्रकल्प सिद्ध होगा। इस तीर्थाटन के विकसित होने से पड़ोसी देश चीन भी घबराया हुआ है।

तिवाड़ी आज विप्र फाउंडेशन जोन 1 की प्रदेश कार्यकारिणी के शपथग्रहण समारोह में बोल रहे थे। इस अवसर पर विप्र फाउंडेशन की ओर से राज्यसभा सांसद चुने जाने पर तिवाड़ी, हरियाणा प्रदेश कांग्रेस के कार्यकारी प्रदेशाध्यक्ष जितेन्द्र भारद्वाज और परशुराम कुण्ड स्थल पर स्थापित होने वाली 51 फिट की भगवान परशुराम की प्रतिमा के लिए सर्वसमाज से योगदान लेने में अग्रणी भूमिका निभाने वाले परमेश्वर शर्मा को सम्मानित किया गया। भाजपा से राज्यसभा सांसद तिवाड़ी ने विप्रों की अहम भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारे धार्मिक स्थल जागृत होंगे तो देश में भी जागृति और ऊर्जा का नया संचार होगा। हरियाणा कांग्रेस के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष जितेन्द्र भारद्वाज ने संपूर्ण विप्र समाज को एक सूत्र में पिरोये जाने के लिए डाटा बैंक स्थापना की घोषणा करते हुए कहा कि यह नेककाज भी विप्र फाउंडेशन के बैनर तले होगा।

# प्रदेश में लगातार दूसरे दिन रविवार को भी छह सौ नए संक्रमित मिले

**-कार्यालय संवाददाता-**

**जयपुर**। प्रदेश में लगातार दूसरे दिन रविवार को भी 600 नए करोना संक्रमित मिले हैं। इनमें जयपुर और अलवर में सौ से अधिक मामले पाए गए हैं। वहीं इस बीच झालावाड़ में करोना से एक मरीज की मौत भी हो गई है।

प्रदेश में रविवार को 24 जिलों में 600 नए संक्रमित सामने आए हैं। इससे पहले शनिवार को भी इतनी ही संख्या में रोगी मिले थे। राज्य में आज 16 हजार 323 जांचे की गई। इनमें जयपुर में 2393 जांचे हुई। इधर राज्य में सबसे ज्यादा 176 जयपुर और 109 नए संक्रमित अलवर जिले में मिले हैं। इसके अलावा उदयपुर व नागौर में 38-38, जोधपुर में 37, चित्तौड़गढ़ में 34, अजमेर में 31, भरतपुर व दौसा में 25-25, धौलपुर में 16, कोटा में 13, डूंगरपुर में 11, भीलवाड़ा में 10, जैसलमेर व सिरोही में 7-7, झालावाड़ में 5, सीकर व बीकानेर में 4-4, बारां में 3, बूंदी व जालौर में 2-2 तथा बांसवाड़ा, बाड़मेर और हनुमानगढ़ में एक-एक नया संक्रमित मिला है।

# मुख्यमंत्री को ठेंगा दिखाकर चूरू में जलदाय विभाग ने 'पानी बहाओ अभियान' चलाया!

## रीको एरिया में आधा दर्जन से अधिक स्थानों पर पेयजल सप्लाई की पाइप लाइन टूटी

**चूरू,** (कासं)। चूरू के रीको एरिया में आधा दर्जन से अधिक स्थानों पर पेयजल सप्लाई की पाईप लाईन टूटी हुई है। यहां जलदाय विभाग की अनदेखी के कारण पेयजल व्यर्थ बहकर आमजन के लिए परेशानी का कारण बना हुआ है।

मिली जानकारी के अनुसार जिला मुख्यालय पर स्थित रीको औद्योगिक क्षेत्र की रोड़ नम्बर 5 पर तीन जगह पेयजल सप्लाई की पाईप लाईन टूट गई है। पेयजल सप्लाई की पाईप लाईन टूटने से भारी मात्रा में पेयजल व्यर्थ बह रहा है। रोड़ नम्बर 5 से बहता हुआ पानी सामने ही स्थित आपणी योजना के कार्यालय में जमा हो रहा है। इसके अलावा भालेरी रोड़ पर भी पानी एकत्रित हो गया है। इससे आमजन को परेशानी हो रही है। साथ ही प्रशासन की सतर्कता की भी पोल खुलकर सामने आ रही है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत कहते हैं कि पानी बचाओ, जबकि चूरू में जलदाय विभाग ने पानी बहाओ अभियान चला रहा है। इसी प्रकार रीको के पार्क नम्बर तीन के पास भी पेयजल सप्लाई की पाईप लाईन टूट गई है।

पेयजल सप्लाई की पाईप लाईन टूटने से भारी मात्रा में पेयजल व्यर्थ बह रहा है। रोड़ नम्बर 5 से बहता हुआ पानी सामने ही स्थित आपणी योजना के कार्यालय में जमा हो रहा है।

यहां भंवरलाल ने बताया कि रीको द्वारा यहां की समस्याओं की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। जलदाय विभाग को बार-बार अवगत करवाने के बाद भी समस्या का कोई समाधान नहीं हो रहा है। भंवरलाल ने जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों एवं विश्वकर्मा उद्योग संघ चूरू के पदाधिकारियों को भी आडे हाथ लिया। यहां विश्वकर्मा उद्योग संघ के अजीत भाऊवाला ने कहा कि रीको एरिया में जगह-जगह पेयजल सप्लाई की पाईप लाईन क्षतिग्रस्त हो गई है। इस कारण पेयजल व्यर्थ ही बह रहा है। भाऊवाला ने कहा कि जलदाय विभाग के अधिकारियों को अवगत करवा दिया है।

> ■ जलदाय विभाग को बार-बार अवगत करवाने के बाद भी समस्या का नहीं हो रहा कोई समाधान

उधर जलदाय विभाग के अधिकारियों के कानों पर जूं तक नहीं रेंग रही है। व्यर्थ बह रहे पेयजल से उन्हें कोई लेनादेना नहीं है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और कलैक्टर सिद्धार्थ सिहाग के निर्देश भाड़ में जाएं, उनकी तनख्वा तो पक ही रही है। काम करने की तो इनकी नीति ही नहीं है। अपनी रोटियां सेकने के लिए भाषणबाजी करने में सबसे आगे रहते हैं। दुर्भाग्यपूर्ण बात तो यह है कि कलैक्टर द्वारा भी इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। चर्चा है कि जलदाय विभाग वाले कामचोरों ने कलैक्टर से भी 'भायलाचारी' कर ली है। ऐसे में वे आमजन की समस्या का जल्दी से समाधान नहीं करेंगे। प्रशासन यहां निकम्मेपन की सभी हदें पार कर चुका है। कुल मिलाकर देखना यह है कि मुख्यमंत्री को ठेंगा दिखाकर चूरू में जलदाय विभाग पानी बहाओ अभियान कब तक चलाता है।

# गौशाला को लम्पी रोग की दवाइयां प्रदान की

देवकिशन स्मृति सेवा समिति की ओर से श्री कृष्ण पींजरापोल गौशाला व चिकित्सालय को दवाइयां और टीके प्रदान की गई।

**रतनगढ़,** (निसं)। देवकिशन स्मृति सेवा समिति ने क्षेत्र में लम्पी संक्रामक रोग से पीड़ित गौमाताओं के समुचित उपचार हेतु दवाईयां व टीके रविवार को श्री कृष्ण पींजरापोल गौशाला व चिकित्सालय को प्रदान किए गये।

समिति अध्यक्ष विश्वनाथ सोनी ने बताया कि लम्पी रोग का संक्रमण क्षेत्र के गौवंश में बड़ी तेजी से फैला है। इससे ठासित गौवंश के उचपार हेतु गौशाला स्टाफ द्वारा चलाए जा रहे अभियान को सहयोग करने के लिए रुपये 42000/- की दवाईयां व टिके प्रदान किए गये हैं। गौशाला समिति अध्यक्ष अशोक रांकावत ने अल्प सूचना पर दवाईयां प्रदान करने के लिए समिति का धन्यवाद किया। इस अवसर पर समिति के सीताराम जांगिड, नरोत्तम लाल सोनी, राधेश्याम पारीक, राकेश सोनी, अरूण कुमार शर्मा, भुवनेश कुमार इन्दौरिया, चतुर्भुज सैनी मौजूद थे।

# गौवंश में फैली लंपी स्कीन बीमारी के बचाव के लिए दवा छिड़काव शुरू

गौवंश में फैली लंपी स्कीन बीमारी के बचाव के लिए राजगढ़ पालिका द्वारा किराए पर मंगवाई गई मशीन से दवा छिडकाव की शुरूआत करती पालिका अध्यक्ष रजिया गहलोत व उपस्थित पार्षदगण।

**सादुलपुर,** (निसं)। समुचे प्रदेश में सहित राजगढ नगर पालिका क्षेत्र में गौवंश में फैली लंपी स्कीन बीमारी के बचाव के लिए नगर पालिका राजगढ द्वारा मंगवाई गई किराए पर मशीन से दवा छिडकाव कार्यक्रम का शुभारंभ रविवार को नगरपालिका अध्यक्ष रजिया गहलोत ने स्वयं ट्रेक्टर पर बैठकर दवा छिडकर कर करवाया। इसी दौरान छिडकाव के लिए 500 ग्राम लाल दवा, 750 ग्राम डिटोल व 5 किलोग्राम फिटकरी जो कि प्रशान्त मुरारका द्वारा नि:शुल्क उपलब्ध करवाई गई।

इस मौके पर चेयरमैन रजिया गहलोत, राजस्थान मदरसा बोर्ड के सदस्य लाल मोहम्मद भियाणी, सेवानिवृत एएसपी नियाज मोहम्मद, सहित पार्षद प्रतिनिधि भानीराम पूनियां, पार्षद गौरधन नाई, मोहम्मद रफीक, पार्षद हैदर अली, नदीम नारनौली, पार्षद लीलाधर बुन्देला, पार्षद प्रतिनिधि एडवोकेट ज्ञानप्रकाश सैनी, पार्षद हरद्वारीलाल मीणा, शंकर सिंह, पार्षद रसीद कुरेशी, मनोनित पार्षद हबीब व संजय बुरडक जिला अध्यक्ष सेवादल कांग्रेस सहित अन्य कांग्रेसी नेतागण तथा पार्षद गण उपस्थित थे। पालिका अध्यक्ष रजिया गहलोत नें बताया कि नगरपालिका के कर्मचारियों के द्वारा लगातार सम्पूर्ण शहर में छिडकाव का कार्य जारी रहेगा।

# भाजपाइयों ने आतिशबाजी कर मिठाई बांटी

**चूरू,** (कासं)। विधायक निवास पर राजस्थान के झुंझुनूं जिले के किठाना गांव व बंगाल के राज्यपाल जगदीप धनकड़ के भारत के उप राष्ट्रपति निर्वाचित होने पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने आतिशबाजी कर व एक दूसरे को मिठाई खिलाकर बधाई दी। इस मौके पर पूर्व जिला प्रमुख हरलाल सहारण ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक किसान के पुत्र जगदीप धनकड़ को देश के उप राष्ट्रपति पद पर बैठाकर शेखावाटी व राजस्थान का मान बढ़ाया है। सहारण ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री ने किसानों के हितों को देखते हुए एक किसान पुत्र को इस पद पर बैठाया है। भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष डॉ वासुदेव चावला, बसंत शर्मा, प्रधान दीपचंद राहड़, पंचायत समिति सदस्य विक्रम कोटवाद, मण्डल अध्यक्ष सुरेश सारस्वत व दीनदयाल सैना, सीताराम लुगरिया, दौलत तंवर, पदम् सिंह राठौड़, नरेंद्र काछवाल, मोहनलाल गढ़वाल, धर्मेन्द्र श्योराण, नारायण बेनीवाल, सुशील लाटा, राजेश माटोलिया, सुनील खटीक, चंद्रप्रकाश शर्मा, प्रकाश नायक, जुगलकिशोर पाण्डे, असलम, सुनील ढाका, कपिल रक्षक, आदिल खान, विनोद राठी, कैलाश शर्मा, ओम सिंग, आदिल खान, विद्याधर शर्मा, धर्मेन्द्र राक्सिया, गजानन्द गौड़, किशन किरोड़ीवाल आदि उपस्थित रहे।

# पूर्व मंत्री रिंणवा ने राजस्थानी फिल्म 'बावळती' के पोस्टर का विमोचन किया

**रतनगढ़,** (निसं)। पूर्व मंत्री राजकुमार रिणवा ने राजस्थानी फिल्म बावळती के पोस्टर का विमोचन किया है। यह फिल्म 26 अगस्त से सुजानगढ के मूनलाइट सिनेमा हॉल में रिलीज होगी। इस मौके पर अभिनेत्री सरोज बरोड, राजकुमार नायक व हीरालाल नायक उपस्थित थे। इस फिल्म ने पूर्व मंत्री राजकुमार रिणवा ने भी स्थिति कलाकार के रूप में भूमिका अदा की है। चन्द्र फिल्मस प्रोडक्शन के बैनर तले बनी इस फिल्म को केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड से यू प्रमाण पत्र प्राप्त है।

फिल्म के निर्माता निर्देशक राजेन्द्र सिंह शेखावत ने बताया कि फिल्म बावळती को पूरा परिवार एक साथ बैठकर देख सकता है। फिल्म में गीतिका

> ■ फिल्म के निर्माता निर्देशक राजेन्द्र सिंह शेखावत ने बताया कि फिल्म को पूरा परिवार एक साथ बैठकर देख सकता है

फिल्म के पोस्टर का विमोचन करते पूर्व मंत्री राजकुमार रिणवा।

डीगवाल, राज कुमार नायक, चन्द्र कांता चंद्रेश, पवन तोदी, सरोज बरोड़, हरि हरनी, सुशील जोशी, बीरबल नोखवाल, आरती बरोड़, बाबूलाल तुनगरिया, वासुदेव सिहाग, आशुतोष उपाध्याय, मोहम्मद जावेद, बाल कलाकार अनुष्का पूनिया ने अहम भूमिका निभाई है। अभिनेता अफजल हसन गौरी, पूर्व मंत्री राजकुमार रिणवा सहित कई जनप्रतिनिधियों, खिलाड़ियों, शिक्षकों आदि ने भी अथिति कलाकार के रूप में अभिनय किया है। फिल्म के गीत दिग्विजय सिंह गोगटिया व राजेन्द्र सिंह ने लिखे हैं। संगीत राजेन्द्र शरणोत और शंकर माहेश्वरी ने दिया है। गीतों को आवाज रघुवीर सिंह राठौड़ रूपलीसर, सोनू माहेश्वरी सुजानगढ और राधेश्याम दर्जी घांघू ने दी है। डीओपी और संपादक पंकज सोनी हैं। फिल्म में बेटी बचाने, उन्हें पढाने और खेलकूद में आगे बढाने और समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का संदेश दिया गया है। चन्द्र फिल्मस प्रोडक्शन की यह दूसरी फिल्म है जो सिनेमाघरों में प्रदर्शित होगी। इससे पहले वर्ष 2017 में फिल्म आपां नै तो बेटी बचानी है प्रदर्शित हो चुकी है।

# महिला कृषक दल उत्तर प्रदेश रवाना

**सीकर,** (निसं)। राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) द्वारा प्रायोजित सीकर जिले की 25 महिला किसानों के तीन दिवसीय अन्तर राज्य भ्रमण दल को सहायक महाप्रबंधक नाबार्ड एवं डीडीएम सीकर एम एल मीना ने हरी झण्डी दिखाकर केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान मखदूम, मथुरा, उत्तर प्रदेश के लिए रवाना किया। ग्रामीण एवं सामाजिक विकास संस्था के कार्यक्रम संयोजक जगदीश गुर्जर ने बताया कि नाबार्ड द्वारा महिला कृषक भ्रमण दल को भेजने का एक मात्र उद्देश्य बकरी पालन से संबंधित नवीनतम कृषि प्रणाली के माध्यम से किसानों को आजीविका सुरक्षा, गरीबी उन्मूलन और छोटे धारकों के लिए रोजगार सृजन के स्त्रोत के रूप में बकरी पालन को अपनाने एवं बेहतर रिटर्न प्राप्त करने के उद्देश्य से नई तकनीक सीखने और अपनाने में सक्षम बनाना है ताकि उनकी कृषि आय में महत्वपूर्ण बढ़ोतरी हो सकें। सहायक महाप्रबंधक एम एल मीना ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मखदूम, मथुरा उत्तर प्रदेश स्थित केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, जो पूरे देश का सबसे सर्वश्रेष्ठ बकरी अनुसंधान केन्द्र हैं, में सीकर जिले के उक्त महिला कृषक दल को संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा तीन दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान दिया जायेगा एवं साथ ही, संस्थानों में उपलब्ध विभिन्न तकनीकों से भी रूबरू कराया जायेगा।

# नेता और अफसर नहीं, किसान सबसे बड़ा आदमी: एन. रमेश

**चूरू,** (कासं)। आजादी का अमृत महोत्सव अंतर्गत देपालसर रोड़ स्थित आपणी पाठशाला में शनिवार शाम हुए कार्यक्रम में कन्नड़ भाषा के प्रख्यात कवि, चिंतक और सामाजिक कार्यकर्ता नागाथिहाली रमेश को भारतीय वीरता राष्ट्रीय एकता पुरस्कार प्रदान किया गया। कच्ची बस्ती की जीवणी देवी, राजस्थानी-हिंदी के लेखक कुमार अजय एवं आपणी पाठशाला संस्थापक धर्मवीर जाखड़ ने रमेश को शॉल, स्मृति चिन्ह, फल एवं पौधा भेंट कर पुरस्कृत किया।

इस मौके पर रमेश ने कहा कि असली साहित्य वही है जो समाज के दलित, वंचित एवं उपेक्षित तबके के यथार्थ को सामने लाकर उनके हक में आवाज उठाता है। धर्मवीर जाखड़ ने समाज के उपेक्षित तबके के उत्थान को लेकर जो कार्य शुरू किया है, वह अपने आप में अनूठा है। इसलिए यहां आकर पुरस्कृत होकर बहुत अच्छा लग रहा है। उन्होंने कहा कि चाहे कोई कितना भी बड़ा आदमी बन जाए, किसान और मजदूर से ऊंचा नहीं हो सकता है क्योंकि वे कड़ी मेहनत कर देश का निर्माण करते हैं, अन्न उपजाते हैं। कोई भी नेता या अफसर नहीं अपितु किसान सबसे बड़ा आदमी होता है, वह भगवान के बराबर है। उन्होंने कहा कि देश में आजादी का अमृत महोत्सव चल रहा है लेकिन वास्तविक अमृत महोत्सव तब होगा, जब गरीबों की जिंदगी बेहतर होगी।

> ■ आपणी पाठशाला में हुए कार्यक्रम में कन्नड़ भाषा के प्रख्यात कवि, चिंतक नागाथिहाली रमेश को भारतीय वीरता राष्ट्रीय एकता पुरस्कार

# घर-घर तिरंगा अभियान को लेकर सभा आज

**रतनगढ़,** (निसं)। लोकसेवा ज्ञान मंदिर ट्रस्ट रतनगढ के द्वारा सोमवार को दोपहर 2 बजे गनेडिया मंदिर मे सभा का आयोजन किया जायेगा। साधारण सभा का मुख्य उद्देश्य ट्रस्ट के आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करना है जिसमें 15 अगस्त धूमधाम से मनाने, अमृत महोत्सव के तहत घर-घर तिरंगा अभियान के तहत तिरंगा वितरण कार्यक्रम एवं रक्षाबंधन के अवसर पर सुकन्या खाता खुलवाने के बारे में विचार विमर्श किया जाएगा। साथ ही ट्रस्ट की टीम के द्वारा रतनगढ में हर घर तिरंगा अभियान चलाया जा रहा है। ट्रस्ट की टीम ने रविवार को पोस्ट ऑफिस में पहुंचकर डाक घर अधिकारी ओम प्रकाश मीणा द्वारा 51 तिरंगे उपलब्ध करवाए गए। ट्रस्ट के कार्यकर्ताओ के माध्यम से प्रत्येक घर में 25 रूपये शुल्क लेकर वितरण किए जाएंगे। इस दौरान रतनगढ प्रभारी राजीव, पवन सोलंकी, संतोष आदि मौजूद रहे।

# विहिप बजरंग दल कार्यकर्ता की सुरक्षा में लगाये पीएसओ पर गंभीर आरोप

**सादुलपुर,** (निसं)। विहिप बजरंग दल कार्यकर्ता प्रवीण सरदारपुरा ने उनकी सुरक्षा के लिए लगाये गये पीएसओ पर गंभीर आरोप लगाते हुए पुलिस महानिदेशक जयपुर, आईजी बीकानेर, एसपी चूरू एवं एडिशनल एसपी राजगढ को परिवाद पेश कर आरोपी पर कार्यवाही की मांग की है।

प्रवीण कुमार जाट निवासी सरदारपुरा ने सौंपे परिवाद में आरोप लगाया है कि वह बजरंग दल का सक्रिय कार्यकर्ता है एवं उदयपुर में हुए कन्हैयालाल हत्याकांड के विरोध के बाद विदेशी नम्बर से फोन पर जान से मरवाने की धमकी दी गई थी। जिसका मुकदमा हमीरवास पुलिस थाने में दर्ज होने पर उसे एसपी चूरू की अनुशंषा पर 2 जुलाई को रात्रि में सुरक्षा हेतु एक पीएसओ मुहैया करवाया गया था। उनका कहना है कि 5 अगस्त को उसकी सुरक्षा में तैनात पीएसओ को बदला गया और प्रवीन कुमार सिपाही को अंगरक्षक लगाया गया था। आरोप है कि 5 अगस्त को दिन में 3 बजे पिलानी रोड पर रडवा गाँव के पास हाइवे रोड के किनारे स्थापित पौधाशाला में वह पर्यावरण मित्रों को पौधे देने के लिए आया था, तभी उसके आरोपी अंगरक्षक प्रवीन कुमार ने किसी काम के लिये उससे गाडी मांगी। आरोप है पीएओ के नहीं आया उनको फोन किया तब पीएसओ ने उसे किसी सत्यवान सिपाही के साथ होटल में इन्जॉय करने की बात बोली एवं गाली गलौच करने लगा तथा आरोप है कि बार-बार फोन करने पर पीएसओ 4 बजकर 36 मिनट पर उसके पास शराब के नशे में पहुंचा तथा हमीरवास थाना का सिपाही सत्यवान भी नशे की हालत में था। आरोप है कि विहिप कार्यकर्ता प्रवीण के गाडी की ड्राइविंग सीट पर बैठने के बाद उक्त आरोपी पीएसओ को चलने के लिए कहा तो पीएसओ ने उसे माँ बहिन की गाली निकालनी शुरू कर दी एवं सर्विस पिस्टल कवर से निकाल कर उसकी टांगों के बीच में गिरा दी और धमकी देने लगा। इस पर उसने डीएसपी राजगढ को दूरभाष के माध्यम से पूरे घटनाक्रम के बारे में बताया। परिवाद में बताया है कि उसे जान से मारने की धमकी के बाद सुरक्षा मुहैया करवाई गई थी एवं आरोपी पीएसओ के द्वारा किए गए दुर्व्यवहार के कारण में वह बहुत भयभीत है और उसे आशंका है कहीं उक्त सिपाही उसके खिलाफ झूठा मुकदमा दर्ज करवा सकता है। पीएसओ प्रवीण व सिपाही सत्यवान का कहना है कि उसके ऊपर लगाये जा रहे आरोप मनगढ़ंत, झूठे व बेबुनियाद हैं। एसएचओ हमीरवास राधेश्याम का कहना है कि प्रवीण सरदारपुरा की शिकायत पर आरोपी पीएसओ को हटा दिया गया है तथा प्रवीण पीएसओ की जगह आनंद नामक पीएसओ को प्रवीण सरदारपुरा की सुरक्षा के लिए अंगरक्षक लगाया गया है।

# कनेक्टिविटी से वंचित गांव अब 4जी नेटवर्क से जुड़ेंगे : सांसद कस्वां

**सादुलपुर,** (निसं)। चूरू लोकसभा सांसद राहुल कस्वां ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सभी के लिए डिजिटल समावेशन और कनेक्टिविटी के लक्ष्य के साथ केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 27 जुलाई को देशभर के अछूते गांवों में 4जी मोबाइल सेवाओं की उपलब्धता के लिए परियोजना को मंजूरी दी हैं। वहीं इसी योजना के अनुरूप पहले चरण में चूरू संसदीय क्षेत्र के 34 गाँव 4जी नेटवर्क से जुडेंगे।

सांसद कस्वां ने बताया कि पहले चरण में चूरू संसदीय क्षेत्र के रावली ढाणी व हरीनगर (बीदासर), बिलासी (सुजानगढ), बीका की ढाणी (रतनगढ), मठोरी (चूरू), समरपुरा (राजगढ) सरदारशहर के पनपालिया, डडवानिया, ढाणी राईका, तोलासर, डालूसर, भादरा के गढडा, पालडी, श्योरा टाडा, जिगासरी छोटी, मोठसरा, मुन्दडिया बडा, बोझला, भांगवा, कुंजी, घोटडा पट्टा, 4 जेसएल, 8 डीपीएन, 14 एएमएस, नोहर के चक्क मंडराना, शिवपुरा (1आरपीएम), बास नाथोवाला तथा रावतसर के ढाणी माईला, कुलचासर, स्वरूपदेसर, गुलाबगढ, कालासर, धीरदेसर, मानकेरिया आदि गाँवों को 4जी कनेक्टिविटी से जोडा जायेगा।

वहीं सांसद कस्वा ने संसदीय क्षेत्र के इन गाँवों को इस सौगात के लिए प्रधानमंत्री मोदी और केंद्रीय दूरसंचार मंत्री अश्विनी वैष्णव का हार्दिक आभार जताया है। सांसद कस्वा ने बताया कि केन्द्र सरकार ने देश में विशेष योजना के तहत 4जी सेवाओं में विस्तार का लक्ष्य रखा है, इस योजना की कुल लागत 26,3316 करोड रूपये और इसमें दूरस्थ क्षेत्रों के वंचित गाँवों में 4 जी मोबाइल सेवाएं प्रदान की जायेंगी।

# भामाशाह लुहारिवाला का स्वागत किया

**सादुलपुर,** (निसं)। रविवार को अग्रसेन भवन में राधेश्याम डोकवेवाला की अध्यक्षता में भामाशाह मनोज कुमार पुत्र स्व. नन्दकिशोर लुहारिवाला का भव्य स्वागत किया गया। ज्ञातव्य है कि लुहारिवाला ने अपने पिता की समृति में अग्रसेन भवन को एक लाख रूपये, पिंजरापोल गौशाला में गौवंश को तूडी हेतु पाँच लाख रूपये, गीता देवी स्कूल में सोलर प्लांट बाबत साढे पाँच लाख की राशि प्रदान की। साथ ही लोको हनुमान मन्दिर में शैड निर्माण की स्वीकृति प्रदान की है। इस अवसर पर चाननमल डोकवेवाला, अमर चन्द कंदोई, चेतन चंगोईवाला, अनिल कंदोई, नंद किशोर मितल, राज कुमार डोकवेवाला, सत्यनारायण कंदोई, नटवर लोहारिवाला, बाल किशन सरावगी, वासुदेव लुहारिवाला, अशोक तोला व रामावतार बैरासरिया आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर राधेश्याम डोकवेवाला ने सम्बोधित करते हुए कहा कि सभी मिलकर तिरंगा यात्रा निकाले और 'हर घर पर तिरंगा' उपलब्ध करवाए। वहीं सभी ने हर्ष व्यक्त करते हुए सहयोग करने का आश्वासन दिया।

# जगदीप धनखड़ के उपराष्ट्रपति बनने पर सांडवा गांव में जश्न का माहौल

**बीदासर,** (निसं)। गौरवमयी राजस्थान भूमि के गांव किठाना में जन्मे पश्चिम बंगाल के पूर्व राज्यपाल एवं सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता जगदीप धनखड के देश के सर्वोच्च दूसरे नागरिक उपराष्ट्रपति चुने जाने पर पूरे राष्ट्र, राजस्थान एवं संपूर्ण शेखावाटी क्षेत्र में खुशी की लहर दौड़ गई है।

इसी मौके पर जसवीर मेमोरियल शिक्षण संस्थान सांडवा के सचिव सतवीर धनखड ने अपने परिवार, संपूर्ण शिक्षक स्टाफ एवं उपस्थित ग्रामीणों के साथ शानदार आतिशबाजी कर अपनी खुशी का इजहार किया। इसी के साथ उन्होंने कहा कि देश के उपराष्ट्रपति पद पर जगदीप धनखड का चुना जाना एक स्वस्थ राजनीति का परिचय है। उन्होंने बताया कि यह देश किसानों का देश है और एक किसान के बेटे का उपराष्ट्रपति बनना एक किसान का सम्मान तो है ही साथ ही आमजन की राजनीति में भागीदारी को भी दर्शाता है। इस मौके पर सतवीर धनखड ने कॉलेज प्रांगण में उपस्थित सभी शिक्षक गण, उपस्थित ग्रामीणों एवं शेखावाटी क्षेत्र के साथ-साथ संपूर्ण देशवासियों को तहे दिल से बधाई देते हुए इस मौके पर कॉलेज प्रांगण में उपस्थित सभी प्रिय जनों का मीठा मुंह करवा कर बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

ग्राम साण्डवा में आतिशबाज़ी कर जश्न मनाते लोग।

गौरतलब है जगदीप धनखड जसवीर मेमोरियल शिक्षण संस्थान के सचिव सतवीर धनखड के चाचा लगते हैं। जरूरत पडने पर वोह इस इंस्टीट्यूट में आकर अपना आशीर्वाद देते रहे हैं। इस मौके पर उपस्थित जनों में सतवीर धनखड एवं उनके परिवार के सदस्य विजय लता धनखड, डॉ. धारणा धनखड, दीपक धनखड, कुलदीप कटेवा, पवन कुमार नाई, सत्यवीर रांगेय, डॉ. पवन कुमार, बी एल सारण, मोहम्मद नदीम, राजीव यादव, ओमप्रकाश तिवारी, सतपाल घोड़ेला, मनोज गुप्ता, महेंद्र शर्मा, मोहम्मद रफीक खान, संदीप पारीक, पवन सोनी, सुरेश कुमार, विक्रम सिंह, भोलदास, कोजाराम आदि जन उपस्थित रहे।

# डीजीपी लाठर ने बालाजी के धोक लगाई

डीजीपी एम.एल. लाठर के सालासर आगमन पर उनका स्वागत करते हनुमान सेवा समिति अध्यक्ष व अन्य।

**सुजानगढ़,** (निसं)। पुलिस महानिदेशक मोहनलाल लाठर ने सपत्निक सालासर बालाजी के धोक लगाई। डीजीपी एम.एल. लाठर के सालासर आगमन पर वृताधिकारी रामप्रताप विश्नोई ने उनकी अगवानी की तथा हनुमान सेवा समिति अध्यक्ष यशोदानन्दन पुजारी, मांगीलाल पुजारी, कमल पुजारी, मनोहर पुजारी ने शॉल ओढा कर एवं बालाजी की तस्वीर भेंट कर उनका स्वागत व सम्मान किया।

मैं उस चीज को कभी नहीं भुला पाऊंगा जो कोच निकोलई स्नेसारेव ने मेरे लिये किया। मेरे जीवन में कई कोच आये, कई गये लेकिन उनका मेरे करियर पर प्रभाव पूरी जिंदगी रहेगा। उन्होंने मेरे सोचने का तरीका बदला। - **अविनाश साबले**

**भारतीय एथलीट, अपने दिवंगत कोच निकोलई स्नेसारेव के बारे में।**

# खेल जगत

**आज का खिलाड़ी**

## विनेश फोगाट

**तोक्यो** ओलंपिक में खराब प्रदर्शन के बाद करियर के सबसे बुरे दौर से गुजरने वाली भारतीय पहलवान विनेश फोगाट ने राष्ट्रमंडल खेलों में अपना दबदबा कायम करते हुए स्वर्ण पदक के साथ शानदार वापसी की। विनेश के लिए पिछले 12 महीने काफी तनाव भरे रहे लेकिन परिवार के साथ मिलने और अभ्यास करने के तरीके में बदलाव ने उनके करियर को एक बार फिर से सही राह दी। तोक्यो ओलंपिक में शीर्ष वरीयता प्राप्त खिलाड़ी के रूप में पहुंची विनेश पहले ही दौर में हारकर बाहर हो गयी थी। इसके बाद चोट और कुश्ती महासंघ के साथ तकरार ने उन्हें मानसिक रूप से काफी नीचे धकेल दिया।

**क्या आप जानते हैं ?...** प्रथम श्रेणी क्रिकेट में सर्वाधिक व्यक्तिगत स्कोर का विश्व रिकॉर्ड ब्रायन लारा के नाम है। लारा ने 1994 में वारविकशायर की तरफ से डरबन के खिलाफ 501 रन की नाबाद पारी खेली।

## भारत ने विंडीज पर बनायी अपराजेय बढ़त

लॉडरहिल, 7 अगस्त। भारत ने अपने सभी बल्लेबाजों के महत्वपूर्ण योगदान और गेंदबाजों के सधे हुए प्रदर्शन से वेस्ट इंडीज को चौथे टी20 मैच में शनिवार को एकतरफा अंदाज में 59 रनों से हराकर पांच मैचों की सीरीज में 3-1 की अपराजेय बढ़त बना ली। भारत ने 20 ओवर में पांच विकेट पर 191 रन का मजबूत स्कोर बनाने के बाद वेस्ट इंडीज को 19.1 ओवर में 132 पर रोक दिया। भारत की तरफ से आवेश खान, अक्षर पटेल और रवि बिश्नोई ने दो-दो विकेट लिए जबकि अर्शदीप सिंह 12 रन पर तीन विकेट लेकर सबसे सफल रहे। विंडीज की तरफ से कप्तान निकोलस पूरन और रोवमन पॉवेल ने 24-24 रन बनाये। इससे पहले वेस्ट इंडीज ने टॉस जीतकर पहले फील्डिंग करने का फैसला किया। भारत ने तेज शुरुआत करते हुए 4.4 ओवर में ही 53 रन ठोक डाले। कप्तान रोहित शर्मा ने मात्र 16 गेंदों पर दो चौकों और तीन छक्कों की मदद से 33 रन कीआतिशी पारी खेली। सूर्यकुमार यादव ने एक चौके और दो छक्कों की मदद से 24 रन बनाये। दीपक हुड्डा ने 21 और ऋषभ पंत ने 31 गेंदों में छह चौकों के सहारे 44 रन, संजू सैमसन ने 23 गेंदों में नाबाद 30 और अक्षर पटेल ने आठ गेंदों में दो छक्कों के सहारे नाबाद 20 रन बनाये। केवल दिनेश कार्तिक छह रन बनाकर आउट हुए। वेस्ट इंडीज की तरफ से ओबेद मकाय और अलजारी जोसफ ने दो-दो विकेट लिए।

## आनंद बने फिडे उपाध्यक्ष, ड्वोर्कोविच अध्यक्ष

चेन्नई, 7 अगस्त। रूस के आर्केडी ड्वोर्कोविच रविवार को शतरंज ओलंपियाड के दौरान ममल्लपुरम में हुए चुनावों में पुन: अंतरराष्ट्रीय शतरंज महासंघ (फिडे) के अध्यक्ष चुने गये, जबकि भारत के ग्रैंडमास्टर विश्वनाथन आनंद को उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया। फिडे ने ट्विटर पर इसकी जानकारी देते हुए कहा, "आर्केडी ड्वोर्कोविच को 16 के मुकाबले 157 मतों के साथ अंतरराष्ट्रीय शतरंज महासंघ के अध्यक्ष के रूप में दूसरे कार्यकाल के लिए फिर से चुना गया। विश्वनाथन आनंद नए फिडे उपाध्यक्ष हैं।" आनंद से पहले फ्रांस के ग्रैंडमास्टर बकर कोएटली फिडे उपाध्यक्ष थे।

## वी. प्रणव भारत के 75वें ग्रैंडमास्टर बने

चेन्नई, 7 अगस्त। शतरंज खिलाड़ी वी प्रणव रोमानिया में एक टूर्नामेंट जीतकर रविवार को भारत के 75वें ग्रैंडमास्टर बन गए। चेन्नई के 15 वर्ष के प्रणव ने रोमानिया के बाइया मारे में लिम्पेडिया ओपन जीतकर अपना तीसरा और आखिरी ग्रैंडमास्टर नॉर्म हासिल कर लिया। उन्होंने नौ दौर में सात अंक लेकर ग्रैंडमास्टर नॉर्म हासिल किया। उन्होंने कहा ," यह शानदार अहसास है। इससे मेरा आत्मविश्वास बढेगा और आगे अच्छा प्रदर्शन कर सकूंगा।" प्रणव तमिलनाडु के 27वें ग्रैंडमास्टर हैं। उनसे पहले विश्वनाथन आनंद, डी गुकेश और आर प्रज्ञानानंदा भी इसी राज्य से ग्रैंडमास्टर बने हैं।

## स्टॉपवॉच मामले में हॉकी इंडिया ने एफआईएच को लिखा, नियम में बदलाव की मांग

नयी दिल्ली, 7 अगस्त। राष्ट्रमंडल खेलों में 'स्टॉपवॉच विवाद' से खफा हॉकी इंडिया ने अंतरराष्ट्रीय हॉकी महासंघ को पत्र लिखकर नियमों में बदलाव करने और दोषी अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की है। आस्ट्रेलिया के खिलाफ राष्ट्रमंडल खेलों के सेमीफाइनल मुकाबले के दौरान शूटआउट में तकनीकी अधिकारियों ने भारी भूल की और भारतीय गोलकीपर सविता ने आस्ट्रेलिया का पहला शॉट बचा लिया था लेकिन घड़ी चालू नहीं होने का हवाला देकर आस्ट्रेलिया को वह शॉट फिर से दिया गया जिस पर गोल हो गया। एफआईएच ने इस मामले में तुरंत माफी मांगकर समीक्षा का आदेश दिया था। एफआईएच सीईओ थियरी वील को लिखे पत्र में हॉकी इंडिया की मुख्य कार्यकारी एलेना नॉर्मन ने कहा ," इससे पहले भी चैम्पियंस ट्रॉफी 2016, जूनियर महिला विश्व कप 2021 , तोक्यो ओलंपिक 2022 और अब राष्ट्रमंडल खेलों में पेनल्टी शूटआउट इसे पहले इस तरह की गलतियों से भारत को खामियाजा भुगतना पड़ा है।"

## सार्थक और रहीश ने जीत हासिल की

चेन्नई, 7 अगस्त। 2022 एमआरएफ एमएमएससी एफएमएससीआई इंडियन नेशनल मोटरसाइकल रेसिंग चैम्पियनशिप के तीसरे राउण्ड के दूसरे दिन के समापन के साथ 20 नेक्स्ट-जेन मिलेनियल राइडरों ने मैदान पर पावर पैक्ड परफोर्मेन्स दिया। आईडेमिट्सु होण्डा इंडिया टैलेंट कप एनएसएफ250आर की आज की रेस में पुणे के सार्थक चवन ने 22 सैकण्ड की ज़बरदस्त बढ़त के साथ एक बार फिर से जीत हासिल कर ली। ट्रैक पर अपना जादू दर्शाते हुए मुंबई के 14 वर्षीय रहीश खत्री ने अपना प्रभुत्व बनाए रखा और आईडमिट्सु होण्डा इंडिया टैलेंट कप सीबीआर150आर में जीत हासिल कर ली। तीसरे राउण्ड के अंत में सार्थक और रहीश दोनों ने एनएसएफ250आर और सीबीआर150आर कैटेगरीज़ में चैम्पियनशिप के लीडर्स के रूप में अपना प्रभुत्व बनाए रखा। तीसरे राउण्ड के बारे में बात करते हुए प्रभु नागराज- ऑपरेटिंग ऑफिसर, ब्राण्ड एण्ड कम्युनिकेशन, होण्डा मोटरसाइकल एण्ड स्कूटर इंडिया ने कहा, "हमारे युवा राइडरों को इतने जोश और उत्साह के साथ मुकाबला करते हुए देख हम बेहद खुश हैं।

# मुक्केबाजी में निखत, अमित और नीतू ने जीते स्वर्ण

बर्मिंघम, 7 अगस्त। विश्व चैंपियन भारतीय मुक्केबाज़ निखत ज़रीन, अमित पंघल और नीतू घंघस ने राष्ट्रमंडल खेल 2022 में भारतीय मुक्केबाज़ी का परचम लहराते हुए अपने-अपने फाइनल जीतकर स्वर्ण हासिल किये।

कुछ हफ्ते पहले विश्व चैंपियन बनीं निखत ने महिला 50 किग्रा मैच में बेलफास्ट की कार्ली मेकनॉल को मात दी। निखत ने मैच की शुरुआत से ही कार्ली पर मुक्कों की बरसात शुरू कर दी और कमेंटेटर के शब्दों में बेलफास्ट की मुक्केबाज़ को महत्वपूर्ण सबक सिखाया। तीन राउंड के बाउट में कभी भी नहीं लगा कि कार्ली नियंत्रण में हैं, और अंतत: निखत ने 5-0 के एकमत फैसले से स्वर्ण जीता।

अमित पंघल ने पुरुष 51 किग्रा फाइनल में इंग्लैंड के कियेरेन मैकडॉनल्ड को मात देकर सोने का तमगा हासिल किया। गोल्डकोस्ट 2018 खेलों के सिल्वर मेडलिस्ट अमित ने मैच की शुरुआत से ही कियेरेन पर मुक्कों की बारिश कर दी और पहले राउंड में ही अपने विपक्षी को कई चोटें पहुंचायीं। दूसरे राउंड में अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए अमित ने 4-0 के एकतरफा फैसले से स्वर्ण हासिल किया।

दूसरी ओर, नीतू घंघस ने महिला 48 किग्रा फाइनल में मेज़बान इंग्लैंड की मुक्केबाज़ डेमी जेड को मात देकर स्वर्ण जीता। दो बार की विश्व यूथ चैंपियन नीतू ने अपनी विपक्षी को 4-0 के एकतरफा फैसले से मात दी।

नीतू ने जीत के बाद कहा, "मैं स्वर्ण पदक जीतने के बाद बेहद खुश हूं। मैं यह पदक अपने देशवासियों के नाम करना चाहती हूं। मैं भारत सरकार, भारतीय खेल प्राधिकरण और भारतीय मुक्केबाज़ी महासंघ के समर्थन के लिये उनकी शुक्रगुज़ार हूं। मैं अपने कोचों, और अपने परिवार की भी शुक्रगुज़ार हूं क्योंकि मैं उनके समर्थन के बिना यह स्वर्ण नहीं जीत सकती थी। एनसीओई रोहतक का भी धन्यवाद जहां मैंने कई सालों तक प्रशिक्षण लिया।"

इस बीच अनुभवी मुक्केबाज मोहम्मद हुसामुद्दीन ने पुरुष 57 किग्रा फेदरवेट सेमीफाइनल में हारने के बाद कांस्य पदक प्राप्त किया। घाना के जोसेफ कोमी ने शनिवार को हुए बाउट में हुसामुद्दीन को 4-1 के फैसले से मात दी।

उल्लेखनीय है कि भारत बर्मिंघम 2022 में अब तक तीन स्वर्ण और तीन कांस्य सहित छह मुक्केबाज़ी पदक जीत चुका है। अब भारत के सागर पुरुष 91 किग्रा के फाइनल में अपनी दावेदारी पेश करेंगे।

# भारत ने तिहरी कूद में जीते स्वर्ण, रजत

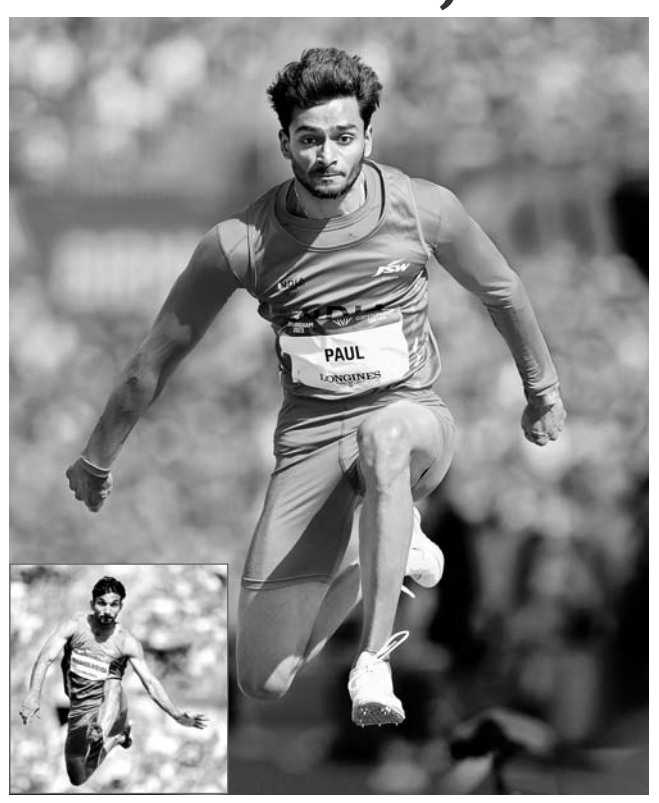

बर्मिंघम, 7 अगस्त। भारत के एल्डोस पॉल और अब्दुल्ला अबूबकर ने राष्ट्रमंडल खेल 2022 में एथलेटिक्स में भारत की विजय पताका लहराते हुए तिहरी कूद में स्वर्ण व रजत पदक जीता। एल्डोस ने 17.03 मीटर के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ स्वर्ण पदक अपने नाम किया, जबकि अब्दुल्लाह ने उनसे सिर्फ 0.01 मीटर पीछे रहते हुए 17.02 के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ रजत पदक अपने नाम किया। एल्डोस और अब्दुल्ला के हमवतन प्रवीण चित्रावेल कांस्य पदक से तीन सेंटीमीटर के अंतर से चूक गये और 16.89 मीटर के प्रयास के साथ चौथे स्थान पर रहे।

## पिता के अवैतनिक अवकाश ने मुक्केबाजी में नीतू गंघास को बनाया चैम्पियन

बर्मिंघम, 7 अगस्त। युवा भारतीय मुक्केबाज नीतू गंघास ने राष्ट्रमंडल खेलों में अपने पहले स्वर्ण पदक को पिता जय भगवान को समर्पित किया, जिन्होंने अपनी बेटी के सपने को पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

हरियाणा सचिवालय के कर्मचारी जय भगवान दो बार की विश्व युवा चैंपियन नीतू को प्रशिक्षित करने के लिए पिछले तीन वर्षों से अवैतनिक अवकाश पर है। पिता की बलिदान रविवार को रंग लाया जबनीतू ने महिलाओं के मिनिममवेट (45-48 किग्रा) वर्ग के फाइनल में विश्व चैम्पियनशिप 2019 की कांस्य पदक विजेता रेन्जटान डेमी जेड को सर्वसम्मत फैसले में 5-0 से पराजित कर जीत दर्ज की। गले में स्वर्ण पदक पहने नीतू ने कहा, तिरंगे को ऊपर जाते हुए देखना सबसे बड़ा अहसास था, मेरी एक पुरानी इच्छा आज पूरी हो गई। मैं सभी के आशीर्वाद के लिए आभारी हूं। यह पदक देशवासियों और मेरे पिता (जय भगवान) के लिए है।"

नीतू ने कहा, " कोई कसर नहीं छोड़ा उन्होंने मेरे लिये। वह कई मुश्किल परिस्थितियों से गुजरे लेकिन हमेशा सुनिश्चित किया कि मुझे सर्वश्रेष्ठ मिले। मैं उनके समर्थन के बिना यहाँ नहीं होती।" हरियाणा की 21 साल की यह मुक्केबाज रिंग के अंदर किसी से कम नहीं है लेकिन जब वह खेल क्षेत्र से बाहर निकलती है तो काफी शर्मीले स्वभाव की है। शर्मीलापन इतना कि उनकी बातों को सुनने के लिए ध्यान लगाना पड़ता है। भारतीय टीम के कोच भास्कर चंद्र भट्ट नीतू को 'गब्बर शेरनी' कह कर बुलाते है।

उन्होंने कहा, "वह हमेशा से ऐसी (शर्मीले स्वभाव की) ही रही है। शिविर में और शिविर के बाहर ही आप मुश्किल ही उसकी आवाज सुन पाते है।

रिंग के अंदर वह 'गब्बर शेरनी' की तरह है।" अपनी 'आदर्श' और छह बार की विश्व चैंपियन मैरीकॉम के स्थान पर राष्ट्रमंडल खेलों के लिए चुनी गयी नीतू यहां अजेय रहीं। नीतू ने कहा, "मैरीकॉम मैम की जगह एक अलग ही है। उन्होंने वैश्विक स्तर पर भारतीय मुक्केबाजी को एक पहचान दी है। मैं उनके सामने कहीं नहीं हूं।'

## संदीप कुमा ने पैदल चाल में जीता कांस्य

बर्मिंघम, 7 अगस्त। भारत के अनुभवी रेसवॉक एथलीट संदीप कुमार पूनिया ने राष्ट्रमंडल खेल 2022 में इतिहास रचते हुए रविवार को पुरुष 10 किमी पैदल चाल में कांस्य पदक जीता। संदीप ने 38:49.21 के निजी सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के साथ 10,000 मीटर स्पर्धा में तीसरा स्थान हासिल किया। भारतीय एथलीट चार किमी तक प्रथम स्थान पर चल रहे थे।आगे चलकर उनकी रफ्तार में कमी आयी लेकिन वह पोडियम पर स्थान हासिल करने में सफल रहे। यह रेसवॉकिंग में भारत का तीसरा राष्ट्रमंडल पदक है।

## भुल्लकर ने जीता इंडोनेशिया ओपन

जकार्ता, 7 अगस्त। भारत के गगनजीत भुल्लर ने रविवार को दो शॉट की जीत के साथ 500,000 बैंक मंदिरी इंडोनेशिया ओपन गोल्फ टूर्नामेंट जीत लिया और चार साल का अंतर्राष्ट्रीय खिताब काअपना सूखा समाप्त कर दिया। भुल्लर (68-67-68-65) ने आखिरी राउंड में सात अंडर 65 का बेहतरीन कार्ड खेला और 20 अंडर 268 के स्कोर के साथ खिताब जीता। यह उनका 11वां अंतर्राष्ट्रीय और एशियन टूर पर 10वां खिताब है। इंडोनेशिया ओपन में यह उनकी तीसरी खिताबी जीत है।

## शरत-सत्यन की जोड़ी ने जीता रजत, श्रीजा हारी

बर्मिंघम, 7 अगस्त। सत्यन ज्ञानसेकरन और अचंत शरत कमल की स्टार टेबल टेनिस जोड़ी ने राष्ट्रमंडल खेल 2022 में रविवार को पुरुष युगल का फाइनल मैच हारने के बाद रजत पदक से संतोष किया। शरत-सत्यन को इंग्लैंड के पॉल ड्रिंकहॉल और लायम पिचफोर्ड ने करीबी मुकाबले में 3-2 से मात दी। इंग्लिश जोड़ी ने पांच गेमों के मैच में 8-11, 11-8, 11-3, 7-11,11-4 से जीत दर्ज की। यह बर्मिंघम 2022 खेलों में भारत का दूसरा टेबल टेनिस पदक है। इससे पहले भारतीय पुरुष टेबल टेनिस टीम ने सिंगापुर को हराकर स्वर्ण जीता था। उल्लेखनीय है कि भारत की युवा टेबल टेनिस खिलाड़ी श्रीजा अकुला को महिला एकल के कांस्य पदक मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया की यांग्ज़ी लियु के हाथों 4-3 से हार मिली। ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी ने पहली बार राष्ट्रमंडल खेलों में हिस्सा ले रही श्रीजा को सात गेमों के मैच में 3-11, 11-6, 11-2, 7-11, 15-13, 9-11, 11-7 से मात देकर कांसे का तमगा हासिल किया।

## अन्नू रानी ने जैवलिन थ्रो में जीता ऐतिहासिक पदक

बर्मिंघम, 7 अगस्त। भारतीय एथलीट अन्नू रानी ने राष्ट्रमंडल खेल 2022 में इतिहास रचते हुए रविवार को भाला फेंक स्पर्धा में कांस्य पदक जीता। अन्नू ने अपने चौथे प्रयास में जैवलिन को 60 मीटर की दूरी पर फेंककर तीसरा स्थान हासिल किया। इस जीत के साथ अन्नू भारत के लिये राष्ट्रमंडल खेलों में पदक जीतने वाली पहली महिला जैवलीन थ्रोअर बन गयीं। विश्व चैंपियन ऑस्ट्रेलिया की केल्सी-ली बार्बर ने 64.43 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ स्वर्ण पदक हासिल किया जबकि उनकी हमवतन मकैंज़ी लिटल (64.27 मीटर) ने रजत पदक अपने नाम किया। रानी से पहले काशीनाथ नायक और ओलंपिक चैंपियन नीरज चोपड़ा भी जैवलिन थ्रो में भारत के लिये पदक जीत चुके हैं।

## सिंधु, लक्ष्य के बाद सात्विकसाईराज-चिराग की जोड़ी फाइनल में

बर्मिंघम, 7 अगस्त। भारत की शीर्ष शटलर पीवी सिंधु, युवा खिलाड़ी लक्ष्य सेन ने राष्ट्रमंडल खेल 2022 में अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए अपने-अपने एकल फाइनल में जगह बनायी, हालांकि किदांबी श्रीकांत सेमीफाइनल में हार गये। सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की जोड़ी ने पुरुष युगल के फाइनल में जगह बनायी जबकि त्रिशा जॉली और गायत्री गोपीनाथ को महिला युगल सेमीफाइनल में हार का सामना करना पड़ा।

सिंधु ने महिला एकल सेमीफाइनल में सिंगापुर की जिया मिन यिओ को रविवार को 21-19, 21-17 से सीधे गेमों में मात देकर फाइनल में जगह बनायी। सिंधु ने विश्व की 18वें नंबर की खिलाड़ी को हराकर लगातार दूसरी बार राष्ट्रमंडल खेलों के एकल फाइनल में जगह बनायी है। उन्होंने गोल्डकोस्ट 2018 खेलों में रजत पदक हासिल किया था।

दूसरी ओर, लक्ष्य को फाइनल में पहुंचने के लिये थोड़ी मेहनत करनी पड़ी, लेकिन अंतत: उन्होंने सिंगापुर के जियाह हेंग टेह को 21-10, 18-21, 21-16 से मात दी। थॉमस कप विजेता टीम के खिलाड़ी लक्ष्य ने पहला गेम आसानी से जीत लिया, लेकिन दूसरे गेम में सिंगापुरी खिलाड़ी ने अपनी लय हासिल की और मैच को निर्णायक गेम में भेज दिया। तीसरे और अंतिम गेम में दोनों खिलाड़ियों ने अच्छी शुरुआत की, लेकिन ब्रेक तक 11-8 की बढ़त हासिल करने के बाद लक्ष्य ने पीछे मुड़कर नहीं देखा और अपने पहले ही राष्ट्रमंडल खेलों में अपने लिये एकल पदक सुनिश्चित किया।

# भारत ने महिला हॉकी में 16 साल बाद जीता राष्ट्रमंडल पदक

बर्मिंघम, 7 अगस्त। भारतीय महिला हॉकी टीम ने राष्ट्रमंडल खेल 2022 में रविवार को न्यूज़ीलैंड को शूटआउट में मात देकर 16 साल बाद राष्ट्रमंडल खेलों में पदक जीता। भारत ने कांस्य पदक मैच में न्यूज़ीलैंड को 1-1 (शूटआउट में 2-1) से हराकर कांसे का तमगा अपने नाम किया। सलीमा टेटे (29) ने भारत का एकलौता गोल किया, जबकि कीवी टीम की ओर से ओलिविया (59) ने गोल किया।

शूटआउट में भारत के लिये सोनिका और नवनीत ने गोल किये। मैच का पहले क्वार्टर में भारत ने न्यूज़ीलैंड पर दबदबा बनाया मगर कीवी गोलकीपर ने भारत को खाता नहीं खोलने दिया। दूसरे क्वार्टर में भारत ने आक्रामक रवैया बरकरार रखा और जब हाफ टाइम में दो मिनट का समय बचा था तब सलीमा टेटे ने गेंद को नेट तक पहुंचाकर भारत को 1-0 की बढ़त दिलायी।

मैच के तीसरे क्वार्टर में न्यूज़ीलैंड मैच को बराबरी पर लाने के लिये आतुर थी। जब

क्वार्टर-3 की समाप्ति में सिर्फ दो मिनट बचे थे तब न्यूज़ीलैंड ने एक गोल किया भी, मगर भारत के वीडियो रेफरल के बाद उसे अमान्य घोषित कर दिया गया।

भारत मैच के 58वें मिनट तक 1-0 से आगे चल रहा था और कांस्य पदक से एक हाथ की दूरी पर था कि तभी लालरेमसियामी को येलो कार्ड मिला और फील्ड पर सिर्फ 10 भारतीय खिलाड़ी रह गये। ज्यादा खिलाड़ियों की बदौलत न्यूज़ीलैंड ने भारतीय हाफ में जगह बना ली। यहां पहले कीवियों को पेनल्टी कॉर्नर और फिर पेनल्टी स्ट्रोक मिला, जिसके उपयोग से न्यूज़ीलैंड ने स्कोर 1-1 से बराबर कर लिया।

भारत को सेमीफाइनल मैच के शूटआउट में ऑस्ट्रेलिया से 3-0 से मात मिली थी, और यह मैच भी शूटआउट में जा चुका था। न्यूज़ीलैंड ने पहले प्रयास में स्कोर किया जबकि भारत असफल रहा, जिससे टीम पर दबाव बढ़ गया।

यहां भारत की अगुवाई करते हुए कप्तान सविता पूनिया ने न्यूज़ीलैंड के अगले चारों प्रयास रोके, जबकि सोनिका और नवनीत ने एक-एक गोल करके भारत को 2-1 से जीत दिलायी। भारतीय महिला हॉकी टीम ने 16 साल बाद राष्ट्रमंडल खेलों में कोई पदक जीता है। इससे पहले मैनचेस्टर 2006 खेलों में भारत ने महिला हॉकी का रजत पदक जीता था।

# कबड्डी खिलाड़ियों ने प्रो. कबड्डी नीलामी में सोने पर निशाना साधा, पहली बार कोई खिलाड़ी 2 करोड़ के पार

मुंबई, 7 अगस्त। वीवो प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) सीजन 9 के लिए खिलाड़ियों की नीलामी मुंबई में मशाल स्पोर्ट्स द्वारा 5-6 अगस्त, 2022 को सफलतापूर्वक आयोजित की गई। पवन कुमार सहरावत, जिन्हें तमिल थलाइवाज द्वारा सबसे महंगी बोली लगाकर खरीदा गया, लीग इतिहास के सबसे महंगे खिलाड़ी साबित हुए। दो दिवसीय आयोजन में में 12 फ्रेंचाइजी टीम ने कुल 130 खिलाड़ियों के साथ करार किया।

नीलामी का मुख्य आकर्षण पवन कुमार सेहरावत रहे, जिन्होंने तमिल थलाइवाज द्वारा 2.26 करोड़ रुपये की भारी राशि में खरीदे जाने के बाद अब तक के सबसे महंगे खिलाड़ी का रिकॉर्ड तोड़ दिया। इस बीच, विकास कंडोला को बेंगलुरु बुल्स के रूप में एक नया घर मिला। बुल्स ने उन्हें 1.70 करोड़ रुपये (पवन कुमार सेहरावत की बोली लगाने तक का रिकॉर्ड) में खरीदा। इस तरह कंडोला वीवो प्रो कबड्डी लीग प्लेयर नीलामी इतिहास में अब तक के दूसरे सबसे महंगे खिलाड़ी बन गए। फ्रैंचाइजी द्वारा 90 लाख रुपये में फाइनल बिड मैच कार्ड का उपयोग करने के बाद परदीप नरवाल एक बार फिर यूपी योद्धा टीम में लौट आए।

इस बीच, रेडर गुमान सिंह वीवो प्रो कबड्डी लीग प्लेयर नीलामी में सबसे महंगे श्रेणी-बी खिलाड़ी के रूप में उभरे। गुमान को यू मुंबा ने 1.21 करोड़ रुपये में खरीदा। इसके अलावा, डिफेंडर सुनील कुमार श्रेणी-बी में दूसरे सबसे महंगे खिलाड़ी रहे। उन्हें जयपुर पिंक पैंथर्स ने 90 लाख रुपये में खरीदा। हरियाणा स्टीलर्स द्वारा 65.10 लाख रुपये में खरीदे जाने के बाद अमीर होसिन बस्तमी श्रेणी-सी में सबसे महंगे खिलाड़ी रहे। इस बीच, दबंग दिल्ली केसी. द्वारा 64.10 लाख रुपये में खरीदे जाने के बाद रवि कुमार सरप्राइज पिक के रूप में उभरे। नीरज नरवाल (43 लाख रुपये) और रिंकू नरवाल (40 लाख रुपये) ने भी भारी कमाई की।

## पूर्व भारतीय खिलाड़ी चाहते है भूटिया एआईएफएफ अध्यक्ष पद के लिये चुनाव लड़े

नयी दिल्ली, 7 अगस्त। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ के आगामी चुनावों के लिये निर्वाचक मंडल में आधी संख्या पूर्व खिलाड़ियों की होगी तो भारत के कुछ पूर्व खिलाड़ियों को लगता है कि महान फुटबॉलर बाईचुंग भूटिया को अध्यक्ष पद के लिये चुनाव लड़ना चाहिए। उच्चमत न्यायालय ने बुधवार को सुनवाई को बाद देश में इस खेल का संचालन कर रही प्रशासकों की समिति (सीओए) ने चुनाव की तारीख 28 अगस्त रखी है जिसके लिये 13 अगस्त से चुनावी प्रक्रिया शुरू होगी। शीर्ष अदालत ने कहा था कि एआईएफएफ की कार्यकारी समिति के निर्वाचक मंडल में 36 राज्य संघों के प्रतिनिधियों के अलावा 36 दिग्गज खिलाड़ियों का प्रतिनिधित्व होगा जिसमें से 24 पुरूष और 12 महिला खिलाड़ी होंगी।

## दो साल बाद हम वनडे क्रिकेट को खो देंगे : मोईन

लंदन, 7 अगस्त। इंग्लैंड के आलराउंडर मोईन अली एक और बड़े क़द के अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी बने हैं जिन्होंने व्यस्त क्रिकेट कार्यक्रम के चलते वनडे अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट के भविष्य पर चिंता जताई है। हाल ही के दिनों में मोईन के कई साथी, जैसे जॉस बटलर, जो रूट और बेन स्टोक्स, इस विषय पर बात कर चुके हैं। अपने कार्यक्रम के चलते इंग्लैंड ने भारत और साउथ अफ्रीका के विरुद्ध क्रमश: 25 दिनों में 12 सीमित ओवर मैच खेले थे। द हंड्रेड प्रतियोगिता में अपनी टीम बर्मिंघम फ़ीनिक्स के पहले मुक़ाबले से पहले एक प्रायोजक के कार्यक्रम के दौरान मोईन ने कहा, "कार्यक्रम अभी बहुत विस्तृत है। आप चाहते हैं कि आप फ्रैंचाइज़ी क्रिकेट के लिए ख़ुद को उपलब्ध रखें लेकिन इसका मतलब होगा टेस्ट या वनडे मैच मिस करना। आप चाहते हैं आप इंग्लैंड के लिए सारे ही मुक़ाबले खेल सकें। मेरे हिसाब से यह धारणीय नहीं है।"

उन्होंने कहा,"मुझे डर है दो साल बाद हम वनडे क्रिकेट को खो देंगे क्योंकि यह एक लंबा बोरिंग प्रारूप है। टी20 अपनी जगह सुरक्षित है और फिर आपके पास टेस्ट क्रिकेट भी है जो बढ़िया है। इन दोनों के बीच 50-ओवर क्रिकेट को महत्त्व नहीं मिलता। मुझे व्यक्तिगत तौर पर लगता है बहुत ज़्यादा क्रिकेट खेला जा रहा है। एक हिसाब से यह खेल के लिए अच्छा भी है लेकिन इसके वजह से अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट पर रुकावट नहीं होनी चाहिए।" स्टोक्स ने हाल ही में अपने टेस्ट कप्तानी और टी20 क्रिकेट में खेलते रहने के लिए वनडे क्रिकेट से संन्यास ले लिया था। मोईन का कहना है कि ऐसा क़दम कई और खिलाड़ी अपने स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए ले सकते हैं।

*पुरुष मुक्केबाज अमित पंघल ने पुरुष 51 किग्रा. फाइनल में इंगलैण्ड के कियेरेन मैकडॉनल्ड को मात देकर सोने का तमगा हासिल किया। गोल्डकोस्ट 2018 खेलों के सिल्वर मैडलिस्ट अमित ने मैच की शुरुआत से ही कियेरेन पर मुक्कों की बारिश कर दी और पहले राउण्ड में ही अपने विपक्षी को कई चोटें पहुंचायीं। दूसरे राउण्ड में अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए अमित ने 4-0 के एकतरफा फैसले से स्वर्ण हासिल किया।*

# 'केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में शामिल नहीं होगा जे.डी.यू.'

## जे.डी.यू. के राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन सिंह ने यह बयान देकर भाजपा और नीतीश की पार्टी के बीच चल रही तनातनी खुलेआम जाहिर कर दी

नई दिल्ली, 7 अगस्त। भाजपा और जेडीयू में अनबन इन दिनों काफी बढ़ गई है, जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे आर.सी.पी. सिंह ने नीतीश की पार्टी से इस्तीफा दे दिया है तो वहीं जेडीयू के मौजूदा राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन सिंह ने ऐलान करते हुए कहा कि, जदयू नरेंद्र मोदी सरकार के केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल नहीं होगा।

उन्होंने कहा कि हम मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के 2019 के फैसले पर कायम हैं। साथ ही पूर्व केंद्रीय मंत्री आर.सी.पी. सिंह के नरेंद्र मोदी सरकार में शामिल होने को लेकर उन्होंने कहा कि वे कैसे मंत्रिमंडल में शामिल हुए थे, ये वही बताएंगे।

वहीं भाजपा के साथ 2024 लोकसभा चुनाव के लिए गठबंधन को

**■ 2024 में भाजपा के साथ गठबंधन करने के संबंध में ललन सिंह ने कहा कि, कल किसने देखा है।**

लेकर ललन सिंह ने कहा कि कल किसने देखा है।

मालूम हो कि बिहार में एन.डी.ए. की साथी होने की वजह से बीजेपी ने केंद्र सरकार में जेडीयू को एक मंत्री पद दिया था, जिसके जरिए तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष आर.सी.पी. सिंह को केंद्रीय मंत्री बनाया गया था। हालांकि, आर.सी.पी. सिंह के राज्यसभा से कार्यकाल खत्म होने के बाद जेडीयू से उन्हें फिर उच्च सदन नहीं भेजा गया। इसी वजह से आर.सी.पी. सिंह को केंद्रीय मंत्री पद से अपना इस्तीफा देना पड़ा था।

जेडीयू अध्यक्ष ललन सिंह ने कहा कि आर.सी.पी. सिंह का तन जदयू में और मन कहीं और था। ललन सिंह ने आगे कहा कि देर-सबेर आर.सी.पी . सिंह को इस पार्टी से जाना ही था। वहीं आर.सी.पी. सिंह के जेडीयू को डूबता जहाज कहने पर उन्होंने कहा कि जदयू डूबता नहीं दौड़ता जहाज है, आर.सी.पी. को इसकी एबीसीडी भी नहीं पता है। आर.सी.पी. जदयू के संघर्ष के नहीं सत्ता के साथी हैं।

### रास्ते से भटक ...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

सकेगा। इसरो ने कहा कि, समस्या की ठीक से पहचान कर ली गई है।

गौरतलब है कि, इसरो ने स्मॉल सैटलाइट लॉन्च वीइकल से देशभर की 750 ग्रमीण छात्राओं द्वारा बनाया गया सैटलाइट भी लॉन्च किया था। आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा में इसकी पूरी तैयारी की गई थी। बताया जा रहा था कि इस मिशन को ऐतिहासिक बनाने की तैयारी थी क्योंकि इसकी कामयाबी के साथ ही स्मॉल सैटलाइट लॉन्चिंग के लिए दुनियाभर की नजरें भारत की ही तरफ होतीं। हालांकि कुछ गड़बड़ी की वजह से इस बार यह कामयाब नहीं हो पाया।

### राज्यपाल कोश्यारी पर लगाम

मुंबई, 7 अगस्त। मराठी मानुष और मारवाड़ियों पर बयान देना महाराष्ट्र के गवर्नर भगत सिंह कोश्यारी के गले की फांस बनता जा रहा है। बताया जा रहा है कि पार्टी ने उन्हें अब अपना मुंह बंद रखने के निर्देश दिए हैं। इस अनुमान को हवा उस वक्त मिली जब दिल्ली में एक कार्यक्रम के दौरान कोश्यारी ने मीडिया को देखकर मुंह फेर लिया। हालांकि कोश्यारी ने अपने बयान के लिए माफी भी मांग ली है, इसके बावजूद पार्टी पूरी तरह से अलर्ट मोड में है। गौरतलब है कि महाराष्ट्र में महाविकास अघाड़ी गठबंधन की सरकार को उखाड़ फेंकने के बाद भाजपा अब फूंक-फूंककर कदम रख रही है।

महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी इस समय दिल्ली में हैं। उन्होंने महाराष्ट्र सदन में हर घर तिरंगा अभियान की शुरुआत की। महाराष्ट्र टाइम्स के मुताबिक इस दौरान उन्होंने मीडिया से दूरी बनाए रखी। कोश्यारी ने कहा कि मैं बात नहीं करूंगा। यहां एक मुख्यमंत्री है,

**■ यही वजह है कि, राज्यपाल कोश्यारी ने दिल्ली में मीडिया को देखकर मुंह फेर लिया और चुपचाप ही कार्यक्रम से निकल गये।**

उनसे बात करें। मैं बात नहीं करना चाहता। कोश्यारी ने यह भी कहा कि राज्यपाल को नहीं बोलने का आदेश दिया गया है। कोश्यारी के इस बयान से अंदाजा लगाया जा रहा है कि पार्टी द्वारा उन्हें मुंह बंद रखने का आदेश दिया गया है। हालांकि राज्यपाल के संवैधानिक पद होने के कारण अब इस सवाल पर बहस हो सकती है कि क्या कोई उन्हें इस तरह से बोलने से मना कर सकता है। राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने हाल ही में मुंबई में एक कार्यक्रम में विवादित बयान दिया था। उन्होंने कहा था कि अगर गुजराती और मारवाड़ियों ने छोड़ दिया तो मुंबई आर्थिक राजधानी नहीं होगी। उनके इस बयान के बाद पूरे प्रदेश में गुस्से की लहर दौड़ गई थी। जिसके चलते भाजपा दुविधा में थी। उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस समेत भाजपा और एकनाथ शिंदे समूह के नेताओं ने भी राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी की टिप्पणी से खुद को अलग कर लिया था।

# कर्नाटक में हिन्दुओं की दरगाह सर्वधर्म समभाव की जबरदस्त नज़ीर है

## बेलगावी जिले के हरलापुर गांव में हिन्दू लोग पूरे जोश-खरोश से सभी मुस्लिम पर्व मनाते हैं

बेलगावी, 7 अगस्त (वार्ता)। कर्नाटक के बेलगावी जिले के सावदत्ती तालुक में एक छोटा सा गांव हरलापुर है जहां हिंदुओं ने ना केवल एक दरगााह का निर्माण किया है बल्कि वहां मुसलमानों का हर पर्व मनाकर सर्व धर्म समभाव का नजीर भी पेश करते हैं।

दिलचस्प बात यह है कि इस गांव में एक भी मुस्लिम परिवार नहीं है। स्थानीय लोगों के विचार व दिमाग धार्मिक समरसता में बहुत बड़ा माना जाता है। इसलिए हिंदुओं ने यहां एक फकीर स्वामी दरगाह बनाई है और अब वे मुहर्रम मना रहे हैं।

मुहर्रम यहां हर साल भव्यता के साथ मनाया जाता है। मुस्लिम धर्म के सभी अनुष्ठान यहां हिंदुओं द्वारा किए जाते हैं, जिसमें पंजा की स्थापना, पूजा, डोली का निर्माण और उनके जुलूस को

**■ दिलचस्प बात यह है कि, इस गांव में एक भी मुस्लिम परिवार नहीं है। स्थानीय लोगों के विचार व दिमाग धार्मिक समरसता में बहुत बड़ा माना जाता है। इसलिए हिंदुओं ने यहां एक फकीर स्वामी दरगाह बनाई है और अब वे मुहर्रम मना रहे हैं।**

धारा में शामिल किया जाता है। इस बार भी वे दो हफ्ते से तैयारी कर रहे थे।

अधिकांश लोगों ने अपने घरों में नए कपड़े खरीदे हैं। संत राजू गंजी मास्टर के मार्गदर्शन में युवाओं ने लाजिम और कोलाटा प्रशिक्षण आयोजित किया है। युवा पुट्टनागौड़ा पाटीला की सुरीली आवाज में कथन के शब्दों को सुनना अद्भुत है। लोग यहां दिन-रात नाचते गाते हैं। त्योहार के दिन एक जुलूस के सामने, रंग-बिरंगे कपड़े पहने और रंग-बिरंगे गुलदस्ते पकड़े हुए नृत्य करना एक संस्कार है।

जैसा कि गांव के बड़े बताते हैं मुहर्रम और उर्स यहां चार पीढ़ियों से मनाया जाता रहा है। गांव के वरिष्ठ लोगों और युवाओं ने चंदा एकत्र किया और आठ लाख रुपये की लागत से फकीर स्वामी दरगाह का निर्माण किया।

यह दरगाह इस मामले में भी अनूठा है कि यहां हिंदू, बौद्ध, ईसाई, वीरशैव-लिंगायत देवताओं और महात्मा की तस्वीरों की भी पूजा की जाती है।

बताया जाता है कि पहले इस कस्बे में मुस्लिम समुदाय का एक फकीर भगवान की चार मूर्तियों की पूजा करता था। उनकी मृत्यु के बाद, उन्हें रामचंद्र निंबकार के खेत में दफनाया गया था। वहाँ से वे मुट्ठी भर मिट्टी लाए और गांव के मुख्य भाग में एक मकबरा बनाया। गांव के लोग यह नहीं जानते कि वह फकीर कहां से आया था।

फकीर गांव के लोगों के लिए एक मार्गदर्शक था। फकीर हिंदुओं के लिए भगवान से कम नहीं माने जाते और वृद्ध लोग उन्हें फकीरेश्वर कहते हैं।

दरगाह के ठीक बगल में एक बड़ा नीम का पेड़ है। जिन लोगों को सांप ने काट लिया है, उन्हें इस नीम के पेड़ के पत्ते और दरगाह का प्रसाद खिलाया जाता है। उल्टी होने के तुरंत बाद सांप के काटे हुए व्यक्ति की जान बच जाती है।

*कुछ हफ्ते पहले विश्व चैंपियन बनीं मुक्केबाज निखत जरीन ने कॉमनवैल्थ गेम्स में गोल्ड मैडल जीत लिया है। निखत ने महिला 50 किग्रा. मैच में बेलफास्ट की कार्ली मेकनॉल को मात दी। निखत ने मैच की शुरुआत से ही कार्ली पर मुक्कों की बरसात शुरू कर दी और बेलफास्ट की मुक्केबाज़ को महत्वपूर्ण सबक सिखाया। तीन राउण्ड के बाउट में कभी भी नहीं लगा कि, कार्ली नियंत्रण में हैं, और अंततः निखत ने 5-0 के एकमत फैसले से स्वर्ण जीत लिया।*

# गुजरात में आदिवासी कार्ड खेला केजरीवाल ने

अहमदाबाद, 7 अगस्त। आपआम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने रविवार को कहा कि यदि उनकी पार्टी गुजरात में सत्ता में आती है, तो राज्य के आदिवासी क्षेत्रों में संविधान की 5वीं अनुसूची और पंचायत उपबंध (अनुसूचित क्षेत्रों तक विस्तार) अधिनियम को लागू किया जाएगा। केजरीवाल ने यह भी गारंटी दी कि गुजरात की आदिवासी सलाहकार समिति का नेतृत्व मुख्यमंत्री के बजाय समुदाय के एक व्यक्ति द्वारा किया जाएगा। उन्होंने कहा कि गुजरात विधानसभा चुनाव सत्तारूढ़ बीजेपी और आप के बीच सीधा मुकाबला होगा। दिल्ली के मुख्यमंत्री ने गुजरात के अपने दौरे के दूसरे दिन वड़ोदरा में संवाददाताओं को संबोधित करते हुए यह बात कही।

गौरतलब है कि गुजरात में इस वर्ष

**■ गुजरात में आदिवासियों के बीच रैली में केजरीवाल ने कहा कि, हम आदिवासियों के हर इलाके में स्कूल और मोहल्ला क्लिनिक शुरु करेंगे**

के अंत में विधानसभा चुनाव होना है। केजरीवाल ने यह भी कहा कि अगर आम आदमी पार्टी गुजरात में सत्ता में आती है, तो प्रत्येक आदिवासी गांव में एक अच्छा सरकारी स्कूल और एक मोहल्ला क्लिनिक खोला जाएगा। इसके अलावा आदिवासियों के मुफ्त इलाज के लिए क्षेत्र में मल्टी स्पेशियलिटी अस्पताल भी स्थापित किए जाएंगे। उन्होंने जाति प्रमाण पत्र जारी करने की प्रक्रिया को सरल बनाने और उन लोगों को घर देने का भी वादा किया, जिनके पास खुद का घर नहीं है। उन्होंने कहा कि सरकार आदिवासी गांवों को भी सड़कों से जोड़ेगी। दरअसल, संविधान की 5वीं अनुसूची अनुसूचित क्षेत्रों और अनुसूचित जनजातियों के प्रशासन व नियंत्रण से संबंधी प्रावधानों से संबंधित है। पंचायत उपबंध (अनुसूचित क्षेत्रों तक विस्तार) अधिनियम, जिसे पेसा अधिनियम के नाम से भी जाना जाता है, को 1996 में संसद की ओर से अधिनियमित किया गया था।

पेसा अधिनियम के तहत देश के विभिन्न राज्यों को अनुसूचित क्षेत्रों में ग्राम सभाओं को मजबूत करने के लिए इस अधिनियम के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए नियम बनाने को कहा गया था।

# 'मौसम विज्ञान एजेंसियों के लिए सटीक गणना करने का काम बहुत मुश्किल हो गया है'

## आई.एम.डी. के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्र ने कहा, जलवायु परिवर्तन से मानसून में भारी उतार-चढ़ाव के कारण गणना का पैटर्न डिस्टर्ब हो गया है

नई दिल्ली, 7 अगस्त। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आइ.एम.डी.) के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्र ने कहा है कि, जलवायु परिवर्तन ने मौसम संबंधी गंभीर घटनाओं की सटीक भविष्यवाणी करने की विश्वभर की पूर्वानुमान एजेंसियों की क्षमता को प्रभावित किया है। लिहाजा, आइ.एम.डी. इस चुनौती से निपटने के लिए और अधिक रडार स्थापित कर रहा है और अपनी उच्च प्रदर्शन वाली गणना प्रणाली (हाई परफार्मेंस कंप्यूटिंग सिस्टम) को अपडेट कर रहा है।

मीडिया इंटरव्यू में भारत में मानसून पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव

**■ महापात्र ने कहा कि, हालांकि 1970 से लेकर अब तक के वर्षा के दैनिक डाटा के विश्लेषण से पता चलता है कि, देश में भारी वर्षा के दिनों में वृद्धि हुई है, जबकि हल्की या मध्यम स्तर की वर्षा के दिनों में कमी आई है। इसका मतलब है कि, अगर वर्षा नहीं हो रही है तो एकदम नहीं हो रही है और अगर हो रही है तो बहुत ज्यादा पानी बरस रहा है।**

के बारे में पूछे जाने पर महापात्र ने कहा, हमारे पास 1901 से लेकर अब तक का मानसूनी वर्षा का डिजिटल डाटा उपलब्ध है। इसके तहत उत्तर, पूर्व और पूर्वोत्तर भारत के कुछ हिस्सों में वर्षा में कमी, जबकि पश्चिम राजस्थान जैसे पश्चिम के कुछ क्षेत्रों में वर्षा में वृद्धि हुई है। महापात्र ने कहा, पूरे देश पर गौर करें तो मानसूनी वर्षा का कोई स्पष्ट रुझान नजर नहीं आता। मानसून अनियमित है और इसमें व्यापक स्तर पर उतार-चढ़ाव देखने को मिलते हैं।

महापात्र ने कहा कि हालांकि 1970 से लेकर अब तक के वर्षा के दैनिक डाटा के विश्लेषण से पता चलता है कि देश में भारी वर्षा के दिनों में वृद्धि हुई है, जबकि हल्की या मध्यम स्तर की वर्षा के दिनों में कमी आई है। इसका मतलब है कि अगर वर्षा नहीं हो रही है तो एकदम नहीं हो रही है और अगर हो रही है तो बहुत ज्यादा पानी बरस रहा है।

अध्ययनों ने साबित किया है कि भारी वर्षा की घटनाओं में वृद्धि और हल्की वर्षा के दिनों में कमी जलवायु परिवर्तन का नतीजा है। जलवायु परिवर्तन से वातावरण में अस्थिरता बढ़ गई है।

### श्रीकांत त्यागी...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

के बाद भाजपा ने उससे पल्ला झाड़ लिया था। सोसाइटी के लोगों के अनुसार, श्रीकांत सब पर अपनी पावर का रौब झाड़ता था और उसके द्वारा किए गए अतिक्रमण के खिलाफ बोलने पर अपशब्द कहता था। सोसाइटी के ज्यादातर लोग उसके आतंक से परेशान थे।

यह मामला मीडिया में आने के बाद भाजपा के स्थानीय सांसद डॉ. महेश शर्मा ने शनिवार को सोसाइटी के लोगों से मुलाकात कर आरोपी के खिलाफ सख्त कार्रवाई का आश्वासन दिया था।

इसके साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया था कि श्रीकांत त्यागी का भाजपा से कोई संबंध नहीं है और वह पार्टी का सदस्य भी नहीं है।

भाजपा के स्थानीय सांसद डॉ. महेश शर्मा ने बताया कि गृहमंत्री अमित शाह, राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा, प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस मामले को संज्ञान में लिया है।

उन्होंने कहा कि आरोपी पर कड़ी कार्रवाई होगी और 48 घंटे के अंदर उसे गिरफ्तार किया जाएगा। शर्मा ने कहा कि इस तरह की हरकत करने वाले समाज के दुश्मन हैं।

# 'कोटपूतली नगरपरिषद् ने तानाशाहीपूर्ण रवैये से मकान और दुकानें ध्वस्त कीं'

## पीड़ितों का आरोप है कि, बिना भूमि अधिग्रहण और बिना मुआवजा दिये रात के अंधेरे में तोड़फोड़ की गई

कोटपूतली, 7 अगस्त (नि.सं)। कोटपूतली में मास्टर प्लान 2011 के अनुरूप कस्बे के मुख्य चौराहे से लेकर नगरपालिका तिराहा तक 80 फीट व पूर्व सिनेमा से लेकर पूतली कट तक 60 फीट सड़कों के चौड़ाई करण को लेकर स्थानीय नगर परिषद् प्रशासन सुबह करीब 5 बजे एल.एन.टी., जे.सी.बी. व पोपलैण्ड मशीनों के साथ नगर परिषद् स्टाफ व भारी मात्रा में पुलिस प्रशासन का अमला निर्माण हटाने के लिए पहुंचा।

शनिवार को प्रथम चरण में एल.बी.एस. कॉलेज के छात्रावास की ओर 22 दुकानों समेत पुरानी नगर पालिका तिराहे पर अग्रसेन सर्किल के पास शेखावत भवन, भरगड़ प्लाजा, कौशिक मार्केट, पुस्तक मार्केट में करीब 68 दुकानें हटाई गई। प्रशासन द्वारा गठित चारों टीमों ने एक साथ कार्यवाही को अंजाम देते हुए सुबह करीब 10 बजे तक अधिकांश संरचनाओं को ध्वस्त कर दिया था। इस दौरान कई व्यापारिक प्रतिष्ठानों के व्यापारी सामान तक नहीं उठा पाये थे कि प्रशासन का पीला पंजा इमारतों को जमीरोंध करता नजर आया। कार्यवाही के दौरान पहले फेज में कुल 68 संरचनाओं को ध्वस्थ किया है। इसी बीच महालक्ष्मी मिष्ठान भण्डार के पास प्रशासन जैसे ही सामान से भरे अमृत कैलेक्शन शोरूम पर पीला पंजा चला रहा था।

उसी दौरान परिषद् का एक कर्मचारी अचानक बेहोश होकर जमीन पर गिर गया। जैसे ही कर्मचारी के अचानक बेहोश होने भनक प्रशासन को लगी तो प्रशासनिक अधिकारियों में अफरा-तफरी मच गई और आनन-फानन में उक्त कर्मचारी को एम्बुलेंस की सहायता से राजकीय बी.डी.एम. अस्पताल पहुंचाया। इस दौरान कार्यवाही यथावत जारी रही। देर रात तक प्रशासन की जे.सी.बी., हाईवा व ड्रिल मशीनें चलती रही। आनन-फानन

**■ इन लोगों के मुताबिक, नगरपरिषद् ने मात्र 24 घंटे का नोटिस चस्पा कर मकान-दुकानें खाली करने को कहा, जबकि राजस्थान हाईकोर्ट ने 7 जनवरी 2022 को आदेश दिये थे कि, पीड़ितों को कम से कम 15 दिन का नोटिस देकर सुनवाई की जाये, भूमि अधिग्रहित कर मुआवजा भी दें।**

में की गई कार्यवाही से जहां बिजली विभाग को भी भारी नुकसान का सामना करना पड़ा है। वहीं दिनभर लोग बिजली, पानी व इन्टरनेट सेवाओं तंग रहे। इधर प्रशासन द्वारा कि जा रही कथित दमनात्मक कार्यवाही का विरोध करने पर वरिष्ठ भाजपा नेता मुकेश गोयल, एडवोकेट बजरंग लाल शर्मा, एडवोकेट मनोज नारायण शर्मा, भाजपा नेता सुभाष घोघड़, भाजपा नेता प्रवीण बंसल व संघर्ष समिति के पंडित किशोरलाल नेताजी को हिरास्त में ले लिया। इस दौरान विरोध करने आये लोगों से प्रशासनिक अधिकारियों की तीखी नोंक-झोंख भी हुई। लोगों का आरोप था कि प्रशासन राजनैतिक दबाव में आकर व्यापारियों के खिलाफ दमनात्मक कार्यवाही कर रहा है। जो कोटपूतली की जनता की भावनाओं के लिए कुठाराघात है।

प्रशासन द्वारा कि जा रही कार्यवाही को आमजन दो नजरियों से देख रहा है। एक नजरिये में जहां आमजन इस कार्यवाही को विकास के आईने में देख रहा है। वहीं दूसरी और लोग इसे विकास की जगह विनाश के आईने से आंक रहे है। कार्यवाही के दौरान ए.डी.एम. जगदीश आर्य समेत एस.डी.एम. ऋषभ मण्डल, मौका मजिस्ट्रेट तहसीलदार सूर्यकान्त शर्मा, ए.एस.पी. विधा प्रकाश, यातायात ए.एस.पी. सुमित गुप्ता, डी.एस.पी. डॉ. संध्या यादव, शाहपुरा डी.एस.पी. सुरेन्द्र कृष्णियां, एस.एच.ओ. सवाई सिंह सहित पनियाला, सरूण्ड, प्रागपुरा, चंदवाजी, शाहपुरा, भाबरू समेत 8 थानों का पुलिस जाप्ता एवं एस.टी.एफ. जवानों की पूरी कम्पनी को मिलाकर करीब 500 जवान सहित बड़ी संख्या में विभिन्न विभागों के अधिकारी-कर्मचारी तैनात रहे। नगर परिषद् की ओर से आयुक्त फतेह सिंह मीणा के नेतृत्व में समस्त निर्माण हटाने की कार्यवाही की गई।

आयुक्त ने बताया कि प्रथम चरण में शनिवार को करीब 68 निर्माण हटाये गये है। साथ ही स्टे वाले निर्माणों को फिलहाल छोड़ दिया गया है। अगली कार्यवाही द्वितीय चरण में स्वतंत्रता दिवस के बाद की जायेगी। जिसके लिए अलग से नोटिस भी जारी किये जायेगें। जबकि तृतीय चरण में नीलाम की गई सम्पत्तियों के विरूद्ध कार्यवाही की जायेगी।

ए.डी.एम. जगदीश आर्य ने आमजन व व्यापारियों को प्रशासन का सहयोग करने के लिए धन्यवाद् दिया है।

गौरतलब है कि नगर परिषद् द्वारा मुख्य चौराहे से अग्रसेन सर्किल व आसपास के सम्पत्ति मालिकों को शुक्रवार को ही 24 घण्टों में निर्माण हटाने के निर्देश दिये गये थे। आयुक्त फतेह सिंह मीणा ने यह भी बताया कि राजस्थान हाईकोर्ट द्वारा दिये गये निर्देशानुसार ही समस्त कार्यवाही पूर्णतया: शांतिपूर्ण तरीके से की गई है। जिसमें स्थानीय व्यापारियों का भी प्रशासन को भरपुर सहयोग मिला है। बड़ी संख्या में व्यापारियों ने स्वयं ही अपनी दुकानों को पहले ही खाली कर लिया था। परिषद् द्वारा दोनों मुख्य मार्गो को मास्टर प्लान के तहत क्रमश: 80 व 60 फिट चौड़ा किया जा रहा है। आपको बता दें कि विगत दिसम्बर 2021 में भी उक्त कवायद के चलते आम नोटिस व व्यक्तिगत नोटिस के माध्यम से दोनों मार्गों को चौड़ा करने की कार्यवाही शुरू की गई थी। जिसके विरोध में एक ओर जहाँ धरना प्रदर्शन शुरू हो गया था।

वहीं सम्पत्ति मालिकों ने उक्त कार्यवाही को विधि विरूद्ध बताते हुए राजस्थान हाईकोर्ट में याचिकायें दायर की थी। जिस पर न्यायालय ने नगर परिषद् को व्यक्तिगत सुनवाई करते हुए 30 दिवस में विस्तृत एवं सकारण आदेश पारित करने व तब तक याचीगण के विरूद्ध कोई कार्यवाही ना करने के निर्देश दिये गये थे।

साथ ही नगर परिषद् को मौका एवं दस्तावेजों की जाँच कर भूमि अधिग्रहण की कार्यवाही करते हुए प्रभावितों की मुआवजा राशि तैय करने के लिए भी निर्देशित किया गया था।

राष्ट्रदूत ( एचयूएफ ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू ( राज. ) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2009/28296 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600